भू–दर्पण

अंक– द्वितीय

वर्षः 2015–16

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू–स्थानिक आकड.ा केन्द्र,

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, 5–मानचित्र भवन, गोमती नगर, लखनऊ

(विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार)

भारत सरकार
Government of India

मेजर जनरल आर पी सांई
अपर महासर्वेक्षक
उत्तरी क्षेत्र
Maj Gen R P Sian
Additional Surveyor General
Northern Zone

टेलीफोन–कम–फैक्स
Telephone-cum-Fax: 0172-2605027
ई–मेल E-mail : zone.north.soi@gov.in

उत्तरी क्षेत्र कार्यालय
Northern Zone Office
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
Survey of India
सर्वे कॉम्प्लेक्स, दक्षिण मार्ग, सेक्टर
32–ए, चण्डीगढ़–160 030

Survey Complex, Dakshin Marg, Sector 32-A,
Chandigarh-160 030

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि उत्तरी क्षेत्र का पूर्वी उत्तर प्रदेश भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, लखनऊ गतवर्ष की भाँति इस वर्ष भी राजभाषा पत्रिका 'भू–दर्पण' प्रकाशित करने जा रहा है।

हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए निरन्तर प्रयत्न करना हम सबका दायित्व है। पूर्वी उत्तर प्रदेश भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र सदैव इस प्रयास में सफल रहा है। इस केन्द्र द्वारा शत प्रतिशत पत्राचार हिन्दी माध्यम में किया जाता है जो अत्यन्त सराहनीय प्रयास है। इस केन्द्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सदैव इस क्षेत्र की प्रकाशित होने वाली पत्रिका में रचनात्मक सहयोग दिया है। पत्रिका की कुछ रचनाएं इतनी उत्कृष्ट होती है कि उन्हें पुरस्कृत भी किया गया है। यह पत्रिका इस केन्द्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के रचनात्मक अभिव्यक्ति की साक्षी तो है ही तथा साथ ही साथ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक भी है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

(मेजर जनरल आर पी सांई)

भारत सरकार
Government of India

ओम प्रकाश त्रिपाठी
निदेशक
पूर्वी उत्तर प्रदेश भू–स्था0 आकड़ा केन्द्र
Om Prakash Tripathi
Director
East Uttar Pradesh Geo-Spatial Data Centre
दूरभाष : (0522) 2720638, 2720740, 2720634(फैक्स)
Tele: (0522) 2720638, 2720740, 2720634(Fax)
ई मेल E mail: up.gdc.soi@gov.in

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू–स्था0 आकड़ा केन्द्र
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
East Uttar Pradesh
Geo-Spatial Data Centre
Survey of India
5 -मानचित्र भवन, गोमती नगर
लखनऊ–**226010**

संदेश

मेरे लिए यह अत्यन्त गौरव की बात है कि हमारा निदेशालय प्रकाशन की निरन्तरता को बनाए रखते हुए इस वर्ष भी हिन्दी पत्रिका 'भू–दर्पण' का प्रकाशन करने जा रहा है। 'भू–दर्पण' के द्वितीय अंक में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का प्रयास सराहनीय है।

इस पत्रिका में तकनीकी लेख, संस्मरण आदि को रोचक शैली में अभिव्यक्त किया गया है। पत्रिका का आवरण सज्जा आकर्षक है। इस पत्रिका के विविध लेख इस बात को प्रमाणित करतें हैं की इस विभाग की उन्नति के लिए सभी प्रयासरत है। वास्तव में वे अधिकारी और कर्मचारी बधाई के पात्र हैं जिन्होने अपना समय निकाल कर इस पत्रिका के लिए रचनाएं तैयार की। मैं सम्पादकीय समूह को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ जिनके परिश्रम से पत्रिका इस रूप में आ सकी।

'भू–दर्पण' के इस सफल प्रस्तुतीकरण के पश्चात मैं अगले अंक के लिए भी बधाई और शुभकामना देना चाहता हूँ।

ओम प्रकाश त्रिपाठी
निदेशक

भू–दर्पण

प्रधान सम्पादक

ओम प्रकाश त्रिपाठी
निदेशक

सम्पादक

धीरज शाह
अधीक्षक सर्वेक्षक

सम्पादन सहयोगी

प्रदीप कुमार आर्य
अधिकारी सर्वेक्षक

शशी कान्त
अधिकारी सर्वेक्षक

बाल गोविन्द राम
अधिकारी सर्वेक्षक

टंकण कार्य

आशीष कश्यप
प्रवर श्रेणी लिपिक

चन्द्रशेखर
अवर श्रेणी लिपिक

लवकेश
अवर श्रेणी लिपिक

छायांकन

नवीन कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

ग्राफिक डिजाइन

सन्दीप श्रीवास्तव
सर्वेक्षक

प्रकाशन

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू–स्था0 आकड़ा केन्द्र
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
5–विभूति खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ–226010

मुद्रण

पश्चिमी मुद्रण वर्ग
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
पालम, दिल्ली–110010

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

अनुक्रमणिका

क्रम सं0	विवरणी	पृष्ठ सं0
1	भारतीय सर्वेक्षण विभाग	5
2	राष्ट्रीय मानचित्रण नीति – 2005	6
3	भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कार्य	7–8
4	हिन्दी राजभाषा के प्रोत्साहन में इस कार्यालय का योगदान	9–10
5	कविता– मानचित्र भवन की सुन्दरता	10
6	वृहद त्रिकोणीयन श्रृंखला	11–12
7	भारतीय प्रशासन का बदलता स्वरूप	13–15
8	अंटार्कटिका अभियान	16–23
9	एक यात्राः जयापुर गाँव	24–25
10	विष्णु – लक्ष्मी संवाद	25
11	डेटा सुरक्षा एवं प्रबंधन	26–27
12	मिटाते भूख लागे दुःख	28
13	कदवन के दो पग (2008 एवं 2011–12)	29–30
14	अपडेशन	31–32
15	करिअवा	33–39
16	कविता– हवा हवाई	39
17	एक रात	40–41
18	कविता–एक बच्चे की अनमोल गाथा	41–43
19	ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम	44–46
20	चुटकुले	47–48
21	कामाख्या देवी – एक सिद्ध पीठ	49–50
22	कविता– राष्ट्र भाषा की परिभाषा	51–52
23	रामचरित मानस का जीवन में महत्व	53–55
24	कविता– गाँव	56
25	कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां	57
26	सेवानिवृत्ति	58–64
27	अच्छे स्वस्थ स्वास्थ्य के लिए 10 मन्त्र	65–66
28	जानिए डाक्टर की भाषा	67
29	अंर्तराष्ट्रीय योग दिवस	68–73
30	आधुनिक समाज में महिलाओं की भूमिका	74–75
31	वार्षिक खेल कूद–एक प्रतिवेदना	76
32	मानचित्र विक्रय केन्द्र	77–85
33	राजभाषा की उपयोगिता की दृष्टि से हिन्दी को संपर्क भाषा	85–87
34	छायाचित्र	88–91
35	हमारे उत्पाद	92–97

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

भारतीय सर्वेक्षण विभाग विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन हमारे देश का राष्ट्रीय सर्वेक्षण और मानचित्रण संगठन है। यह भारत सरकार का सबसे पुराना वैज्ञानिक विभाग है। इसकी स्थापना सन् 1767 में हुई थी।

इस विभाग के अधिकारी और कर्मचारी दुर्गम स्थानों में अनुगमन व निर्माण कार्य करने के लिये अन्यों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उन्हें गहन वनों, मरूस्थलों , दलदल, सुदूर भू–भागों तथा निम्नतम तटीय कटिबन्धों में जाना पड़ता है और उच्चतम हिमाच्छादित पर्वतों पर चढ़ना पड़ता है। वास्तव में वे पहले व्यक्ति हैं जो अक्षत और गैर–आबाद क्षेत्रों में पहुँचते हैं। वहां वे निरन्तर निष्ठापूर्वक और सतर्क रहकर कठिन परिश्रम से मानचित्र तैयार करते हैं जो कि विकास, प्रतिरक्षा और प्रशासन के लिये परमावश्यक हैं। इस प्रक्रम में वे देश के हर कोने और उसके भीतरी भागों से परिचित होते हैं और भारत की मिट्टी, धूल और जनसाधारण से मिल जाते हैं। वे वास्तव में अपने उद्देश्य 'आ सेतु हिमाचलम' जिसका अर्थ है 'कन्याकुमारी अंतरीप से हिमालय तक' के अनुसार आचरण करते हैं।

SURVEY OF INDIA

The Survey of India is the national survey and mapping organization of our country, under the Ministry of Science and Technology, and is the oldest scientific department of the Government of India. It was set up in 1767.

Its Officers and staff have to pioneer untrodden lands for others to follow and build upon. They have to go to the deepest forests, deserts and swamps, to the remotest corners of the land, to the lowest coastal belts and the highest snowy mountains.

राष्ट्रीय मानचित्रण नीति – 2005

केन्द्र सरकार ने 19 मई, 2005 को एक उदारवादी राष्ट्रीय मानचित्रण नीति (एन.एम.पी.) घोषित की। एन.एम.पी. के कार्यान्वयन के लिए विस्तृत दिशानिर्देश जारी करने के लिए एन.एम.पी. दस्तावेज भारतीय सर्वेक्षण विभाग को प्राधिकृत करता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि इस नीति की प्रगति में राष्ट्रीय सुरक्षा उद्देश्य पूर्णतः अभिरक्षित है। अतः यह निर्णय लिया गया है कि मानचित्रों की दो श्रृंखला होंगी।

1) रक्षा श्रृंखला मानचित्र– ये विभिन्न पैमानों पर परिशुद्धता को कम किये बिना ऊँचाई, समोच्च रेखाएँ और पूर्ण अर्न्तवस्तु सहित स्थलाकृतिक मानचित्र (एवरेस्ट/डब्ल्यू.जी. एस 84 आधार और बहुशंकुक/एल0सी0सी0 प्रक्षेप पर) होंगे। ये मानचित्र मुख्यतः रक्षा सेनाओं और राष्ट्रीय सुरक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे और इनके उपयोग के सम्बन्ध में रक्षा मंत्रालय द्वारा दिशा निर्देश तैयार किये जायेंगे।

2) ओपन श्रृंखला मानचित्रः– ओपन श्रृंखला मानचित्र मुख्यतः देश में विकास कार्यकलापों में सहायता देने के लिए प्रकाशित किए जायेंगे। इन मानचित्रों की शीट संख्या अलग होगी और ये डब्ल्यू0जी0एस0 84 आधार पर तथा यू0टी0एम0 प्रक्षेप में उपलब्ध होंगे। ये मानचित्र अप्रतिबन्धित होंगे।

NATIONAL MAP POLICY – 2005

The Central Govt. announced the National Map Policy on 19th May 2005. The NMP document authorizes Survey of India to issue detailed guidelines on the implementation of the NMP. To ensure that in the furtherance of this policy, national security objectives are fully safeguarded, it has been decided that there will be two Series of Maps-

i) **Defence Series Maps (DSMs)** :- These will be the Topograaphical maps (on Everest/WGS 84 Datum and Polyconic/LCC Projection) on various scales (with heights, contours and full content without dilution of accuracy). These maps will mainly cater for defence and national security requirements and the guidelines regarding their use will be formulated by the Ministry of Defence.

ii) **Open Series Maps (OSMs)** :- OSMs will be brought out primarily for supporting development activities in the country. OSMs shall bear different map sheet numbers and will be available in UTM projection on WGS 84 Datum. These maps will be un-restricted.

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कार्य

भारतीय सर्वेक्षण विभाग सर्वेक्षण विषयक सभी मामलों अर्थात ज्योडेसी, फोटोग्राममिति, मानिचित्रण और मानचित्र पुनरूत्पादन पर भारत सरकार के सलाहकार के रूप में कार्य करता है। तथापि, भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मुख्य कर्तव्य और उत्तरदायित्व नीचे बताये गये हैं :–

क) सम्पूर्ण भूगणितीय नियंत्रण (क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर) और भूगणितीय सर्वेक्षण (स्वेज से सिंगापुर तक के क्षेत्र में हिन्द महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के 40 पत्तनों की ज्वार–भाटा भविष्यवाणी सहित) तथा संबद्ध भूभौतिकीय सर्वेक्षण।

ख) भारत में सम्पूर्ण स्थालाकृतिक नियंत्रण, सर्वेक्षण और मानचित्रण।

ग) भौगोलिक मानचित्रों और वैमानिक चार्टों का मानचित्रण और उत्पादन।

घ) विकास परियोजनाओं के लिये सर्वेक्षण।

ड) वनों, छावनियों, वृहत पैमाने पर नगर सर्वेक्षण और परिदर्शी (गाइड) मानचित्रों आदि के लिये सर्वेक्षण।

च) विशिष्ट मानचित्रों का सर्वेक्षण और मानचित्रण, उदाहरणार्थ : नदी तट क्षेत्र तथा भारत सरकार द्वारा प्राधिकृत भौगोलिक अन्वेषण।

छ) भौगोलिक नामों की वर्तनी।

ज) भारत गणराज्य की बाह्य सीमाओं का सीमांकन, देश में प्रकाशित मानचित्रों पर उनका चित्रण और अन्तर्राज्य सीमाओं के सीमांकन पर भी परामर्श देना।

झ) विभाग के लिये अपेक्षित अधिकारियों और कर्मचारियों, केन्द्रीय सरकार के विभागों तथा राज्यों के प्रशिक्षणार्थियों और भारत सरकार द्वारा प्रायोजित विदेशी प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण देना।

ञ) मानचित्रकला, मुद्रण, ज्योडेसी, फोटोग्राममिति तथा स्थालाकृतिक सर्वेक्षण में अनुसंधान और विकास तथा स्वदेशीकरण।

ट) सारे देश में वायु फोटोग्राफी–व्यवस्था उपलब्ध कराने में समन्वय और नियंत्रण।

उपर्युक्त उत्तरदायित्वों के अतिरिक्त भारतीय सर्वेक्षण विभाग सभी प्रकार के सर्वेक्षण और मानचित्रण से सम्बन्धित विषयों पर भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों तथा अन्य संगठनों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप व्यवहारिक रूप से परामर्श और सूचना देने का कार्य करता है।

WHAT IT DOES

The Survey of India acts as adviser to the Government of India on all survey matters, viz geodesy, photogrammetry, mapping and map reproduction. However, the main duties and responsibilities of the Survey of India are enumerated below –

a) All geodetic control (horizontal and vertical) and geodetic surveys (including tide predictions for 40 ports in Indian Ocean, Arabian Sea and Bay of Bengal, in the region from Suez to Singapore) and allied geophysical surveys.
b) All topographical control, surveys and mapping within India.
c) Mapping and production of geographical maps and aeronautical charts.
d) Surveys for development projects.
e) Survey of forests, cantonments, large scale city surveys, Guide maps etc.
f) Survey and mapping of special maps e.g. riverain areas and geographical explorations authorized by the Government of India.
g) Spellings of geographical names.
h) Demarcation of the external boundaries of the Republic of India, their depiction on maps published in the country and also advice on the demarcation of interstate boundaries.
i) Training of officers and staff required for the department, trainees, from Central Government Departments and States and trainees from foreign countries as are sponsored by the Government of India.
j) Research and Development in cartography, printing, geodesy photogrammetry, topographical surveys and indigenization.
k) Co-ordination and control in providing aerial photographic cover over the whole of the country.

In addition to the above responsibilities, the Survey of India renders advice and information on all kinds of surveys and cartographic matters practically to all the Ministries and Departments of the Government of India as well as other organizations requiring their services.

हिन्दी राजभाषा के प्रोत्साहन में इस कार्यालय का योगदान

प्रमोद कुमार,
सहायक

हिन्दी राजभाषा के विकास में पूर्वी उत्तर प्रदेश भू0स्था0ऑ0के0 का योगदान अत्यधिक सराहनीय हैं । इस केन्द्र ने हिन्दी राजभाषा के प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। यह कार्यालय 80% से अधिक सरकारी काम काज हिन्दी में करने के लिए वर्ष 2006 में अधिसूचित किया जा चुका है तब से अब तक इस केन्द्र ने राजभाषा द्वारा निर्धारित लक्ष्य, 100% पत्र प्रेषण में प्राप्त कर चुका है। इस केन्द्र द्वारा वर्ष 2011 में 40% अनुभागों को राजभाषा नियम 1976 के नियम 8 (4) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट किया जा चुका है।

इस केन्द्र के सभी आशुलिपिक एवं अवर श्रेणी लिपिक हिन्दी आशुलिपिक/हिन्दी टंकण में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। इस संबंध में नराकास, लखनऊ द्वारा पिछले सालों में कोई हिन्दी टंकण की सुविधा प्रदान न करने के बावजूद राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा सम्पर्क स्थापित कर इस केन्द्र के अवर श्रेणी लिपिकों को हिन्दी टंकण में प्रशिक्षित करवाया गया और उन्हें राजभाषा द्वारा निर्धारित पुरस्कार भी प्रदान किया गया। इस केन्द्र के लगभग सभी अधिकारी/कर्मचारी कम्प्यूटर पर हिन्दी/यूनीकोड में कार्य करते हैं । राजभाषा विभाग द्वारा इस केन्द्र का वर्ष 2011 में संयुक्त निदेशक, राजभाषा विभाग द्वारा निरीक्षण किया गया । इस केन्द्र द्वारा सरकारी कामकाज में हिन्दी राजभाषा के प्रयोग की स्थिति को बहुत अच्छा बताया गया और जहां कहीं पर उनके द्वारा सलाह दी गयी उसका निराकरण कर दिया गया ।

इस केन्द्र द्वारा प्रत्येक वर्ष हिन्दी में सराहनीय कार्य के लिए हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन पुरस्कार बाकायदे समिति का गठन कर प्रदान किया जाता है। विगत वर्ष 2013 से इस कार्यालय द्वारा कार्यशाला का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है । इस संबंध में नराकास लखनऊ द्वारा आयोजित छमाही बैठक में प्रशस्ति पत्र प्रदान कर इस कार्यालय को सम्मानित किया गया था।

वर्ष 2014–15 में इस केन्द्र द्वारा हिन्दी पत्रिका भू–दर्पण अंक–1 का प्रकाशन किया गया जिसके लिये नराकास लखनऊ ने अपनी छमाही बैठक में ट्राफी एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया एवॅ कार्यालय में अच्छे काम–काज की सराहना भी की।

यह केन्द्र प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित करता है। बैठक में लिये गये निर्णय का पालन किया जाता है। जैसे हिन्दी साहित्यिक

पुस्तकों के क्रय करने एवं कुछ प्रचलित फार्मो को द्विभाषी करना आदि अनेक हिन्दी राजभाषा से जुड़ें कार्यों को सदस्यों की राय से पूरा किया जाता हैं ।

नगर राजभाषा की कार्यान्वयन समिति के बैठक में कार्यालय प्रमुख अनिवार्य रूप से सदैव भाग लेते हैं । इस केन्द्र द्वारा हिन्दी तिमाही प्रगति रिपोर्ट वेव आधारित सूचना प्रणाली के अर्न्तगत On Line मंत्रालय को प्रेषित की जाती है। हिन्दी राजभाषा से सम्बन्धित सभी विवरणियां तिमाही/छमाही/ वार्षिक एवँ नराकास को प्रेषित अर्धवार्षिक विवरणी भी समय से प्रेषित की जाती हैं । अपर महासर्वेक्षक, उत्तरी क्षेत्र द्वारा प्रकाशित पत्रिका जागृति में प्रकाशन सामग्री देने पर इस कार्यालय के श्री आशुतोष चक्रवर्ती, अधि0सर्वेक्षक एवँ श्री नवमी लाल,सर्वेक्षण सहायक को उनकी प्रकाशन सामग्री पर पुरस्कृत किया गया है। राजभाषा द्वारा मूल्यांकन पुरस्कार की जानकारी हेतु उप निदेशक (कार्यान्वयन) गाजियाबाद एवँ नराकास, लखनऊ से पत्र द्वारा सम्पर्क भी स्थापित किया गया। राजभाषा हिन्दी के प्रोत्साहन में पूर्वी उ0प्र0भू0स्था0ऑ0के0 का योगदान अच्छा रहा है ।

मानचित्र भवन की सुन्दरता

शिवपुजारी,
एम0टी0एस0

ईस्ट यू0पी0जी0डी0सी0 की, न्यू बिल्डिंग निराली है ।
गोमती नगर के विभूति खंड में, उत्तम शोभा वाली है ।।
वियर हाउसिंग के ही बगल में, नव निर्मित बिल्डिंग न्यारी है ।
बेसमेंट के ऊपर जीरो से, तीन तल्ले की छवि न्यारी है ।।

साथ में दोनों ओर सीढ़ियां, जो लगती बलिहारी है ।
लिफ्ट भी उसमें लगी हुई है, जो अपने में न्यारी है ।।
भूतल पर है सभाहाल, सब ''हाल'' उसे भी कहते है ।
बाद सभा के चौपहिया, गाड़ियां खड़ी भी करते है ।।

वृहद त्रिकोणीयन श्रृंखला

प्रदीप कुमार आर्य
अधिकारी सर्वेक्षक,

सन् 1765 में कैप्टन राबर्ट क्लाइव द्वारा मुगल शासक शाह आलम द्वितीय, बंगाल के नवाब एवं अवध के नवाब को हराने के पश्चात् बंगाल, बिहार, अवध, मध्य प्रांत एंव दिल्ली तक सम्प्रभुत्व अधिकार प्राप्त कर लिया गया। सन् 1767 में क्लाइव द्वारा मेजर रेनेल को सर्वेयर जनरल आफ बंगाल नियुक्त किया। सन् 1767 से 1814 तक सर्वेक्षण विभाग का कार्य ब्रिटिश सेना के अभियान एवं विस्तारवादी नीतियों को मदद पहुँचाना था। इस नीतियों के अंतर्गत वहाँ के लोगो की स्थिति, जीवन स्तर, सेना के लिए सही रूटों की जानकारी देना था, आमतौर पर सर्वेक्षण करने वाले टीम को वहाँ के स्थानीय लोग जासूस समझते थे, इसलिए शक की नजर से देखते थे। इस श्रृंखला में आरंभिक कार्य, भगीरथी घाटी का मानचित्र, ल्हासा एवं मानसरोवर का मार्ग सतलज नदी एवं शिमला के पहाड़ियों की खोज एवं चित्रण, कश्मीर, लद्दाख एवं बलूचिस्तान का चित्रण इत्यादि थे । उस समय के मानचित्रों को रेखाचित्र एवं यात्रा वृतान्त, यात्रा के दौरान हुए घटनाओं वहाँ के जन–मानस के अध्ययन के रूप में होता था, जो सिर्फ उत्तरी भारत तक ही सीमित था । मेजर जेम्स रेनेल को ब्रिटिशर द्वारा 'फादर आफ इण्डियन ज्योग्राफी' की उपाधि से नवाजा गया था, उनके निर्देशन मे 'बंगाल एटलस' एवं 'हिन्दुस्तान का मानचित्र' तैयार किया गया।

सन् 1799 में मैसूर राज्य के पतन के बाद सम्पूर्ण भारत का विशाल भू–भाग ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नियंत्रण में आ गया। उसी समय भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा दक्षिणी भारत के रूट एवं टोपोग्राफिकल सर्वेक्षण करने के लिए फ्रांसिस बुचनान को कार्य सौंपा गया और कर्नल मैकालिन मैकेन्जी को ज्योडीय सर्वेक्षण का कार्य सौंपा गया। सन् 1815 में कर्नल कालिन मैकेंजी भारत के प्रथम महासर्वेक्षक बने तो उन्होंने ज्योडीय सर्वेक्षण का कार्य विलियम लैम्बटन के नेतृत्व में आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी दे दी । लैम्बटन ने भारतीय प्रायद्वीप का त्रिकोणीयन श्रृंखला बनाकर ज्योडीय सर्वेक्षण की योजना बनाई। उनकी योजना के अनुसार पूरे भारत को त्रिकोणीयन श्रृंखला से 4 साल के अन्दर जोड़ दिया जाना था। कर्नल विलियम लैम्बटन ने मैसूर राज्य के अंतर्गत आने वाले बंगलौर में बेसलाइन बनाकर मैसूर से मद्रास तक एक छोटी त्रिकोणीयन श्रृंखला बनायी थी जो 250 किमी की श्रृंखला थी, इस कार्य को पूरा करने में एक साल से ज्यादा समय लगा था। इस कार्य मे , चालीस कड़ियों के सौ फीट लम्बे रैम्सडेन चेन से, जरूरी संशोधन के पश्चात बेसलाइन का मापन किया गया था। त्रिकोणीयन मापन में 36 इंच–वर्नियर थियोडोलाइट का उपयोग किया गया था। इस त्रिकोणीयन श्रृंखला का समापन माउंट थोमस चर्च में बेस लाइन बनाकर किया गया था। इस तरह त्रिकोणीयन श्रृंखला की शुरूआत हो गयी थी। इसमें आने वाले खामियों के निराकरण के लिए थियोडोलाइट और मापक चेन में

परिवर्तन किया गया । 36 इंच के स्थान पर 18 इंच वर्नियर थियोडोलाइट का इस्तेमाल किया गया। लोहे की चेन के स्थान पर स्टील चेन को इंग्लैण्ड से मगाया गया । मद्रास (वर्तमान चेन्नई) से कैंप कैमरून को गोवा से मछलीपत्तनम तक संबद्ध कर त्रिकोणीयन श्रृंखला को पूर्ण किया गया । सन् 1818 में कैप्टन जार्ज एवरेस्ट इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए टीम में शामिल हुए । कैप्टन जार्ज एवरेस्ट की मेहनत एवं सोच ने विलियम लैम्बटन एक सामान्य त्रिकोणीयन श्रृंखला को वृहद त्रिकोणीयन श्रृंखला के रूप में पूरे भारत में जाल सदृश्य फैला दिया।

भारत के महासर्वेक्षक बनने के बाद भी, वृहद त्रिकोणीयन श्रृंखला (GTS) के कार्य के महत्व को ध्यान मे रखते हुए कर्नल विलियम लैम्बटन ने ळै का अधीक्षक पद अपने पास ही रखा। भारतीय प्रायद्वीप में कर्नल विलियम लैम्बटन के साथ जुड़े रहने के कारण कैप्टन जार्ज एवरेस्ट को त्रिकोणीयन कार्य का अनुभव पहले ही मिल चुका था । उन्होने भारतीय प्रायद्वीप मे मौसम मे होने वाले परिवर्तन, इस परिवर्तन में होने वाली बीमारियाँ, स्थानीय लोगो के अन्धविश्वास तथा सर्वेक्षण के कार्य मे आने वाली क्षेत्रीय समस्याओं की पूरी जानकारी एंव अनुभव था। इसलिए उन्होने वृहद त्रिकोणीयन श्रृंखला को सिर्फ आगे ही नहीं बढ़ाया अपितु इसमे प्रयुक्त होने वाले यंत्रों के डिजाइन एवं कमियों के निराकरण सम्बन्धी सुझाव दिये। त्रिकोणीयन लाइन का अधिकतम दूरी 20 मील तक ही पूर्व मे रखा जाता था, इस समस्या को दूर करने के लिए हीलियों (सूरज के रोशनी से चमकने वाला परावर्तक यंत्र) एवं नाइट लैम्प का निर्माण करवाया । जिससे 60 मील तक त्रिकोणीयन लाइन का मापन किया जाता था । तीन अलग– अलग वर्नियर स्केल थियोडोलाइट के डिजाइन को लंदन के प्रेक्षणशाला मे निर्माण हेतु दिया। बेसलाइन मापन के लिए मिश्र धातु के टेप का निर्माण करवाया। यंत्रों मे मूलभूत सुधार के बाद वृहद त्रिकोणीयन श्रृंखला का कार्य करना आसान हो गया । सन् 1930 में कर्नल जार्ज एवरेस्ट भारत के महासर्वेक्षक बने। उसके बाद इस कार्य को अबाध गति मिल गई । प्रथम वृहत त्रिकोणीयन श्रृंखला केप केमरून (कन्याकुमारी) से सिरौंज बेस (देहरादून) तक, जिसकी 2500 किमी0 लम्बाई है उसे सफलता पूर्वक पूर्ण किया गया। इस श्रृंखला को पूरे दुनिया मे द ग्रेट इंडियन आर्क ऑफ मेरिडियन के नाम से जाना जाता है।

सन् 1843 में कर्नल जार्ज एवरेस्ट के सेवानिवृत्ति के पश्चात एड्रयू स्काटबाग भारत के महासर्वेक्षक बने। उन्होंने इस कार्य को आगे बढ़ाते हुए सन् 1863 मे वृहत त्रिकोणीयन श्रृंखला समायोजित कराया , जिसका परिणाम प्रथम श्रेणी श्रृंखला के अर्न्तगत पाया गया। इससे उत्साहित होकर पूर्वोत्तर हिमालयन त्रिकोणीयन श्रृंखला, पश्चिमोत्तर हिमालय श्रृंखला का कार्य पूर्ण कराया, जो सन् 1878 में पूर्ण हुआ । उसी वर्ष भारत के नये महासर्वेक्षक जेम्स टी वाकर ने टोपोग्राफिकल सर्वेक्षण एवं ग्रेट ट्रिगनोमेट्रीकल सर्वेक्षण को संयुक्त कर मुख्यालय देहरादून बनाया ।

भारतीय प्रशासन का बदलता स्वरूप

विपुल कुमार वर्मा
सर्वेक्षक

'पराधीन सपनेंहु सुख नाहीं' को चरितार्थ करते हुए कहा जाता है कि 'बुरे से बुरा देशी शासन भी अच्छे से अच्छे विदेशी शासन से अच्छा होता है'। लेकिन हमारा दुर्भाग्य ही है कि हमारा देश 712 ई0 से 1947 ई0 तक अनेक विदेशी शासको के अधीन रहा। चाहे अनचाहे उन विदेशी शासनों का हमारी प्रशासनिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा। वर्तमान व्यवस्था ब्रिटिश शासन की विरासत मानी जाती है क्योंकि 1947 में सत्ता हस्तांन्तरण के समय हमने ब्रिटिश प्रशासनिक ढ़ाचे को ही यथावत स्वीकार किया था।

स्टीलफ्रेम के नाम से प्रसिद्ध आई0ए0एस0 एवं अन्य लोक सेवाओं का विकास ब्रिटिश प्रशासन की देन है। लोक सेवाओं में राजपत्रित एवं अराजपत्रित का भेद, योग्यता आधारित भर्ती, वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट, उच्च अधिकारियों को अधिक वेतन, उनकी आवासीय कालोनी आम जनता के आवासों से दूर 'सिविल लाइन्स' के रूप में बसाने तथा घुड़दौड़ मनोरंजन हेतु 'रेसकोर्स' की परम्परा, अंग्रेजो द्वारा विकसित हुई थी। सचिवालयी व्यवस्था, नौकरशाही की कठोर कार्यप्रणाली तथा फाइल व्यवस्था की शुरूआत ब्रिटिश काल में हुई। चूँकि अंग्रेज अधिकारी आम भारतीयों को झूठा, गँवार तथा जाहिल कहकर प्रताड़ित करते थे अतः प्रत्येक प्रशासनिक कार्य में लम्बे चौड़े फार्म, शपथ पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र तथा राजपत्रित अधिकारी द्वारा सत्यापन आदि प्रक्रियायें उन्होने निर्धारित की थी। लोक सेवकों में जनता से श्रेष्ठ पृथक तथा स्वामी समझने की प्रवृत्ति तथा साहब एवं बाबूराज अंग्रेजी शासन की ही विकृतियॉ हैं। पुलिस प्रशासन तो अभी भी 'पुलिस अधिनियम 1861' से चलाया जा रहा है।

आप लोग सेाच रहे होंगे कि इन सबका वर्तमान प्रशासन से क्या सम्बंध है? अगर गम्भीरता से हम विचार करें तो इसका बहुत गहरा सम्बंध है क्योंकि कहा जाता है – ''तीर को दूर तक पहुचाने के लिए धनुष की डोर को कान के पीछे दूर तक खींचना पडता है।' अर्थात बिना पीछे गये और कमियों को जाने बगैर हम बेहतर भविष्य की कल्पना नहीं कर सकते।

अनेक ऐसी बुराईयाँ हैं जो हमारे प्रशासन में ब्रिटिश काल से निरन्तर जारी है। प्रशासनिक अधिकारियों को बार–बार एक विभाग से दूसरे विभाग में भेजने की ब्रिटिश प्रवृत्ति को अपनाने के कारण लोक सेवक दीर्घावधि तक एक विभाग में नहीं रह पाते है। परिणाम स्वरूप वे हमेशा सिर्फ कागजों में ठीक बने रहना चाहते है।

अनेक प्रशासनिक चिन्तको का मानना है कि क्रिस्टोफर एण्डरसन द्वारा प्रतिपादित पो–पो सिद्धान्त (*Po*Po) Passed On Passed Over भारतीय प्रशासन में जड़े जमा चुका है जहाँ परिश्रम एवं प्रतिबद्धता से कार्य करने वाले की अपेक्षा प्रशासनिक नियमों की उलझनो एवं कमियों की आड़ लेकर कार्य को टालमटोल की प्रवृत्ति अपनाने वाले कार्मिक ज्यादा लाभ उठाते है।

जनता से प्रत्यक्ष जुड़े कुछ विभागों के कुछ वरिष्ठ चतुर प्रशासनिक अधिकारी अपने युवा कनिष्ठ अफसरों को कुछ इस तरह से ABCD सिखाते हैं।

A- Avoid (जहाँ तक सम्भव हो कार्य से बचो)
B- By Pass (कार्य आ ही जाये तो दूसरों तक टालने का प्रयास करो)
C- Confuse (कार्य टाला न जा सके तो उसे इतना जटिल कर दो कि कोई समझ न सके)
D- Destroy (सम्भव हो तो कार्य से जुड़े साक्ष्य ही नष्ट कर दो)

एक दूसरी बीमारी भारतीय प्रशासन में देखने को मिलती है उसका नाम है 'बकमास्टरशिप'। इस बीमारी का लक्षण है कि इसमें उच्च प्रशासनिक अधिकारी जटिल कार्यों से बचने के लिए उसको अपने अधीनस्थों को हस्तांतरित कर देते है एवं कोई भी गलती निकलने पर खूब डांटते हैं। भारत में तो स्थिति यह हैं कि सरकारी कार्यालयों में प्रवेश करते समय दरबान साहब को सैल्यूट मारता है जबकि साहब प्रत्युत्तर में सामान्य शिष्टाचार निभाना तो दूर उसकी ओर देखते भी नहीं हैं।

भारत के सभी प्रधानमंत्रियों ने 'स्वच्छ प्रशासन' एवं 'कार्य संस्कृति' से युक्त लोक सेवाओं की वकालत की लेकिन अभी भी चापलूसी/चमचागीरी का कोई ठोस समाधान नहीं खोजा जा सका है।

इन्ही सब कमियों के कारण हार्वर्ड के अर्थशास्त्री लैण्ट प्रिटचेंट ने भारत को एक Flailing State (अपाहिज राज्य) माना है जिसका मस्तिष्क तो मेधावी है किन्तु अन्य अंग निष्क्रिय या ढीले हैं।

ऐसा नही है कि इन कमियों को प्रशासन से दूर करने के उपाय नहीं हुए। अनेक प्रयास किये गये हैं जैसे सूचना के अधिकार द्वारा प्रशासन में अनामता तथा गोपनीयता को खत्म किया गया है। अनेक प्रयास जारी भी हैं। स्वच्छ प्रशासन के लिए आज 4E एवं 3R पर बहुत जोर दिया जा रहा है।

1-Efficiency (दक्षता)	1-Return (उचित प्रतिफल)
2-Economy (मितव्ययता)	2-Reuse (पुनः उपयोग)
3.Effectiveness (प्रभावशीलता)	3-Recycle (पुनः चक्रीयकरण)
4-Ethics (नैतिक मूल्य)	

प्रशासन को अपने उद्देश्यों में सफल होने के लिए 4F को अपनाना होगा।

1. Fast
2. Focused
3. Friendly
4. Flexible

उपरोक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रशासन की संरचना को 4क के तहत ढालना होगा।

1-Decentralisation (विकेन्द्रीकरण)
2-Delegation (प्रत्यायोजन)
3-Democratisation (लोकतंत्रीकरण)
4-Debureaucratisation (विनौकरशाहीकरण)

आजकल प्रशासन को प्रभावी बनाने के लिए अभिशासन (Good Governance) पर जोर दिया जा रहा है। अर्थात "Minimum Government & Maximum Governance". अभिशासन की अवधारणा ई– शासन से मिलती–जुलती है। जिसे स्मार्ट (SMART) शासन भी कहा जाता है।

S- Small /Simple (नौकरशाही का छोटा आकार)
M- Moral (नैतिकता)
A- Accountable (जवाबदेह)
R- Reliable (विश्वसनीय)
T- Transparent (पारदर्शिता)

"बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" की विचार धारा पर आधारित कल्याणकारी राज्य को परिभाषित करते हुए महात्मा गॉधी जी कहते हैं–''लोक कल्याणकारी राज्य वह है जो प्रत्येक ऑख से ऑसू पोछने का कार्य करे''। बापू लोक कल्याणकारी राज्य में 'राम राज्य' का अक्स देखते थे। अर्थात ऐसा राज्य जो अपने सभी नागरिकों को न्यूनतम जीवन स्तर प्रदान करना अपना अनिवार्य कर्तव्य समझता है।

आज आवश्यकता है पुराने अप्रासंगिक कानूनों को खत्म करने की। इसके लिए जरूरी है कि विधायिका जरूरी कानून बनाये न्यायपालिका इन कानूनो की वैधानिकता की जॉच करें एवं सबसे महत्वपूर्ण है कि प्रशासनिक कार्यपालिका उसे सही से क्रियान्वित करे। इसके लिए अनेक प्रशासनिक चिन्तक आज प्रतिबद्ध नौकरशाही की वकालत करते हैं और इस तरह विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के समन्वय द्वारा भारत विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में शामिल हो सकता है।

अंटार्कटिका अभियान

ज्ञानेन्द्र पाल
सर्वेक्षक

बचपन में मैने अंटार्कटिका में भारत के द्वारा स्थापित किये गये प्रथम स्टेशन ''दक्षिणी गंगोत्री'' के बारे में सुना था । तब तक रोमांच सा था कि भारत ने यहाँ से लगभग 13000 किमी दूर स्थित एक ऐसे वीरान बर्फ से ढके हुए महाद्वीप पर रिसर्च बेस तैयार किया है जहां पर अपने आप को जीवित रखते हुए वहां की जलवायु का सामना करना ही एक मुख्य चुनौती है। भारत को अंटार्कटिका में रिसर्च स्टेशन बनाने में बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ा था। पश्चिमी देशों ने भारत के रिसर्च स्टेशन का पुरजोर विरोध किया परन्तु रूस ने उस समय भारत का साथ दिया । वर्तमान समय में अंटार्कटिका में भारत के दो रिसर्च स्टेशन हैं एक ''मैत्री'' तथा दूसरा ''भारती'' । दक्षिणी गंगोत्री बर्फ की शीट पर बनाया गया भारत का प्रथम स्टेशन था जो कि स्टेशन के द्वारा छोड़ी गयी गर्मी से धीरे–धीरे बर्फ में धंसता चला गया और वर्तमान में वह पूरी तरह से बर्फ में समा गया है।

दक्षिण गंगोत्री से लगभग 100 किमी की दूरी पर भारत ने दूसरा रिसर्च स्टेशन मैत्री बनाया है जो कि चट्टान के ऊपर बना हुआ है जिसे सिमारचर ओएसिस कहा जाता है। इसका निर्माण डी0आर0डी0एल0 के सहयोग से पूरा किया जो कि भारतीय सेना की एक इकाई है । वर्तमान में इस मैत्री स्टेशन के पास एक नया मैत्री रिसर्च स्टेशन बनाने का प्रस्ताव है जिसमें 100 लोगों के रूकने की व्यवस्था हो और वह आधुनिक सुख सुविधाओं से पूर्ण हो । भारत का एक और आधुनिक स्टेशन ''भारती'' है जो कि जर्मन कम्पनी के द्वारा बनाया गया है यहाँ पर हर एक चीज आधुनिक है चाहे वह लिविंग रूम हो टायलेट, रसोई घर, प्रयोगशाला, जनरेटर कक्ष, वायु नियन्त्रण संयत्र, ताप नियन्त्रण संयत्रए जल शोधक संयत्र, खान–पान संग्रह कक्ष या अन्य चीजें हों। इन सभी चीजों की योजना बहुत ही अच्छी तरीके से की गयी है।

मै वर्ष 2007 में सर्वे ऑफ इण्डिया में आया था और मुझे पता चला कि सर्वे ऑफ इण्डिया हर साल अपने कर्मचारियों को अंटार्कटिका कार्य के लिए भेजता है। उसी दिन से मैने निर्णय लिया था कि मै एक न एक दिन उस विशाल सफेद महाद्वीप पर अवश्य जाऊँगा । मैने 2008 से प्रत्येक वर्ष अपना नाम इस अभियान के लिए भेजा और मुझे वर्ष 2014 में यह सुअवसर प्राप्त हुआ। मुझे याद है कि जुलाई 2014 में नावेल्टी में पत्नी के साथ '' मै तेरा हीरो'' देख रहा था तभी प्रदीप सिंह का फोन आया कि तुम्हारा

चयन 34th अंटार्कटिका अभियान में हो गया । वह क्षण मेरी जिन्दगी का बहुत ही महत्वपूर्ण क्षण था। मेरे जीवन का एक सपना पूरा होने वाला था ।

मेरी अंटार्कटिका की यात्रा की शुरूआत सर्वप्रथम भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में मेडिकल परीक्षण से हुई जो कि चार दिनों तक चला जिसमें लगभग पूरे शरीर की जाँच हुयी और 27 पृष्ठों की एक रिपोर्ट बनाकर NCAOR (National Centre for Antarctic and Ocean Research) को भेजी गयी। भारत में NCAOR वह संस्था है जो अंटार्कटिका और आर्कटिक क्षेत्रों के अभियान दल को भेजता है। अभियान से सम्बन्धित हर चीज को NCAOR उपलब्ध कराता है ।

मेडिकल परीक्षण समाप्त होने के अगले ही दिन एक बस हम 23 लोगों की प्रथम टीम को औली, जोशी मठ में इण्डो तिब्बत बार्डर पुलिस के ट्रेनिंग कैम्प में ले जाने के लिए खड़ी थी । वहाँ पर प्री–अंटार्कटिका प्रशिक्षण के अन्तर्गत माउन्टेनियरिंग एवं स्कीइंग, औली में 12 दिनों तक माउन्टेनियरिंग, ट्रेकिंग, शारीरिक प्रशिक्षण दी गई और यहाँ आपदा प्रबन्धन के बारे में काफी कुछ सिखलाया गया। भूस्खलन, बाढ़ अन्य किसी प्रकार की प्राकृतिक आपदा में किस प्रकार स्वयं को बचाते हुए दूसरों की जान–माल की रक्षा करना चाहिए। अन्टार्कटिका में हमेशा अपने साथी जोड़े के साथ ही बाहर जाना चाहिए । मुसीबत आने पर या बर्फ की खाई में गिर जाने पर स्वयं या अपने साथियों की किस प्रकार मदद करना । इन सभी की ट्रेनिंग एवं बचाव का तरीका सिखाया गया । बर्फ पर चलने में प्रयुक्त होने वाले उपकरण जैसे कि आईस एक्स, क्रेम्प–आन, रोप काराबिना इत्यादि के इस्तेमाल के बारे में जानकारी दी गयी । इसी ट्रेनिंग के अन्तर्गत 04 दिनों की ट्रेकिंग बद्रीनाथ में हुयी वहाँ पर भी सुबह 05 बजे से लेकर शाम तक की कठिन अभ्यास के बाद जब शाम को तप्तकुण्ड में स्नान करते थे तो शरीर की सारी थकान गायब हो जाती थी। हम लोगो को इन सबकी ट्रेनिंग देने में इण्डो तिब्बत वार्डर पुलिस के मनोज कुमार, पवन और जोत सिंह का काफी योगदान रहा। सीधे पहाड़ पर रस्सी की सहायता से ऊपर चढना और फिर कूदते हुए नीचे उतरना बहुत ही रोमांच पैदा करता था ।

औली में ट्रेनिंग की समाप्ति के पश्चात मुझ ज्यो0 एवं अनु0 शाखा, देहरादून में रिपोर्ट करना था जहाँ पर हमारी सर्वे की टीम को अंटार्कटिका में किये जाने वाले कार्य की योजना बनानी थी। हम लोगो ने लगभग दो सप्ताह तक देहरादून में रहकर अपनी कार्य–योजना का पूरा खाका तैयार किया। हमारे साथ टीम लीडर पी0सी0 डागला जी थे जो कि काफी जुझारू व्यक्ति है। हमें अंटार्कटिका में टोटल स्टेशन से कार्य करना था जो यंत्र हमें दिये गये थे उनका बैटरी बैक–अप मात्र 15 मिनट का ही था। हम लोगो ने नई बैटरी की डिमाण्ड की जिसे पूरा नहीं किया गया और निर्देश दिया गया कि हम लोग क्लीनोपोल एवं हाईट बुक की मदद से उचाइयों को निकालेंगे। इन सब का हल डागला जी

ने निकाला उन्होंने अपने पैसे से 10–10 वाट की लगभग दो बैटरी लाकर उसको जुगाड़ लगा कर टोटल स्टेशन में फिट कर दिया ये बैटरी लगभग 08 घण्टे का बैक–अप देती थी जिसकी बदौलत हमारे काम की क्षमता में बढोत्तरी हुयी और हम लोगो ने बेहतर परिणाम दिये ।

दिवाली के तुरन्त बाद हमें गोवा बुलाया गया जहां पर फायर फाईटिंग की ट्रेनिंग लेने के पश्चात नवम्बर को मुम्बई एअरपोर्ट से जोहान्सबर्ग की उड़ान भरी जहाँ से हम केपटाउन गये । दो दिन तक हमें केपटाउन के लगून वीच होटल में ठहराया गया जो कि समुद्र के किनारे था। होटल के कमरों में इलेक्ट्रानिक सेफ लगा है जिनके पासवर्ड डालकर आप अपना कीमती सामान रख सकते थे। बाथरूम में पानी अपनी सुविधानुसार गर्म या ठंडा कैसा भी एक ही नल से ले सकते थे। रात में ग्लास से पर्दा हटाकर समुद्र के दर्शन होते थे। केपटाउन में दो दिनों में वहां पर बोल्डर आइलैण्ड पर सील देखे, पार्क में जाकर पेन्ग्युईन देखे और केप आफ गुड होप पर जाकर लाईट हाउस देखा। केप आफ गुड होप साउथ अफ्रीका का सबसे दक्षिण सिरे पर एक केप नुमा आकृति है जिसे केप आफ गुड होप कहा गया। यहाँ पर हिन्द महासागर और अटलान्टिक महासागर का मिलन होता है। 400–500 वर्ष पूर्व व्यापारी ईस्ट की ओर जाने के लिए यहीं से जाते थे। यहां से आगे की यात्रा में बीच में पड़ने वाली व्यापारिक पवन कुछ महीने यात्रा में सहायक होती थी और बाकी महीने यात्रा की विपरीत चलती थी ।

केपटाउन में 11 नवम्बर को हम ALSI के कार्यालय में गये । ALSI एक ऐसी संस्था है जो अंटार्कटिका को जाने वाले लोगो को कार्गो प्लेन एवं फीडर प्लेन की सेवाएं प्रदान करती है । दोपहर को हम लोगो ने अपना सामान ALSI के कार्यालय में जमा करा दिया और रात को हम सभी अंटार्कटिका की यात्रा के लिए तैयार थे ।

केपटाउन में कुछ भारतीय रेस्त्रां जैसे एशियन फुड बाजार, बालीबंड कैफ मिल गया जहां पर हम भारतीय खाने का आनन्द उठा सके। साउथ अफ्रीका में ठहरने और घुमाने का पूरा इन्तजाम अब्दुल के हाथ में रहता है जो कि बहुत वर्षो से यह कार्य करता चला आ रहा है। साउथ अफ्रीका में बहुत सफाई है, सड़कों के किनारे कही गंदगी नही दिखाई देगी। यहां तक की हर चौराहे पर सिगरेट की कश फेकनें के लिए पत्थर के एश–ट्रे बने हुए है। सड़कों पर सफाई करने वाले लोग हमेशा मिल जायेंगे और जगह जगह पर डस्टबीन भी रखे हुए मिलेंगें ।

11 नवम्बर की रात में जब केपटाउन एयरपोर्ट पहुंचे तो ALSI का कार्गो प्लेन हमारा इन्तजार कर रहा था । हमारे साथ रूस और बेल्जियम के भी सदस्य जा रहे थे । रात को 09 बजे प्लेन ने उड़ान भरी । प्लेन अन्दर से एक गोदाम की तरह लग रहा था जिसमें आगे की तरफ एक प्रोजेक्टर लगा हुआ था जो उड़ान की पूरी जानकारी दे रहा था

उसके बाद हम लोगो के बैठने की व्यवस्था थी और पीछे की तरफ हमारा सामान रखा हुआ था ।

हमें ALSI की क्लास में पूरी तरह से निर्देश दिये गये थे कि हमें कैसे कपड़े पहनने है और अपने आप को कैसे रखना है। अंटार्कटिका में कपड़ों को तीन लेयर में पहना जाता है जिससे कि ठंड से बचा जा सके ।

रात के 09 बजे की फ्लाईट जब अगले दिन 11 बजे अंटार्कटिका में उतरने वाली थी तो एक अजीब से डर ने मुझे ग्रसित कर रखा था। बाहर –25 डिग्री का तापमान था और मैने अपने आपको पूरी तरह कपड़ों से लैस कर रखा था मेरा ध्यान इस बात पर था कि कहीं कोई शरीर का कोई हिस्सा खुला न रह जाये। जब ALSI की उस फ्लाईट ने नोवा एअरपोर्ट पर लैण्ड किया जो दिल की धड़कन और बढ़ गयी। एक ऐसा एयरपोर्ट जो बर्फ का बना हुआ है और प्लेन के नीचे पहिए के साथ में स्लाइडर लगे हुए थे। अब मै अपने ऊपर के डर को काबू में करने का प्रयास कर रहा था और प्रतीक्षा करने लगे कि पहले सभी लोग उतर जाये फिर मैं उतरूँ क्योंकि मेरे मन में अंटार्कटिका की ठंड के बारे में बहुत सी बाते पैदा हो रही थी ।

आखिर वो समय आ गया जब मैने अंटार्कटिका पर अपना पहला कदम, अपने आप को सूर्य की किरणो से बचाते हुए रखा कि कहीं अल्ट्रावायलेट किरणें नुकसान न पहुँचाये । कुछ समय के बाद मेरी हिम्मत खुलने लगी। पहले अपना चेहरा खोला फिर कुछ फोटोग्राफी हुयी और बर्फ पर चलने का आनन्द उठाया। नोवा एअरपोर्ट पर हम लोगो को लेने के लिए मैत्री से लोग आर्कटिक ट्रक और पिस्टन बुली लेकर आये थे। मैत्री स्टेशन यहां से लगभग 10–12 किमी दूर था और पिस्टन बुली में बैठ कर हमने बर्फ की 1–10 किमी मोटी शीट पर एक निर्धारित पथ पर चलने लगे जो कि पहले से चिन्हित किया गया था।

मैत्री में हम लोगों का पुराने साथियों के द्वारा स्वागत किया गया । यहां पर हमारे रूकने की व्यवस्था समर–हट में की गयी थी जो कि मुख्य स्टेशन से बाहर था। यहां सबसे बड़ी समस्या सुबह की नित्य क्रिया थी। टायलेट अलग करनी होती है और मल अलग । मल के साथ टायलेट नही कर सकते नही तो जिसकी गैली ड्यूटी लगती थी उसको इसको जलाने में दिक्कत आती थी। जिसमें मल को शाम को जलाकर राख को डस्टबिन में फेंका जाता था । मजा तो तब आता है कि जितने दिन हम लोग रूके थे रोज किसी न किसी टायलेट में पानी मिल ही जाता था। यहाँ आकर हम विदेशी हो गये थे और मल करने के बाद धोना नही होता था बल्कि टिश्यू पेपर से साफ करना होता था । यहाँ पर मेटल बाइट एवं इलेक्ट्रिक सॉक का एहसास हुआ। अगर आप नंगे हाथ से किसी

भी मेटल को छूते हो तो वह अत्यधिक ठंड होने के कारण आपके हाथ से चिपक जायेगा और फिर आपकी खाल के साथ ही निकलेगा।

अंटार्कटिका में आपको झटके भी बहुत लगते है। यहां शरीर में थोड़ी थोड़ी देर में इलेक्ट्रिक चार्ज बनता रहता है और जैसे ही मेटल की कोई भी चीज आपके शरीर से छूती है आपको करेन्ट का जोरदार झटका लगता है। हम मैत्री में आठ दिनों तक रूके फिर आगे की यात्रा 21 नवम्बर को भारती स्टेशन के लिए प्रारम्भ कर दी जो कि हमें फीडर प्लेन से करनी थी। फीडर प्लेन छोटे प्लेन होते है और ये कम ऊँचाई पर उड़ते है और यदि कहीं बीच में मौसम खराब हो गया तो इनको वहीं पर उतरना पड़ेगा और मौसम सही होने तक हमें प्लेन के अन्दर स्लीपिंग बैग में ही आराम करना पड़ेगा। मैत्री से 3000 किमी की भारती की यात्रा पर हम निकल चुके थे। अब तो हर समय दिन था तो इस यात्रा में बर्फ की विभिन्न प्रकार की खुबसूरत आकृतियों का आनन्द लेते हुए आये । पहली बार लगा भगवान ने बर्फ में भी कितनी कलाकारियां की है। इतनी विशाल बर्फ की चादर में बीच–बीच में कहीं पर पत्थरों के पहाड़ भी दिखायी दिये कही आइस बर्ग भी दिखायी दिये जो समुद्र के जमने के कारण उसी में फंस कर रह गये है । चूंकि फीडर प्लेन छोटा था तो बीच में ये सायोवा जापानी एअरबेस पर उतरा और वहां पर अपने आप को रिफ्यूल किया । अब इसका अन्तिम पड़ाव प्रोग्रेस एअर पोर्ट था जहां से हम भारती स्टेशन पर गये ।

भारती आते वक्त हम समुद्र पर चलकर आये जिसका मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि टैंक के बराबर वजन वाली 05 पिस्टन बुली समुद्र पर चल रही है जिसके ऊपर 1–2 मीटर बर्फ है और नीचे अथाह पानी इसी समुद्र में बर्फ के टूटने से चीन की पिस्टन बुली समुद्र में समा गयी थी। भारती में आने के बाद से अब हमारा सर्वेक्षण का कार्य वहां की शुद्ध वातावरण में शुरू होने वाला था। यहां अभी 24 घण्टे दिन था तो घड़ी की सुई देखकर हर कार्य करना पड़ता था। सुबह 08 बजे स्कूडो से समुद्र के ऊपर चलकर अपने कार्यक्षेत्र में पहुंचना और फिर जी0पी0एस0 और टोटल स्टेशन को लेकर एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर चढ़ना और काम करना । लंच में पराठे स्नैक्स लेकर जाते थे और खुले आसमान में खाते थे। भारती स्टेशन जर्मन टेक्नालॉजी से बना हुआ आधुनिक स्टेशन है और यहां पर कोई खास समस्या नहीं उत्पन्न हुयी । हम लोगो का पूरा फोकस दिये गये कार्य को पूरा करना था। हमारे और कार्य के बीच में खराब मौसम ही सबसे बड़ी बाधा थी । एक बार हम लोग मैक लिआड द्वीप पर कार्य कर रहे थे दोपहर के दो बजे अचानक मौसम खराब होना शुरू हो गया। हमने स्टेशन पर संदेश भेज दिया कि हमे लेने आ जाओ। बर्फबारी और तेज हवाएं बहने लगी हम लोगो को ठंड भी लगने लगी थी। पहाड़ों पर चढ़ने उतरने से हमारे शरीर में पसीना निकलने लगता था अब वही पसीना ठंडा होकर पैरो के तलवों को ठंडा कर रहा था। स्कूडो भी नहीं आ रहा था चारों तरफ व्हाइट आउट

हो गया था। कुछ भी नहीं दिख रहा था। 2–3 घंटे के बाद स्टेशन से 06 लोग दो स्कूडो लेकर आयें उस समय तक हमारी हिम्मत जबाब दे गयी थी। ऐसा लग रहा था कि अगर 1–2 घंटे और रूकना पड़ जाता तो फिर हम लोगो का वही राम नाम सत्य हो जाता ।

शुरूआत के तीसरे दिन जब हम श्री गणेश द्वीप पर चढ़ने का रास्ता ढूंढ रहे थे और रास्ता मिल नही रहा था। उस द्वीप के चारो तरफ की बर्फ में क्रेक्स थे फिर एक जगह रास्ता मिला। वहां पर जैसे ही उतर कर पैर रखा मेरा पूरा पैर बर्फ के अन्दर धंस गया और डागला सर और विशाल ने बर्फ हटायी तो उनके हाथ में पानी आ गया। हम लोग इतनी बुरी तरह से डर गये कि कुछ बता नहीं सकते लग रहा था कि आज सभी लागों की जलसमाधि बन जायेगी। फिर क्या था कुछ ही सेकेण्ड में सभी स्कूडो पर बैठकर ऐसे भागे है वहां से कि बता नही सकते । शुरूआत में रात में नींद नहीं आ पाती थी। इतने बुरे–बुरे स्वप्न आते थे कि जैसे कभी हम क्रेक्स में फंस गये कभी समुद्र में समा गये, कभी ठंड ने हमको जमा दिया । धीरे–धीरे वहां की सुंदरता को देखते–देखते वहाँ के बारे में जानने और समझने लगा। कहते हैं अंटार्कटिका में बहुत ही खतरनाक सुंदरता है और ऐसी सुंदरता आपको कहीं नहीं मिलेगी और आपने अगर सावधानी हटा दी तो यही सुंदरता आपके लिए बहुत खतरनाक सिद्ध होगी। अंटार्कटिका के वातावरण पर बनी "White out" और "Vertical limit" फिल्म को देखने से वहां के बारे में अधिक जानकारी मिलेगी ।

जब समुद्र पिघल गया तब हम लोगो ने ब्रोकनेस पर कार्य करना प्रारम्भ किया जो कि बहुत कठिन था। इसके लिए पहले 03 किमी का पहाड़ी रास्ता और एक लकड़ी का पुल जी0पी0एस0 इन्स्ट्रुमेंन्ट को उठाकर पार करना पड़ता था फिर वहां से पिस्टन बुली से अपने कार्यक्षेत्र में पहुंचते थे फिर वहां जी0पी0एस0 उठाकर पहाड़ों पर जाकर स्टेशन बनाते थे। शाम को कार्य समाप्त करके फिर पिस्टन बुली से फिर वहीं पर आते थे और वहाँ से पैदल पहाड़ी को पार करके स्टेशन पहुँचते थे।

हम अपने साथ कैमरा लेकर जाते थे फिर कहीं भी अच्छी जगह मिल जाती तो वहाँ पर फोटोग्राफी करते थे। इसी समय 27 जनवरी को इवान पापानीन सीप आ गया और हमें हेलीकाप्टर की सुविधा मिलने से कुछ ही दिनों में बहुत सा कार्य पूर्ण कर लिया। अंटार्कटिका में मैने वहां पर आये हुए अन्य विभाग के लोगों की भी मदद ली। आइ0एम0डी0 के लिए ट्रु–नार्थ को मैत्री और भारती दोनो स्टेशन पर चिन्हित करके दिया। आई0आई0टी0एम0 के एक इन्स्ट्रूमेन्ट को पृथ्वी के सतह के लम्बवत स्थापना करने में मदद की जिससे midth Ray of sight में कोई परेशानी ना आये और वो अच्छा डाटा कलेक्ट कर सके। यहां पर आकर हम लोगों ने फ्लाइट प्लानिंग की और उससे पहले भारती स्टेशन पर इसका डेमो किया जो कि सफल रहा। फिर न्यू मैत्री की प्रस्तावित साइट के डी0इ0एम0 निर्माण के लिए वहाँ पर कन्ट्रोल प्वाइंट देते हुए वहाँ की फोटोग्राफी की ।

भारती स्टेशन पर पुल के पास लगभग 30–40 मीटर ऊँचाई का 80 डिग्री झुकाव का एक बर्फीला स्लोप है। इस स्लोप स्टेशन से 3–4 लोगों ने ही फिसलने का आनन्द उठाया है यह स्लोप जहां खत्म होता है वहां पर एक छोटी झील भी है। मैने भी इस स्लोप पर फिसलने का रोमांच उठाया और इस प्रयास में मेरी पोलर ड्रेस की सिलाई खुल गयी । इस पर मै दो बार फिसला, यह फिसलने जैसा नही था ऐसा लग रहा था कि शरीर बर्फ पर टकराकर उछल उछल कर फिसलता हुआ नीचे आ रहा है अंटार्कटिका की सबसे खास बात है यहाँ के पेंग्विन और सील । पेंग्विन तो इतने खूबसूरत है कि इनको देखने के लिए हम लोगो में बहुत उत्साह बना रहता था। इनके चलने की स्टाइल देख लो तो ऐसा लगता है कि दादाजी दोनों हाथ को पीछे करके और एक हाथ में छड़ी पकड़कर आराम से चल रहे हो। प्रकृति ने इनको ठंड से बचाने के लिए इनके पंख को बहुत गर्म बनाया है। ये कई महीनों तक बिना कुछ खाये पीये रह सकते है। ये हमेशा जोड़ों में पाये जाते है। इनकी बहुत बड़ी–बड़ी कालोनियॉ होती है और एक कालोनी में लाखों की संख्या में पेंग्विन हो सकते हैं। इनकी बहुत सी प्रजाति पायी जाती है जिनमें इमपेरर, इडले प्रमुख है ।

सील पानी के बाहर बहुत आलसी होते है यह एक स्थान पर बिना हिले डुले कई दिनों तक पड़ा रहता है। पानी के बाहर यह अपने शरीर को धक्का देकर बहुत धीमे धीमे आगे की ओर सरकता है पर पानी के अन्दर यह बहुत तेज तैरता है। आस्ट्रेलियाई स्टेशन डेविस के पास ऐलीफैण्ट सील पायी जाती है जो कि 12 फुट लम्बी भारी भरकम शरीर वाली होती है। पक्षियों में ईसा सकुआ, स्नो पेट्रीयल, ब्लेक पेट्रीयल पायी जाती है। सकुआ, स्नो पेट्रीयल एवं ब्लेक पेट्रीयल का शिकार करता है। स्नो पेट्रीयल एवं ब्लेक पेट्रीयल अपने अंडे पहाड़ों के अन्दर की छोटी–छोटी दरारों में देती है। चूंकि यहां कोई भी प्रकार की वनस्पति नहीं है तो इन लोगो ने बच्चों को पालने का यह तरीका खोज रखा है। सकुआ अपने बच्चो को पहाड़ी की चोटी पर पालता है। और यदि कोई उस तरफ जाने लगता है तो ये उस पर आक्रमण भी कर देते हैं।

अंटार्कटिका में अन्य देशों ने भी अपने शोध स्टेशन स्थापित कर रखे हैं। भारती के पास चाईना का चाईनेयर एवं रूस का प्रोग्रेस और आस्ट्रेलिया का डेविस स्टेशन है। सौभाग्य से मुझे इन तीनों स्टेशन पर जाने का मौका मिला और वहां पर अपनायी जाने वाली तकनीकी का पता चला। 24 मार्च को पानी के जहाज पर सभी रूस के क्रु मेम्बर और भारतीय दल के सदस्यों की एक ग्रुप फोटोग्राफी की गयी। उस समय तापमान –25 डिग्री सेंटीग्रेड हो गया था और 10 मिनट के फोटोसेशन में ही हाथ कान नाक का पता नही चल रहा था कि कहां हैं । मूछों के ऊपर नाक से छोडी गयी श्वास बर्फ के रूप में जम गयी थी। ईवान पापानीन काफी पुराना रूस का जहाज है। 25 मार्च को शिप को

विदा कर दिया गया । जाते वक्त 5–6 पेंग्विन आयीं थी जैसे कि हमें गुड बाय कहने के लिए आयीं हों।

शिप की हमारी प्रथम यात्रा में 26 मार्च को एक कम दबाव का क्षेत्र मिल गया फिर क्या था रोलिंग एंव पिर्चीग शुरू हो गया । सभी लोगो की ऐसी हालत खराब हुयी कि कोई कमरे से बाहर आने की हालत में नही था। उल्टियां, जी मचलाना, समुद्रीय ज्वर ने लोगो को घेर रखा था। कुक तो पहले ही दिन बिस्तर पर गिर गया और हमारे डाक्टर साहब मनीष की हालत भी नाजुक हो गयी थी। हमारे सर्वे के मजबूत साथियों में मैं ही सही रहा बाकी सब गिर गये। कुल मिलाकर हम 5–6 लोग ही थे जो 3–4 दिनों तक लोगो के लिए खाना बनाने का और उनका ध्यान रखने का काम करने लगे । जिस खतरनाक तरीके से शिप उपर उछलकर एकदम से नीचे जा रहा था उसको देख कर ही जान निकल जाती थी। मै कमरे की खिड़की से सिर बाहर निकालकर घंटो तक इसको देखा करता था और साथ में उन पक्षियों को देख रहा था जो हमारे साथ काफी दूर तक चले आते थे। उड़ते उड़ते पानी में अपना शिकार ढूंढ लेते थे और पानी की लहरों पर विश्राम भी कर लेते थे। मुझे ये देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि पक्षी समुद्र की लहरों पर भी रह सकते है।

09 दिनों तक सिर्फ पानी ही पानी दिखाई दे रहा था । 02 अप्रैल को हम केपटाउन पोर्ट पर पहुँचे और शिप के कैप्टन की गलती से एक दिन वहीं पोर्ट पर बिताया ।इतने दिनों के बाद इन्सानों की बस्ती में दुबारा आया था। ऐसा लग रहा था कि मैं किसी स्वप्न में था जो अब खुल गया हो। 07 अप्रैल को हमने अपनी मातृभूमि पर अपने कदम रखे और 6 महीने दूर रहने के बाद अब परिवार से फिर से मिलने जा रहा था ।इस अंटार्कटिका की यात्रा के बहुत से ऐसे संस्मरण है जो मुझे याद आते रहेगें और मै अपने आप को बहुत ही गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ । भविष्य में यदि कभी सर्वेक्षण विभाग आर्कटिक अभियान से जुड़ता है तो इस अभियान का सदस्य बनने में मुझे बहुत खुशी प्राप्त होगी । इस यात्रा ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है और मैने बहुत सारा अनुभव प्राप्त किया है जिसका मैं अपने जीवन में प्राप्त करने का प्रयास करूँगा ।

एक यात्राः जयापुर गॉव

अरूण कुमार मुदगल
सर्वेक्षक

जयापुर गॉव उस समय सुर्खियों में आया जब हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंन्द्र मोदी जी द्वारा सांसद के रूप इसे गोद लिया गया। उसी समय सभी को ज्ञात हुआ कि उ0प्र0 के वाराणसी जिले के अन्तर्गत एक जयापुर गॉव है। जयापुर गॉव से मेरा सम्बन्ध उस समय स्थापित हुआ जब हमारे कार्यालय के तत्कालीन निदेशक महोदय द्वारा हमारे अनुभाग अधिकारी को निर्देशित किया गया कि जयापुर गॉव 1:10K पैमाने की जिस टोपोशीट में पड़ रहा है, उसका मानचित्र प्रकाशित करना है। उस समय मेरे द्वारा जयापुर के बारे में और अधिक जाना गया।

उसके उपरान्त भारत के महासर्वेक्षक कार्यालय द्वारा हमारे कार्यालय को निर्देशित किया गया कि हमारे कार्यालय को भारतीय सर्वेक्षण विभाग की तरफ से भारत सरकार द्वारा प्रदर्शित की जा रही विज्ञान एंव तकनीकी प्रदर्शनीः **विज्ञानम् तू कौशलम** प्रधानमंत्री द्वारा गोद लिए हुये गांव जयापुरए वाराणसी जिले में दिनांक 28 अप्रैल से 30 अप्रैल' 2015 मे भाग लेना है। तथा सौभाग्य से कार्यालय की तरफ से मुझे प्रदर्शनी में भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ, तथा जयापुर गॉव जाने के लिये मेरी यात्रा का प्रारम्भ दिनांक 27.04.2015 (अप) को हुआ तथा लगभग 330 किमी की यात्रा कर हम रात्रि में वाराणसी पहुॅचे तथा वहॉ कचहरी के पास स्थित होटल कमल गंगे में हाल्ट किया।

इसके उपरान्त दिनांक 28.04.2015 को प्रातः काल हम लोग प्रदर्शनी में भाग लेने के लिये जयापुर गॉव के पास स्थित जखनी गॉव पहुचे जहॉ पर कि राजकीय इण्टरमीडिएट कालेज में प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी। इस प्रदर्शनी में हमारे भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अतिरिक्त परमाणु ऊर्जा विभाग, पृथ्वी विज्ञान विभाग, वाडिया हिमालयन भू–गर्भ संस्थान द्वारा भी भाग लिया गया।

इन तीन दिनों में 28,29, तथा 30.4.2015 को प्रदर्शनी में आस–पास के सभी गॉवों के निवासियों द्वारा सभी विभागों द्वारा वहॉ उपस्थित सभी लोगों को यह बताया गया कि विज्ञान को हम कैसे कौशल में बदल सकते है। इन सभी कार्यकलापों के बीच हमारे द्वारा भारतीय सर्वेक्षण विभाग के क्या कार्य है तथा यह भारत सरकार एवं आम जनता के लिये कैसे उपयोगी है यह सभी बताया। दिनांक 30.04.2015 को प्रदर्शनी के सफलतापूर्वक समापन के उपरान्त दिनांक 01.05.2015 को वाराणसी से वापस हम लखनऊ आ गये।

इस यात्रा के दौरान मैने पाया कि जयापुर गॉव काफी विकासशील गॉव है । वहॉ पर भारतीय युनियन बैंक की शाखा है, सारे रास्ते पक्के है, तथा वहॉ पहुचने के लिये भी रास्ता बहुत अच्छा है, यह गॉव वाराणसी–इलाहाबाद मुख्य मार्ग से मात्र लगभग 5 किमी0 की दूरी है, गॉव के सभी मकान पक्के है तथा इसकी गलियों में प्रकाश की व्यवस्था है। गॉव में पक्का तालाब भी विकसित है तथा बायो–टायलेट भी वहॉ पर बने हुये है।

इस प्रकार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा सांसद गॉव के रूप में गोद लिया जाने के कारण जयापुर गॉव काफी विकसित हुआ है तथा वहॉ के लिये काफी योजनायें भी चल रही हैं । उदाहरण के तौर पर पास ही जखनी गॉव में दो राजकीय इण्टरमीडिएट विद्यालय है जो कि बालक एवं बालिकाओं के लिये अलग–अलग है वहॉ पर एक मॉडल स्कूल की भी स्थापना की गयी हैं। तथा बघौर एवं स्वास्थ्य केन्द्र भी उपलब्ध है।

विष्णु – लक्ष्मी संवाद

श्रीमती सुनीति श्रीवास्तव
(पत्नी अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, सहायक)

एक बार विष्णु जी और लक्ष्मी जी में इस बात को लेकर चर्चा शुरू हो गयी कि संसार में महत्वपूर्ण कौन है। क्या निकला इस संवाद का हल–

लक्ष्मी जीः सारा संसार पैसे (मेरे) से चल रहा है, अगर मैं नही ंतो कुछ नहीं।

विष्णु जीः (मुस्कराते हुए) सिद्ध करके दिखाओं।

लक्ष्मी जी ने पृथ्वी पर एक शवयात्रा का दृश्य दिखाया। जिसमें लोग शव पर पैसा फेंक रहे थे, कुछ लोग उस पैसे को जमीन से उठा भी रहे थे तो कुछ बटोर रहे थे और कोई तो छीन भी रहा था।

लक्ष्मी जीः देखा भगवन, कितनी कीमत है पैसों की।

विष्णु जीः परन्तु लाश नहीं उठी पैसे उठाने के लिए।

लक्ष्मी जीः अरे, लाश कैसे उठेगी वो तो मरी हुई है... बेजान है...

विष्णु जी ने जवाब दिया जब तक मैं (प्राण) शरीर में हूॅ तब तक ही तुम्हारी कीमत है और जैसे ही मैं शरीर से निकला तुम्हारी कोई कीमत नहीं है।

डेटा सुरक्षा एवं प्रबंधन

संजय सक्सेना
सर्वेक्षक

डेटा सुरक्षा एवं प्रबंधन किसी भी कार्यालय की रीढ़ की हड्डी होती है । डेटा एकत्रित करने एवं उसको कार्यालय के उपयोगानुसार बनाने के लिये ही कार्यालय के समस्त कर्मचारी अपने मानव दिवसों का उपयोग करते हैं । फाइनल स्टेज डेटा का प्रबंधन एवं सुरक्षा कार्यालय के लिए सर्वोपरी होना चाहिये ।

डेटा सुरक्षा एवं प्रबंधन पर कार्य करने का मौका मुझे Marg Solutions एवं RDSO में प्राप्त हुआ । अपने अनुभव के आधार पर मैं डेटा सुरक्षा एवं प्रबंधन से सम्बन्धित निम्नलिखित बातों पर प्रकाश डालना चाहूँगा ।

डेटा प्रबंधन

कार्यालय का Information Lifecycle प्रबंधन ही डेटा प्रबंधन कहलाता है। जिसको निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है ।

'' डेटा प्रबंधन एक प्रभावी तरीके से एक उद्गम की जरूरत का प्रबंधन करने के लिए आर्किटेक्चर, नीतियों, प्रथाओं और प्रक्रियाओं का विकास और क्रियान्वयन है ।''

डेटा प्रबंधन में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिये ।

1– डेटा की प्रचुरता को कम करना
2– डेटा की शेयरिंग
3– डेटा की इंट्रिग्रीटी को सुनिश्चित करना
4– डेटा इन्डिपेन्डेन्स क) भौतिक डेटा इन्डिपेन्डेन्स ख) तार्किक डेटा इन्डिपेन्डेन्स

डाटा सुरक्षा

कार्यालय में जितना आवश्यक डाटा प्रबंधन है उतना ही आवश्यक डाटा सुरक्षा भी है । डाटा सुरक्षा के लिये डाटा सुरक्षा नीति का होना अति आवश्यक है । कार्यालय की डाटा सुरक्षा नीति में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये ।

Virtual डेटा सुरक्षा

1– बैक अप और रिकवरी
2– फायरवाल
3– पासवर्ड प्रबंधन
4– User Accessibility/Authorization and special Authorization

Physical डेटा सुरक्षा

1– पोर्टेबल/Removable मीडिया
2– केसिंग
3– निर्बाध विद्युत आपूर्ति
4– विद्युत चुम्बकीय परिरक्षण (Electromagnetic Shielding)

ऊपर लिखी गयी बातों को ध्यान रखते हुए कार्यालय के डेटा को सुरक्षित रखने की योजना बनानी चाहिये । कार्यालय के डेटा को अति आवश्यक एवम् आवश्यक की श्रेणी में बाँटकर डेटा सुरक्षा के लिये Encryption Softwares का इस्तेमाल भी किया जा सकता है । डेटा प्रबंधन एवम् सुरक्षा का विषय इतना आवश्यक एवम् जटिल है कि इसको एक लेख में चर्चा कर पाना मुश्किल है । आजकल के तकनीकी युग में डेटा प्रबंधन एवम् सुरक्षा के क्षेत्र में हर कार्यालय को योजनाबद्ध एवम् समयबद्ध तरीके से कार्य करना अति आवश्यक है ।

पलायन त्रासदी

प्राकृतिक संरचना लगभग सभी देशों की एक जैसी ही होती है। पृथ्वी पर जीवन के सभी तत्व मौजूद हैं। मनुष्य, पशु–पक्षी एंव जीव–जन्तु देश काल वातावरण के हिसाब से सभी जगह व्याप्त हैं। हमारी बनाई हुई सीमायें टुकड़ो में बॉट देती है वही टुकड़े देश का रूप ले लेते है। सोचो यदि अपना देश जीवन संकट, अस्थिरता एवं अराजकता के कारण छोड़ना पड़े तो कितनी त्रासदी झेलनी पड़ती है। वर्तमान में कुछ मुस्लिम देशों की जनता के साथ ऐसी ही घटनायें घटित हुई हैं जिसमें उनके परिवार के परिवार तबाह हो गए हैं। ऐसी ही एक हृदय विदारक घटना सामने आई है। एक बच्चा समुद्र के किनारे मृत पाया जाता है। उसे देखकर ऐसा लग रहा था मानो वह सो रहा हो। इस घटना ने दुनिया को यह सोचने को मजबूर कर दिया है कि यह नृशंसता की पराकाष्ठा है। एक पिता जिसने अपने पूरे परिवार को खो दिया हो और यह कह रहा हो कि मैं घर जा कर क्या करूँ ?

किसके के लिए जाऊ। कितना दर्दनाक है। यही नहीं छोटे–छोटे बच्चे कई मीलों चलकर दूसरे देश की सीमा पर इस इतंजार में बैठे रहतें है कि शायद कोई आयगा उन्हें इस कष्ट से उबारेगा। वे बच्चे इस सोच से बहुत दूर है कि वे यह समझ पाएँ की हमारे साथ क्या हो रहा है भगे चले जा रहे हैं। उनकी अथाह पीड़ा को कोई देखने वाला नहीं है। उपरोक्त घटना को देखकर शायद मानवता को भी रोना आ जाऐगा। ऐसा करने वाले शायद यह सोचते होंगे कि वे तो अजर–अमर है उनका कोई क्या बिगाड़ेगा। प्रकृति अपना बदला जरूर देती है।

मिटाते भूख लागे दुःख

श्री अशोकतरू सामन्ता,
अधिकारी सर्वेक्षक

एक जैसे दिखनेवाले में तीन कुत्ते दो दिनों से भूखे थे। तीनों सोच रहे थे? कि खाना कैसे मिलेगा। इसी बीच में देखा कि एक घर में शादी का समारोह चल रहा है। और एक जगह पर खाना पक रहा है। खाने की सुगन्ध तीनों के नाक में पहुँचते ही उनकी भूख और बढ गयी। उसमें से एक ने बोला कि बारातियों के खाने के बाद हम लोंगों को भी खाना मिलेगा। लेकिन अब भूख से रहा नहीं जा रहा है। मै थोड़ा देख कर आ रहा हूँ कि खाने में क्या–क्या पक रहा है। पंडाल में चुपके से घुस कर देखा कि कड़ाही में पानी गरम हो रहा है, और कुछ लोग खाना बनाने की तैयारी में लगे हुए है। उसी बीच रसोइये ने एक साथी से कहा ''अरे–अरे कुत्ता आ गया'' उसके ऊपर गरम पानी फेंक दो। जैसे ही बोला उसके साथी ने कड़ाही का गरम पानी कुत्ते के ऊपर फेंक दिया। कुत्ता जोर से चिल्लाया और अपने दोनों साथी के पास वापस चला गया। उन दोनों ने पूछा क्या हुआ भाई!

कुत्ता ने जवाब दिया 'अरे पूछो मत' जाते ही गरमा–गरम'.....!

तब तक बीच में उन दोनों ने सोचा अरे इसे तो जाते ही गरमा–गरम खाना मिल गया। उन दोनों में से एक ने कहा, ''मै भी जाकर गरमा–गरम खाना खाकर आता हूँ''। यह कहते हुए वह रसोई घर में चुपके से घुस गया, तीनों कुत्ते एक जैसे दिखने के कारण रसोइये ने सोचा कि यह फिर आ गया। इसे डंडे से मारो, जैसे ही कहा उसके साथी ने डंडे से उसके पीछे जोर से मार दिया वह कुत्ता चिल्लाकर वहीं बैठ गया और फिर उठकर तेजी से भाग निकला और अपने साथी के पास पहुच गया।

उन दोनों ने पूछा क्या हुआ भाई उसने कहा 'अरे मत पूछो यार हमको तो जाते ही बैठा दिया'

तब तीसरे ने सोचा कि इन दोनो को तो भोजन आराम से मिल गया अब मैं भी जाकर देखता हूँ कि हमारा रसोई में कैसा स्वागत होता है? ऐसा सोचकर वह चल दिया और रसोई में घुस गया। रसोई घर में रसोइये ने सोचा कि इतना पीटने के बाद भी फिर आ गया । रसोइया साथियों से बोला कि इसको रस्सी से बॉध कर रखो। जैसे कहा, उसके साथियों ने कुत्ते को चारो तरफ से घेर लिया और रस्सी से बॉधने की कोशिश करने लगे। तभी कुत्ता उन सब को चकमा देकर बड़ी मुश्किल से वहां से निकल कर साथी लोगो के पास पहुँच गया। वो दोनो कुत्ते जो पहले से वहां पर उसका इन्तजार कर रहे थे।

वह सब जानते हुये भी पूछा क्या हुआ भाई! तब कुत्ता ने बोला, ''अरे पूछो मत यार ऐसा स्वागत मैने जिंदगी में कभी नहीं देखा हमको तो छोड़ना ही नही चाह रहे थे''।

कदवन के दो पग (2008 एवं 2011–12)

विवेक कुमार गुप्ता
सर्वेक्षक

बात दिसम्बर 2008 की है जब मुझे अपने एक सहकर्मी एवं दल के साथ उत्तर प्रदेश भू–स्थानिक आँकड़ा केन्द्र लखनऊ द्वारा, प्रथम बार इन्द्रपुरी जलाशय परियोजना में तलेक्षण कार्य हेतु जाना था । क्षेत्रीय कार्य हेतु नामित होने के उपरान्त परियोजना की पूरी फाइल (कदवन जलाशय परियोजना के नाम से) मुझे सौंपी गयी जिससे कि मैं सम्बन्धित कार्य, पत्राचार एवं पूर्व के सर्वेक्षण कार्य से अवगत हो सकूं ।

सोन नदी पर प्रस्तावित जलाशय परियोजना का अधिकाँश क्षेत्र घना जंगल एंव नक्सल प्रभावित था । जैसे जैसे मैं पत्राचार पढ़ रहा था वैसे वैसे क्षेत्र की भयावह छाप मेरे मस्तिष्क में पड़ती जा रही थी । फिर मेरे मस्तिष्क में कर्तव्य बोध हुआ कि मुझे कार्यालय द्वारा आंवटित क्षेत्रीय कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करना है । और मैंने लेवलिंग कार्य की कार्ययोजना बनाना प्रारम्भ किया एवं कार्ययोजना निदेशक, महोदय द्वारा स्वीकृत करायी । दिनांक 19 दिसम्बर 2008 को मैंने अपने सहकर्मी एव दल के साथ क्षेत्रीय कार्य हेतु पूरे उत्साह से प्रस्थान किया । 20 दिसम्बर को हम ओबरा (सोनभद्र) पहुँचे और शिविर लगाने के लिए बहुत प्रयास किया परन्तु किसी ने भी शिविर लगाने की अनुमति नहीं दी । देर रात में बड़ी मुश्किल से बिली मरकुण्डी गाँव में एक प्राथमिक विद्यालय में रात बिताने के लिए स्थान मिला । पूरे दल ने किसी तरह पूरा फील्ड स्टोर एक कमरे में रखकर, खुले आकाश के नीचे बिस्तर लगा दिये एवं सुबह जल्दी उठकर सर्वप्रथम कैम्पिंग प्लेस की तलाश में निकले और कोटा गाँव में शिविर लगाया ।

नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने एवं जलाशय परियोजना का कार्य होने के कारण गाँव के लोगों का सहयोग थोड़ा कम ही था । दिन तो काम करके कट जाता था परन्तु रात को पूरा क्षेत्र शांत एवं भयावह लगता था । इस प्रकार क्षेत्रीय कार्य करने के पाँच दिन बाद, रात के समय मैं रोज की डाक बना रहा था तभी एक लम्बा सैनिकनुमा व्यक्ति आया और मेरे तम्बू में आकर अभिवादन किया । उसकी आँखे लाल थी एवं चेहरा रौबीला था । कुछ देर की पूछताछ के उपरान्त उसने मुझे अपहृत करने की बात कही और क्षेत्रीय कार्य को बंद करने के लिए कहकर चला गया । मुझे पहले तो थोड़ा डर लगा परन्तु फिर सहज होकर सोने चला गया ।

कभी कभार ग्रामवासियों का विरोध भी झेलना पड़ता था । नदी के किनारे पक्का सड़क मार्ग न होने के कारण बहुत समस्या होती थी । क्षेत्रीय कार्य के दौरान मैंने अनुभव किया कि आम आदमी (ग्रामवासियों) के लिए आवागमन का कोई साधन न होने के कारण उनका जीवन कितना संघर्षपूर्ण था । उन्हें 24–25 किमी0 पैदल ही यात्रा करके आना जाना होता था ।

सोन नदी के उत्तर में उच्च कैमूर पर्वत श्रृंखला थी। सोन नदी का जल बहुत ही स्वच्छ था। लोग पानी के लिए सोन नदी व कुओं पर आश्रित थे। घने जंगल व पहाड़ों के बीच 'अमलाधाम' नामक एक देव स्थान है जहाँ नवरात्र के दिनों में मेला लगता है। मेले में बहुत दूर से लोग आते थे एवं रात होने से पहले ही वापस हो जाते थे। पुलिस व वनाधिकारी/कर्मचारी प्रायः सोन नदी को नाव द्वारा पार करके ही दूसरी ओर जाते थे जहाँ उनकी चौकी थी व एकमात्र सड़क मार्ग को बहुत कम प्रयोग करते थे।

इन सब परिस्थितियों में कार्य करते हुए मैं अपने दल के साथ उत्तर प्रदेश में कोटा, कोन एवं झारखण्ड में भवनाथपुर में शिविर लगाया । झारखण्ड में भवनाथपुर में ब्लाक कार्यालय के प्रांगण में मैंने शिविर लगाया था । पहले दिन मुझे प्रस्तावित बांधस्थल के गाँव कदवन से कार्य प्रारम्भ करना था। हमेशा की तरह सुबह–सुबह हमारा दल प्रस्तावित बांध स्थल से कार्य प्रारम्भ करने के लिए पहुँचा। हमारे पास डिजिटल लेवल मशीन थी जिसमें नान फोल्डेबल स्टाफ थे जिसे दूर से देखने पर जीप के ऊपर रखा मोर्टार प्रतीत होता था ।

कदवन गाँव से कार्य प्रारम्भ किये हुए महज 30 मिनट ही हुआ था कि कुछ लोगों ने हमें घेर लिया और कहा कि आज तो झारखण्ड बंद है । आप कैसे यहाँ आ गये और मारने की धमकी दी एवं कार्य बंद करने के लिए कहा । मैंने शांत स्वभाव से कहा कि हम झारखण्ड में कल ही आये है और हमें झारखण्ड बंद की कोई जानकारी नहीं थी लिहाजा उन्होंने पूछताछ के उपरान्त हमें जाने दिया । हम सभी सशंकित थे कि कहीं कोई हादसा न हो जाये पर ईश्वर की असीम कृपा से किसी भी प्रकार की क्षति नहीं हुई । इस प्रकार विषम परिस्थितियों में लगभग 3 माह तक लेवलिंग कार्य के उपरान्त पूरे दल ने कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया ।

इन्द्रपुरी जलाशय परियोजना के द्वितीय चरण में 01 नवम्बर 2011 को शिविर अधिकारी द्वारा टोटल स्टेशन, पी0टी0 के प्रयोग से डूबे क्षेत्र के कन्टूर सर्वेक्षण का कार्य दिया गया । इस शिविर में लगभग 80 फील्डकर्मी थे । कोटा गाँव में शिविर मुख्यालय बनाया गया । मेरे दल ने खोखा (झारखण्ड) चाँदनी (उ0प्र0) में शिविर लगाकर सर्वेक्षण कार्य किया । गाँव के लोग बहुत ही जागरूक थे उन्हें इस बात की भली भाँति जानकारी थी कि बांध बनने की स्थिति में पूरा गाँव ही डूबे क्षेत्र में है । सभी ग्रामवासी विकास की मुख्य धारा में चलने हेतु तैयार थे ।

हमें क्षेत्रीय कार्य हेतु स्थानीय व्यक्तियों की आवश्यकता थी । स्थानीय व्यक्तियों को साथ लेकर कार्य करने में हमें काफी सहयोग मिला एवं कार्य करने में सहजता हुई । चकरिया, चाँदनी, बसुहारी में पी0ए0सी0 एवं सी0आर0पी0एफ0 की चौकियाँ थी जोकि पूरे क्षेत्र की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखे हुए थे । एवं दिन रात पूरे क्षेत्र की चौकसी करते थे । शिविर अधिकारी एवं सभी सर्वेक्षण दलों के परस्पर सहयोग, धैर्य एवं कार्य कुशलता से अथक प्रयासों के उपरान्त क्षेत्रीय कार्य कम समय में एवं शुद्धतापूर्वक पूर्ण किया गया ।

अपडेशन

शिवनाथ मिश्रा
सर्वेक्षण सहायक

''परिवर्तन प्रकृति का नियम है''

अतः सभी को समय–काल के अनुरूप पर्यावरण में बने रहने हेतु आवश्यकतानुसार परिवर्तित (अपडेट) होते रहना पड़ता है जिससे वह जीवंत बना रह सके । यह परिवर्तन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं तकनीकी हर क्षेत्र में आवश्यक है । अन्यथा उनका अस्तित्व एवं औचित्य खतरे में पड़ सकता है एवं उसकी उपयोगिता क्षीण हो जाती है । सरवाइवल आफ द फिटेस्ट (Survival of the fittest) की अवधारणा के अनुरूप वाली चीजें ही अर्थपूर्ण रह जाती है । अतः सभी को अपडेट (अद्यतन) रहना होता है ताकि उनका महत्व बना रहे ।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग भारत सरकार का सबसे पुराना वैज्ञानिक मानचित्रण का विभाग है जो 1767 से देश सेवा में समर्पित है, विभाग समय–समय पर स्वयं को लगातार अपडेट करता रहा है । 1905 से पूर्व भारत का बड़ा भाग अलग–अलग (पैमाने) पर सर्वेक्षित एवं मुद्रित था परन्तु उनमें आपस में कोई तालमेल (स्केल, नेचर, स्टाइल आफ सर्वे) नहीं था एवं ये मानचित्र आधुनिक जरूरतों के अनुसार उपयुक्त नहीं थे अतः अद्यतन की कड़ी में 1904–05 में भारतीय सर्वेक्षण कमेटी का गठन किया गया जिसके सुझाव लागू किये गये एवं माडर्न मानचित्रों की श्रृंखला अस्तित्व में आई ।

उपरोक्त अनुसार 1956 में विभाग ने सभी मानचित्रों को मैट्रिक पद्धति में बनाने का निर्णय किया जिसे 1:50 K पर प्रदर्शित करने का कार्य विभाग ने लिया एवं अन्य विभागों की आवश्यकता को देखते हुए अलग–अलग पैमाने/कन्टुर पर भी मानचित्रों की आपूर्ति करते हुए देश की प्रगति में अपना योगदान देता रहा ।

विभाग ने सदैव उच्च गुणवत्ता एवं एकुरेसी को ही अपना आधार बनाये रखा जिसके लिए अलग से एक निदेशालय ज्योडिय एंव अनुसंन्धान शाखा का गठन कर रखा है जो विभाग को वैज्ञानिक तरीके से नये–नये यन्त्रो एवं विधाओं से सुसज्जित करता रहता है जिससे विभाग उन्नत पथ पर अग्रसर रहे ।

21वीं शताब्दी के आरम्भ में उच्च तकनीक को कम्प्यूटर के साथ जोड़कर डिजिटल युग में प्रवेश का युग था सभी विभागों में कम्प्यूटरीकरण का आगाज हो रहा था इसी क्रम में भारत के तत्कालीन महासर्वेक्षक भी डा0 पृथ्वीश नाग ने वृहत

पैमाने पर विभाग को कम्प्यूटरीकरण की दिशा में मोड़ दिया एवं चुनौतिपूर्ण ढंग से सभी कर्मचारियों को युद्धस्तर पर ट्रेंनिग देना एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर खड़ा करने जैसे कार्य को पूर्ण कराकर विभाग को मानचित्रण की अग्रिम पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया।

वर्तमान में विभाग ओ0एस0एम0 एवं डी0एस0एम0 सीरीज मानचित्रों का प्रकाशन कर रहा है जैसा कि 1:50 K पर भारतवर्ष के सभी क्षेत्रों के मानचित्र डिजिटल रूप में उपलब्ध हैं। भारतीय सर्वेक्षण विभाग अपडेशन हेतु वर्तमान में कार्टो सेट उपग्रहीय मानचित्र, जी0पी0एस0 आदि का प्रयोग करते हुए त्वरित गति से नवीनतम मानचित्रों के अपडेशन की तरफ अग्रसर है ।

विभाग देश की सीमाओं को नवीनतम तकनीकों द्वारा सुरक्षित एवं संरक्षित करने में अग्रसर है हमारी सेनायें अपनी रणनीति इन्हीं मानचित्रों पर बनाती है । विभाग प्रतिदिन बन रही अन्दरूनी सीमाओं को मानचित्र पर अद्यतन करने में भी अग्रसर है ।

विभाग का प्रशिक्षण केन्द्र, भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद अपने कर्मचारियों के साथ–2 सम्बन्धित अन्य विभाग के लोगों को भी नवीनतम तकनीकी से अपडेट करता रहता है जिससे वे उपयुक्त समय पर प्रगति में कदम से कदम मिला कर चल सकें ।

विभाग देश की भौगोलिक स्वरूप परिवर्तन में तेजी से बदलती रूपरेखा में अग्रणी तौर पर कदम से कदम मिलाकर सभी अन्य विभागों के कार्य को सरल बनाने के प्रयास में अग्रसर है जिसके अंतर्गत भारतीय रेल, राष्ट्रीय राजमार्ग, बड़े–2 बाँध निर्माण, पुल, सिंचाई (नहर) एवं वर्तमान में स्मार्ट सिटी योजना में अग्रणी भूमिका में तत्पर है ।

गीता–सार

''एक लड़की अपनी सारी पढ़ाई और जीवन के लगभग सर्वोत्तम 25 वर्ष एक आदमी को पाने की तैयारी में गारत कर देती है ।''

''जन्म ही जीवन का आरम्भ नहीं है न मृत्यु ही इसका अन्त है । जन्म और मृत्यु तो बस जीवन के एक अध्याय का अर्थ और अन्त है ।''

''शरीर में आत्मा है तो शरीर में चेतनता है । आत्मा निकल जाने पर शरीर जड़ है जिस– प्रकार नदी पार करके मनुष्य नाव छोड़ देता है, स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर स्वार्थी व्यक्ति उपकारी को छोड़ देता है, उसी प्रकार मृत्यु हो जाने पर आत्मा भी शरीर को छोड़ देती है ।''

करिअवा

प्रदीप कुमार आर्य
अधिकारी सर्वेक्षक,

मध्य प्रदेश के चार–पाँच जिलों में कन्ट्रोल स्थापित करने का कार्य मिला हुआ था, जिसमें बैतुल, सागर, नरसिंहपुर, छिन्दवाड़ा, सिवनी एवं आंशिक रूप से जबलपुर जिला था। सर्वेक्षकों में मैं कनिष्ठतम था, इस कारण कैम्प मुख्यालय स्थापित करने के लिए मुझे ही ट्रक द्वारा नरसिंहपुर के लिए प्रस्थान करना पड़ा। साथ में मेरा कैम्प अर्दली और सर्वेक्षण दल के अन्य सदस्य भी थे। दो दिन की यात्रा के बाद हमारा ट्रक नरसिंह पुर पहुँचा। वहॉ एक बाईपास मार्ग का निर्माण हो रहा था, उस सड़क के दोनो तरफ चने के खेत थे, लगभग 4 किमी चलने के बाद एक खाली खेत मिला, जहाँ पर पानी का नलकूप लगा था। वहां पूछताछ के बाद मैंने कैम्प मुख्यालय स्थापित कर दिया। दो दिनों में सभी टेंट व्यवस्थित ढंग से लग गये। उसके बाद पूरे कैम्प के लिए किरोसीन की व्यवस्था कर दी गई। देहरादून में कैम्पिंग प्लेस की सूचना देने के बाद पता चला कि टीम के बाकी सदस्य लगभग एक सप्ताह बाद ही आ पाएगें। अब एक सप्ताह तक क्या किया जाए इस विषय पर अपने साथी सर्वेक्षक के साथ विचार करने लगा, हमारे पास फील्ड कार्य योजना का चार्ट था, उसमें 10 जी0टी0 स्टेशन थे। हम दोनों ने आपस में निर्णय लिया कि चलो जी0टी0 स्टेशन के वीक्षण का कार्य ही पूर्ण कर लेते है। वीक्षण करते करते 7–8 दिन बीत चुके थे, उसके बाद कैम्प मुख्यालय वापस आये तो टीम के अन्य सदस्य पहुॅच चुके थे।

कैम्प मुख्यालय वापस आने पर पता चला कि 'नये शिविर अधिकारी के रूप में आर0 एस0 नेगी जी आये हैं। फोटो यूनिट से अधिकारी सर्वेक्षक पद पर पदोन्नति के पश्चात हाल में ही उनकी नियुक्ति जी0एंडआर0बी0 हुआ है। जब हम लोग कैम्प पहुँचे वे कैम्प मे नहीं थे, अन्य कैम्प के साथियों ने बताया कि वे कैम्प अर्दली ढूँढने गये है। हम लोग अपने टेंट में सामान रखकर बोरवेल पर नहाने चले गये, नहाने के बाद वापस आया तो देखा कि नेगी जी आ गये है । थोड़ी देर के बाद मै उनसे मिलने गया, शिष्टाचार की औपचारिकताएँ पूर्ण करने बाद बातचीत के दौरान उन्होने बताया कि जैसे ही उन्होने नया दफ्तर ज्वाइन किया प्रभारी अधिकारी ने फील्ड के लिए पूछा और उन्होने तुरन्त हामी भर दी और इस तरह से वे फील्ड आ गए। नेगी जी का कद छोटा, चेहरा गोरा, चमकता हुआ तथा सर गंजा था। चेहरे पर हल्की सी मुस्कान लिए बात करते थे। उन्होने बताया कि कैम्प की व्यवस्था तो बहुत ही अच्छी है लेकिन एक समस्या है कि उनके लिए कैम्प अर्दली का इन्तजाम नहीं हो पा रहा है। उन्होने कहा कि परसों एक कैम्प अर्दली मिला भी था सो

थोड़ी देर के बाद भाग गया। फिर सुबह आया तो कह रहा था कि फाइल ले जाने– ले आने का काम तो वह कर देगा पर खाना नहीं बनाएगा। नेगी जी ने यह जिम्मेदारी हमें सौंपते हुए कहा– ' तुम लोग बहुत स्मार्ट हो, जाओ हमारे लिए कैम्प अर्दली ढूँढ कर लाओ' मैंने कहा– 'ठीक है सर कल हम आपके लिए कैम्प अर्दली ढूँढेगे'

फिर क्या, हम लोग जोर–शोर से शिविर अधिकारी के लिए कैम्प अर्दली के तलाश में जुट गये। आस–पास के होटलों एवं ढाबों में हमने पता किया, पर काम करने वाला कोई लड़का नहीं मिला। ढूँढते–ढूँढते तीन–चार घण्टे बीत गये। तभी एक आदमी आया और पूछा –

'साहब, खाना बनाने वाला चाहिए ?'

हम खुश हुए कि चलो हमारा प्रयास सार्थक हो गया। उस आदमी से मैंने पूछा–

'तुम काम करोगे ? तो चलो'

उसने कहा– 'अरे साहब, मैं नहीं काम करूँगा, मेरी बाई काम करेगी'

मैंने पूछा–'तुम्हारी औरत ?' उसने हामी भरी।

मैं कहा– 'हम लोग एक जगह नहीं रहते घूम–घूम कर काम करते है, यहाँ से नागपुर, जबलपुर, भोपाल तक जाकर काम करना पड़ता है' ।

उसने कहा–'परवाह नहीं आज लेकर जाओ',

मैंने कहा ' हमें बाई नहीं चाहिए, हम लोग इस काम के लिए दो हजार रूपये देंगे और साथ मे खाना भी खिलायेंगे।' उसने खुश होकर कहा 'साहब, तब तो तीन–चार बाईयाँ मिल जायेगीं।'

मैने स्पष्ट कर दिया कि हमें बाई नहीं चाहिए। तब वह बोला–

'ठीक है साहब, चाय तो पिलाओ।'

थोड़ी दूर पर चाय की दुकान था, वहाँ पर हमने चाय पी, चाय पीने के बाद वह चला गया, वहीं एक दूसरा आदमी खड़ा था। वह बोला–

' इसके चक्कर में कहाँ पड़े है ? ये तो पियक्कड़ है। लोगो के पीछे पड़ कर पाँच–दस रूपये मांग लेता है और इसका पीने का काम चल जाता है। आप काम करने वाले लड़के चाहते तो नदी पार गाँव दिख रहा है, वहाँ मिल जायेंगे।'

उसने इशारा कर के बता दिया। दूरी होने के कारण हमने अपने साथी से कहा– 'छोड़ो कल कैम्प अर्दली के लिए आदमी ढूँढेंगे'

आज का पूरा प्रयास निरर्थक चला गया था। हम बिना कैम्प अर्दली के वापस कैम्प आ गये।

शिविर अधिकारी नेगी कनात में बैठे थे।

मैंने बताया– 'हम लोगों का टोटल एटेम्प्ट फेल हो गया। लेकिन कैम्प अर्दली को ढूँढने का प्रयास अनवरत चलता रहेगा'।

अपने कैम्प अर्दलियों से वहीं खाना लेकर आने को कहा। हम लोग उसी कनात में खाना खाने लगे थे। साथ में बातचीत भी चल रही थी। बातों–बातों में नेगी जी ने बताया कि उनकी एक पुत्री और एक पुत्र है। पुत्री की उन्होने शादी कर दी थी। परन्तु पत्नी का असामयिक निधन हो चुका था। इसके साथ–साथ अपने जीवन के बहुत सारे दर्द का भी उन्होने बयान किया था। इतनी विपदाओं के बावजूद उनके चेहरे पर लेश मात्र शिकन नहीं थी। उनकी आत्मीयतापूर्ण व्यवहार से हम इतना प्रभावित हुए कि, मन ही मन में हमने ठान ली कि नेगी जी के लिए युद्धस्तर पर कैम्प अर्दली की तलाश की जाएगी। अगले दिन सुबह नित्य क्रिया एवं चाय पीने के बाद ही मैं सामने वाले गाँव की तरफ चल दिया। मेरे साथ मेरा साथी सर्वेक्षक भी था। वह बहुत बातूनी था। बात बात में बिना वज़ह अपशब्द भी इस्तेमाल किया करता था। रास्ते भर बोलता रहा कि ' इनके लिए टेंट लगाओ, तेल खरीदो, कैम्प अर्दली भी ढूँढों और सा..... लोगो के ..... ।' मैं उसकी बातो का विरोध नही करता था। चुपचाप उसकी बकवास सुनता हुआ नदी तक पहुच गया, नदी शायद बरसाती थी और उस वक्त उसमें शहर का गन्दा पानी बह कर आ रहा था। कई लोग उस नदी को पार कर गाँव जा रहे थे। मैने एक गाँव वाले से पूछा–

'गाँव में जाने का पुल नहीं है'

उसने जबाब दिया 'उत्थे है न'

उत्थे का मतलब था, बहुत लम्बा चक्कर। बहुत सोच विचार करने के बाद हमने अपने जूते निकाले और गंदे नाले को पार कर गाँव में पहुँच गये। गाँव बहुत ही साफ सुथरा था। सारे घर मिट्टी एवं खपरैल या फूस के थे। सभी घरों के बाहर गोबर की पुताई हुई थी। इस पुताई के कारण धूल नहीं दिख रही थी। आस पास की झोपड़ी में तहकीकात करने पर पता चला था कि उस समय सारे लड़के काम पर चले गये थे। मुझे लगा कि कोई नहीं मिल सकता। तभी एक छोटे लड़के ने हमसे कहा

– 'साहब करिअवा के पास कछु काम नहीं हाओ नदियां में मछली मारे गयो हव'

उसकी बातों से हमें आभास हो गया कि कोई है जो हमारे काम आ सकता है।

मैनें कहा– 'चलो मेरे साथ, करिअवा के पास।'

वह तुरन्त चलने को तैयार हो गया। नदी के किनारे पहुँच कर हमने एक व्यक्ति को मात्र लँगोट धारण किए देखा। कृशकाय शरीर में सभी हड्डिया दिख रही थीं। इसलिए सही उम्र का अंदाजा नहीं हो पा रहा था। मेरे साथ आया छोटा लड़का बोला–

'इस गाँव से निकाल दिहल हईल अब कुछु काम नाहि मिलोगो'।

उस लड़के को मैंने अपने जेब से दो चाकलेट दिये तो उसे लेकर भागता हुआ गांव के तरफ चला गया।मैंने अपने साथी से कहा कि ये तो देखने में इतना गंदा लग रहा है मुझे डर है कि हमारे नेगी जी इसे कैम्प अर्दली के रूप मे स्वीकार भी करेंगे या नही। स्वंय मुझे अगर इसे कैम्प अर्दली रखना होता तो मैं नहीं रखता। मेरा साथी बोला–

'इसको पहले कैम्प ले चलो जो होगा देखा जायेगा',

मैं उसकी ओर देखकर पूछा

'काम करोगे ?'

वह तब खड़ा हुआ। खड़ा होने पर ऐसा लग रहा था कि कहीं तेज हवा का झोंका उसे गिरा न दे। अपने पीले भूरे दाँत निपोरते हुए वह बोला

'हॉओं।' मैंने कहा ' चलो साथ'

वह हमारे साथ साथ चलने लगा। उसे साथ लेकर जाते समय रास्ते भर मन में उथल पुथल चल रहा था। एक घबड़ाहट भी थी कि कहीं हमारा मजाक न बन जाए। इसी उथल पुथल में गाँव से कैम्प कब पहुँच गया पता ही नहीं चला।

कैम्प पहुँचने पर सभी कैम्प अर्दली, खलासी एवं सर्वेक्षक उस अजूबे को देखने लगे। सभी के चेहरों के भाव से पता चल रहा था कि मानों वे कह रहें हों कि 'अब देख तेरा क्या अंजाम होने वाला है। मेरी हालत ये थी कि मैं अत्यन्त लज्जित महसूस कर रहा था जैसे कि मैंने कोई गुनाह किया हो। मैं पूरी तरह से नर्वस था। एक खलासी ने नेगी जी को सूचित किया कि मैं एक आदमी लेकर आया हूँ। नेगी जी के अपने तम्बू से बाहर आने तक मेरे दिल की धड़कन बढ़ती जा रही थी। उन्होने आते ही उस आदमी को सर से पाँव तक निहारा। पर आँखों में कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया नहीं झलक रही थी। उन्होंने उस कैम्प अर्दली से पूछा

'क्या नाम है'

उसने सकपका कर जवाब था 'करिअवा' ।

नेगी जी ने फिर पूछा – 'तुम्हारे पिता जी का क्या नाम है ?'

उसने जवाब दिया ' नाहिं हव'

नेगी जी मेरी तरफ मुख करके बोले 'चलो, इसको काम पर रख लेते हैं।' उनकी बातें सुनकर, मेरी सांसें जो रूकी थी फिर से चलने लगी। मुझमें जीवन का संचार होने लगा। नेगी जी उसे तुरन्त बाजार गए। बाजार से उसके लिए चप्पल, एक दो कपड़े, टूथपेस्ट, ब्रश एवं उसकी जरूरत के अन्य सामान भी खरीद कर उसे सौंप दी। उन्होंने सारे कैम्प अर्दलियों को बुलाया और उन्हें हिदायत दी–

'इसे तुम सब मिलकर सारे काम सिखाओं'

फिर क्या, कोई उसे टूथ ब्रश करना सिखाने लगा, कोई उसे नहलाने ले गया, कोई उसको खाना बनाना सिखाने लगा। एक दिन बाद मैंने उसका मुआयना किया और पूछा

'हो क्या हाल है'

वह अपने तम्बू से बाहर निकलकर आया और मेरा पैर छूने लगा। मैं अचकचा कर कहा ' अरे यह क्या कर रहे हों ?'

वह झक्कास सफेद बनियान और नेकर पहने हुए था। दाँत थोड़े सफेद हो गये थे। उसकी आँखों में मेरे प्रति अपार श्रद्धा दिख रहा था, जैसे मैने उस पर कोई अहसान किया हो। इसके बाद अपने–अपने कार्यक्रम के अनुसार हम लोग काम पर चले गये। एक महीने बाद कैम्प मुख्यालय वापस आये। कैम्प मुख्यालय में एक रात रूकने के बाद जाना था। अचानक वह दौड़ता हुआ आया और मेरे पैर छूने लगा। मैंने अपने पैर पीछे कर लिए। उसके धँसे हुए गाल अब थोडे. भरे लग रहे थे। बदन में थोड़ी कसावट आ गई थी। मैं शिविर अधिकारी के तम्बू में चला गया। थोड़ी देर में वह चाय लेकर आ गया। नेगी जी उसको देखते हुए बोले –

' यह कैम्प अर्दली बड़ी तत्परता से सारे काम कर रहा है और बहुत अच्छा काम करता है। जब कैम्प समाप्त हो जायेगा तो मैं इसे अपने साथ ले जाऊँगा। मैं भी अकेला हूँ और यह भी अकेला। दोनों एक दूसरे की सेवा करके जीवन गुजारेंगे । मैंने मन ही मन सोचा, चलो इनको भी जीने का सहारा मिल गया और कैम्प अर्दली को जीने की राह मिल गई ।

तीन–चार महीने बीत गये। आम तौर पर शिविर अधिकारी ही अन्य कैम्प स्क्वाड के पास आते थे। एक दिन नेगी जी ने कहा– 'आर्या, कैम्प तो समाप्त होने वाला है। मैंने एक भी प्रेक्षण नहीं किया। मैं यह भी नहीं जानता कि यह इन्स्ट्रूमेंट कैसे काम करता है।'

इस तरह से उन्होंने फील्ड में काम करने का निश्चय किया। मैने उन्हे यंत्रों के बारे में बताया। नेगी जी ने आखिरी स्टेशन पर प्रेक्षण करने का निश्चय किया था। आधार शिविर को उसी स्टेशन के पास स्थानान्तरित कर दिया गया। अपना प्रेक्षण पूरा करने के पश्चात मैं आधार शिविर पहुँचा। नेगी जी मुझे देखकर बहुत प्रसन्न हुए और बोले–

' अब मै यहाँ प्रेक्षण का कार्य करूँगा और तुम मेरी जगह कैम्प मुख्यालय में बैठे।'

थोड़ी देर में उनका वही कैम्प अर्दली आ गया। मैं काफी दिनों के बाद उसे देख रहा था। उसके कृशकाय शरीर में खिंचाव आ गया था शारीरिक उभार दिख रहा था जैसे सूखे पेड़ में अचानक पत्तियाँ आ गई हों। उसने पहले की तरह मेरा सम्मान किया और खुशी–खुशी बताया कि इस गाँव में उसकी मौसी रहती है, जिन्होंने उसकी शादी तय कर दी थी। उसने यह भी बताया कि कैम्प का कार्य खत्म होने के बाद वह शादी करने जाएगा। मैंने नेगी साहब को छेड़ा–

'अब आप इसे देहरादून कैसे ले जायेगें? यह तो शादी कर रहा है'

इस पर उन्होंने कहा–

'इसके काफी पैसे मेरे पास जमा हो गये हैं। मैंने उसके लिए गुमटी (लकड़ी का दुकान) बनाने का आर्डर दे दिया है। उसके पैसे एवं कुछ अपने पैसे मिलाकर नरसिंहपुर में उसके लिए दुकान खुलवा देंगे'

नेगी जी की सोच सुनकर मै आत्मविभोर हो गया। कितना कल्याणकारी भाव है इनका, हम लोग इस तरह सोचते ही नहीं । उनके प्रति मेरा सम्मान और बढ गया। कुछ दिनों के बाद कैम्प समाप्त हो गया। सभी ट्रेन द्वारा जबलपुर से देहरादून चले गये और हम पहले की तरह ट्रक से देहरादून को प्रस्थान कर गये ।

इस सर्वेक्षण कार्य के चार–पाँच साल बाद जबलपुर में भूकम्प आया। उस क्षेत्र मे ज्यो–फिजिकल अध्ययन के लिए मैं एक बार फिर नरसिंहपुर पहुँचा। मैंने उसी जगह कैम्प लगाने को सोचा, लेकिन वहाँ एक मल्टी स्टोरी बिल्डिंग बन रहा था। उससे थोड़ी दूर आगे एक चौराहे पर कैम्प लगाया। एक दिन होण्डा मोटर साइकिल से एक आदमी कैम्प में आया। मैं उसे ठीक तरह से पहचान नहीं पाया था। उसने सफेद साफ कुर्ता पैजामा पहना था। मुझे देखते हुए उसने मेरा पैर छुआ तो मुझे याद आया कि यह तो करिअवा है। आश्चर्य हुआ कि उसमे इतना बदलाव आ गया था। उसने नेगी जी के बारे में पूछा। मैंने

बताया कि वह तो रिटायर हो गये है। फिर उसने बताया कि नरसिंहपुर में उसका घर भी है और दुकान भी। उसने अपने घर भी बुलाया अपने साथ आये व्यक्ति का उसने परिचय दिया कि वह उसका साला था, जो नरसिंहपुर कोर्ट में वकील है। फिर मैं उसे तम्बू के अन्दर ले गया और अपने कैम्प अर्दली को चाय लाने को बोला। मैंने उससे पूछा कि क्या उसने मौसी के गाँव की लड़की से ही शादी की, तो उसने मना कर दिया। उसने नरसिंहपुर शहर की लड़की से शादी की थी जो कि किसी स्कूल में पढ़ाती थी। उसने बातों ही बातों में बताया कि वह अपने गांव पंचायत का चुनाव लड़ने वाला है । वह काफी देर तक अपने बारे में बताता रहा, मैं आत्ममुग्ध होकर सुनता रहा। जैसे आसमान की ऊँचाईयाँ उसे मिल गई हो, अन्यथा उसका जर्जर शरीर शायद मृत्युशैया पर पड़ा होता या गमन कर चुका होता।

हवा हवाई

हिमांशु दीक्षित, इंजीनियरिंग छात्र
पुत्र श्री राजेश कुमार दीक्षित
अधिकारी सर्वेक्षक

चौबीस घंटे बाद जब बिजली आई,
मैने कहा–क्या हाल मैडम हवा–हवाई ।
वो बोली – मौज में हूँ ।
आजकल कन्नौज में हूँ ,

मैनें पूछा – और इटावा का क्या हाल है
वो सिर पर पल्लू ओढ़ते हुये बोली – वहीं तो मेरी ससुराल है ,
मैने कहा तो फिर लखनऊ वाले क्यों ऐंठें हैं ।
वो शरमाते हुये बोली –
वहीं तो हमारे वो खुद ही बैठे हैं ।

मैने कहा – तो फिर हमें क्यों रूलाती हो,
वो बोली – तो इसमें हमारा क्या गुनाह है,
आप ही ने तो उन्हें चुना है ।

-x-x-x-x-x-

एक रात

धर्मराज यादव
सर्वेक्षण सहायक

वर्ष 1987–88 में फील्ड कार्य के समय की घटना है उस समय करीब रात के लगभग 11 बजे थे । सर्दियों का मौसम था । पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के बागडोगरा कन्टूनमेन्ट में कन्टूनमेन्ट मैप बनाने के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा कैम्प हेड क्वार्टर लगाया गया था । यह स्थान सुकना के जंगलों से सटा हुआ है ये मुख्यतः बेतों एव सांल का ही जंगल है यहीं से दार्जिलिंग के पहाड़ियों की शुरूआत होती है इस जंगल में बहुतायत संख्या में जंगली जानवर हाथी, भालू, बाघ आदि रहते है। पहाड़ो की गोद में यह स्थान बहुत ही रमणीय है। पहाड़ों पर लगे चाय के बागान अत्यधिक सुशोभित लगते है इस स्थान से कंचनजंघा की पहाड़ियां दिखायी देती है। सूर्योदय के समय सूर्य की किरणें जब बर्फ पर पड़ती है तो ऐसा लगता है जैसे पहाड़ों पर सोना बिखेरा गया हो। जंगली जानवरों से बचाव के लिए विद्युत के नंगे तारो से कैम्प की फेंसिंग की गयी थी रात को नंगे तारो में विद्युत प्रवाहित कर दी जाती थी जिससे कि जंगली जानवर कैम्प में न आ सके।

सभी लोगों का तम्बू एक ही स्थान पर लगाया गया था जिसमें करीब 35 से 40 लोगों का स्टाफ रात में एक ही स्थान पर रहता था। 15 जनवरी वर्ष 1988 की रात आठ बजे की घटना है कैम्प के पास में स्थित एक छोटा सा गाँव था जिसमें ज्यादातर लोग वही रहते थे जो कैन्ट में ही काम करते थे ।

उस रात गाँव से जोर जोर की आवाजें आयीं कि हाथी आ गये आवाज सुनकर लोग सजग हो गये। कैम्प में कार्यरत कुछ सी0के0 (कैम्प अर्दली) जंगली हाथियों को देखने गाँव की ओर चले गये हाथियों का झुंड गाँव में उत्पात मचाते थे और केला, कटहल आदि तोड़कर खा रहे थे, कैम्प के किसी व्यक्ति ने कटहल तोड़कर हाथियों को मार दिया फिर क्या बात थी जैसे उन हाथियों ने आदमियों को पहचान लिया हो और वहाँ से हाथी चले गये रात करीब 11 बजे हाथियों का झुंड कैम्प पहुँच गया रात्रि डियूटी वाले ने जोर से चिल्लाया भागो हाथी आ गये है। सब लोग भागकर पास की मिलिट्री कैंटीन में चले गये और वही से नजारा देख रहे थे परन्तु वायर फैन्स में बिजली होने के कारण हाथी अन्दर नही आ रहे थे उन हाथियों में से एक हाथी ने पेड़ की डाल तोडकर वायर फैन्स पर फेंक दी और बिजली के तार टूट गये और सब हाथी कैम्प क्षेत्र में प्रवेश कर गये फिर क्या कहना था ऑफिस तथा सी0ओ0 के लिये लगे तम्बू को छुआ भी नही बाकी करीब 20–25 तम्बुओं को एक एक करके सुँड से पकडकर फेकनें लगे, उसमें रखे खाने के सामान को खाते और बाकी सामानों को पैरों से कुचल दे रहे थे ।

इस तरह करते रहे और अन्त में एक तम्बू जो कि एक सी0के0 का तम्बू था जिसमें वो सो रहा था इस तम्बू को जैसे ही हाथी ने खींचा वह व्यक्ति तम्बू के पीछे से निकलकर भागा और हाथियों ने उसका पीछा किया लेकिन अंधेरा होने के कारण हाथी उस तक पहुँच नही पाये और वह भाग गया । मिलिट्री वालों ने बहुत गोले पटाके दागे परन्तु हाथी नही भागे । करीब एक–डेढ घंटे बाद हाथियों का झुंड अपने आप जंगल में चला गया कैम्प के सभी लोग अपने अपने तम्बू के पास आये और किसी तरह रात बिताया बाद में पता चला कि हाथियों ने जिस सी0के0 का पीछा किया था उसी ने हाथियों पर कटहल से प्रहार किया था । अगले ही दिन निदेशक का आगमन था किसी तरह पुनः तम्बुओं को लगाया गया और उस रात को भी हाथियों ने बदला लेने के लिए फिर से धावा किया परन्तु उस रात हाथियों के आने की जानकारी पहले से हो गयी । कैम्प पहुँचने से पहले ही रास्ते में गोले–पटाखे दागने शुरू कर दिये गये जिससे सभी हाथी जंगल में वापस लौट गये उसके बाद कैम्प में दोबारा नही आयें ।

एक बच्चे की अनमोल गाथा

दशरथ ठाकुर
अधिकारी सर्वेक्षक(सेवानिवृत)

इस साल मेरा सात वर्षीय बेटा
दूसरी कक्षा में प्रवेश पा गया.....
क्लास में हमेशा से अव्वल
आता रहा है !
पिछले दिनों तनख्वाह मिली तो
मैं उसे नयी स्कूल ड्रेस और
जूते दिलवाने के लिए बाजार ले गया !
बेटे ने जूते लेने से ये कह कर
मना कर दिया की पूराने जूतों
को बस थोड़ी–सी मरम्मत की
जरुरत है वो अभी इस साल
काम दे सकते हैं !

अपने जूतों की बजाये उसने
मुझे अपने दादा की कमजोर हो
चुकी नजर के लिए नया चश्मा

बनवाने को कहा !
मैंने सोचा बेटा अपने दादा से
शायद बहुत प्यार करता है
इसलिए अपने जूतों की बजाय
उनके चश्मे को ज्यादा जरुरी
समझ रहा है !
खैर मैंने कुछ कहना जरुरी
नहीं समझा और उसे लेकर
ड्रेस की दुकान पर पहुंचा.....
दुकानदार ने बेटे के साइज
की सफेद शर्ट निकाली.....
डाल कर देखने पर शर्ट एक दम
फिट थी.....
फिर भी बेटे ने थोड़ी लम्बी शर्ट
दिखाने को कहा ! ! ! ! !

मैंने बेटे से कहा
बेटा ये शर्ट तुम्हें बिल्कुल सही है
तो फिर और लम्बी क्यों ?
बेटे ने कहा : पिता जी मुझे शर्ट
निकर के अंदर ही डालनी होती है
इसलिए थोड़ी लम्बी भी होगी तो
कोई फर्क नहीं पड़ेगा.....
लेकिन यही शर्ट मुझे अगली
क्लास में भी काम आ जाएगी.....
पिछली वाली शर्ट भी अभी
नयी जैसी ही पड़ी है लेकिन
छोटी होने की वजह से मैं उसे
पहन नहीं पा रहा !
मैं खामोश रहा ! !

घर आते वक्त मैंने बेटे से पूछा :
तुम्हें ये सब बातें कौन सिखाता है
बेटा ?
बेटे ने कहाः
पिता जी मैं अक्सर देखता था
कि कभी माँ अपनी साड़ी छोड़कर
तो कभी आप अपने जूतों को
छोड़कर हमेशा मेरी किताबों

और कपड़ों पर पैसे खर्च कर
दिया करते हैं!

गली–मोहल्ले में सब लोग कहते
हैं कि आप बहुत ईमानदार
आदमी हैं और हमारे साथ वाले
राजू के पापा को सब लोग
चोर,कुत्ता, बेईमान, रिश्वतखोर
और जाने क्या क्या कहते हैं,
जबकि आप दोनों एक ही है,
आँफिस में काम करते हैं.....
जब सब लोग आपकी तारीफ
करते हैं तो मुझे बड़ा अच्छा
लगता है.....
मम्मी और दादा जी भी आपकी
तारीफ करते हैं !
पिता जी मैं चाहता हूँ कि मुझे
कभी जीवन में नए कपड़े,
नए जूते मिले या न मिले
लेकिन कोई आपको
चोर, बे–ईमान, रिश्वतखोर या
कुत्ता न कहे ! ! ! ! ! ! !

मैं आपकी ताकत बनना चाहता हूँ
पिता जी,
आपकी कमजोरी नहीं !
बेटे की बात सुनकर मैं निरुतर था !
आज पहली बार मुझे
मेरी ईमानदारी का इनाम मिला था ! !
आज बहुत दिनों बाद आँखों में
खुशी, गर्व और सम्मान के
आंसू थे.....

ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम

शशीकान्त
अधिकारी सर्वेक्षक

''आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते,
पर अपनी आदते तो बदल सकते हैं,
और बदली हुई आदतें,
आपका भविष्य बदल देंगी''

अबुल पाकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम आजाद अथवा डॉक्टर ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम आजाद का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 में एक मध्यमवर्गीय तमिल परिवार में द्वीप–नगर रामेश्वरम में हुआ था। जिन्हें मिसाइल मैन और ''जनता के राष्ट्रपति'' के नाम से जाना जाता है, वो भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थे । इनकी माता का नाम आशियम्मा एक गृहणी थी व एक विशिष्ट परिवार से थीं । उनके पूर्वजो में से एक को अंग्रजों ने बहादुर' की उपाधि प्रदान की थी। इनके पिता जैनुलाब्दीन न तो ज्यादा पढ़े लिखे थे, न ही पैसे वाले थे । इनके पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे । अब्दुल कलाम के जीवन पर इनके पिता का बहुत प्रभाव रहा, उनकी लगन और उनके दिए संस्कार अब्दुल कलाम के बहुत काम आए ।

अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। परिवार की सदस्य संख्या का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वह स्वयं पाँच भाई व पाँच बहन थे और घर में तीन परिवार रहा करते थे। अब्दुल कलाम ने अपनी आरंभिक शिक्षा जारी रखने के लिए अखबार वितरित करने का कार्य भी किया था । पाँच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम के पंचायत प्राथमिक विद्यालय में उनका दीक्षा– संस्कार हुआ था। उनके शिक्षक सोलोमन ने उनसे कहा था कि जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था, अपेक्षा इन तीन शक्तियों को भलीभाँति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए ।

कलाम बचपन से ही बहुत बुद्धिमान और मेहनती विद्यार्थी थे, वो अपना अधिक से अधिक समय अपनी पढ़ाई में लगाते थे तथा उनकी रूचि शुरूआत से ही गणित के प्रति अधिक रही थी । उन्होंने अपनी स्कूल की पढ़ाई रामनाथपुरम मैट्रिकुलेशन स्कूल से पूरी की और उसके बाद तिरूचनापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ से उन्होंने सन् 1954 में भौतिक विज्ञान में स्नातक किया । उसके बाद वर्ष 1955 में वो मद्रास चले गए जहाँ से उन्होंने एयरोस्पेस इंजिनियरिंग की शिक्षा ग्रहण की।

वर्ष 1960 में कलाम ने मद्रास इस्टीयूट ऑफ टेक्नोलॉजी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की । मद्रास इस्टीट्यूट आँफ टेक्नालॉजी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद कलाम ने रक्षा अनुसंघान और विकास संगठन (डीआरडीओ) में वैज्ञानिक के तौर पर भर्ती हुए । कलाम ने अपने कैरियर की शुरूआत भारतीय सेना के लिए एक छोटे हेलीकाप्टर का डिजाईन बनाकर किया । कलाम, पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा गठित 'इंडियन नेशनल कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च' के सदस्य भी थे। उन्होंने प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक विक्रम साराभाई के साथ भी कार्य किया था ।

वर्ष 1969 में वो भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में भारत के सैटेलाइट लांच वैहिकल परियोजना के निदेशक के तौर पर नियुक्त किए गये थे । इसी परियोजना के परिणाम स्वरूप भारत का प्रथम उपग्रह 'रोहिणी' पृथ्वी की कक्षा में वर्ष 1980 में स्थापित किया गया, उन्हें इस कार्य को करने के बाद ऐसा लगा कि वो वही कार्य कर रहे हैं जिसमें उनका मन लगता है। 1963–64 के दौरान उन्होंने अमेरिका के अंतरिक्ष संगठन नासा की भी यात्रा की । परमाणु वैज्ञानिक राजा रमन्ना, जिनके देख–रेख में भारत ने पहला परमाणु परीक्षण किया, उन्हें वर्ष 1974 में पोखरण में परमाणु परीक्षण देखने के लिए बुलाया था। सत्तर और अस्सी के दशक में अपने कार्यो और सफलताओं से डॉ कलाम को देश के सबसे बड़े वैज्ञानिकों में गिना जाने लगा । उनकी इस प्रसिद्धि को देखते हुए इंदिरा गॉधी ने अपने कैबिनेट के मंजूरी के बिना ही उन्हें कुछ गुप्त परियोजनाओं पर कार्य करने की अनुमति दी थी। भारत सरकार ने महत्वाकांक्षी 'इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम' का प्रारंभ डॉ कलाम के देख–रेख में किया। इस परियोजना ने देश को अग्नि और पृथ्वी जैसी मिसाइलें दी हैं ।

जुलाई, 1992 से लेकर दिसम्बर, 1999 तक डॉ कलाम प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार और रक्षा अनुसन्धान और डी0आर0डी0ओ0 के सचिव थे। इसी बीच उन्हें मीडिया करवरेज ने देश का सबसे बड़ा परमाणु वैज्ञानिक बना दिया । वर्ष 1998 में डॉ कलाम ने चिकित्सक सोमा राजू के साथ मिलकर एक कम कीमत का 'कोरोनरी स्टेंट' का विकास किया। डॉ कलाम की उपलब्धियों और प्रसिद्धि के मद्देनजर एन0डी0ए0 की गठबंधन सरकार ने उन्हें वर्ष 2002 में राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया। वो 25 जुलाई, 2002 को भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति के रूप में भारत की जनता से रूबरू हुये ।

डॉ कलाम देश के ऐसे तीसरे राष्ट्रपति थे जिन्हें राष्ट्रपति बनने से पहले ही भारत रत्न से नवाजा जा चुका था। उनके कार्यकाल के दौरान उन्हें 'जनता का राष्ट्रपति' कहा गया । राष्ट्रपति पद से सेवामुक्त होने के बाद डॉ कलाम शिक्षण, लेखन, मार्गदर्शन और शोध जैसे कार्यो में व्यस्त रहे और भारतीय प्रबंधन संस्थान, शिलांग, भारतीय प्रबंधन संस्थान , अहमदाबाद, इंदौर जैसे संस्थानों से विजिटिंग प्रोफेसर के तौर पर जुडे रहें । वह

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेस साइंस एण्ड टेक्नालॉजी तिरूवन्नतपुरम, के चांसलर, अन्ना यूनिवर्सिटी, चेन्नई में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के प्रोफेसर भी रहें।

कलाम हमेशा से देश के युवाओं और उनके भविष्य को बेहतर बनाने के बारे में बातें करते थें । इसी सबंध में उन्होंने युवाओं के लिए ' व्हाट कैन आई गिव' पहल की शुरूआत की जिसका उद्देश्य भ्रष्टाचार का सफाया है। उनकी युवाओं में इसी लोकप्रियता को देखते हुये उन्हें वर्ष 2003 और वर्ष 2004 में एम0टी0वी0 यूथ आइकॉन ऑफ द इयर आवर्ड से भी मनोनीत किया गया था ।

शिक्षण के अलावा डॉ कलाम ने कई पुस्तकें भी लिखी जिनमें प्रमुख है – इंडिया 2020, विंग्स ऑफ फायर, इग्नाइटेड माइंडस, मिशन इंडिया आदि है। देश और समाज के लिए किये गये उनके कार्यो के लिए उन्हें अनेको पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, लगभग 40 विश्वविद्यालयों ने उन्हें मानद डॉक्टरेट की उपाधि दी । भारत सरकार ने उन्हें 1990 में पद्म विभूषण और 1997 में भारत रत्न से सम्मानित किया । नेशनल स्पेश सोसाइटी ने उन्हें 2013 में वॉन ब्राउन अॅवार्ड से सम्मानित किया ।

27, जुलाई 2015 की शाम अब्दुल कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग में '' रहने योग्य ग्रह'' पर एक व्याखान दे रहे थे जब उन्हें जोरदार '' कार्डियक अटैक'' हुआ और ये बेहोश होकर गिर पड़े और लगभग 6:35 बजे उनकी मृत्यु हो गई । उनकी मृत्यु के बाद तमिलनाडु की सरकार ने उनकी जन्मतिथि 15, अक्टूबर को 'विश्व विद्यार्थी दिवस' घोषित कर दिया गया और ''उत्तर प्रदेश टेक्निकल यूनिर्वसिटी'' का नाम उनके नाम पर '' ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम टेक्निकल यूनिर्वसिटी'' रख दिया गया । व्हीलर ऑइलैड, नेशनल मिसाइल टेस्ट साइट, उड़ीसा को भी अब्दुल कलाम ऑइलैंड सितम्बर 2015 के नाम पर परिवर्तित कर दिया गया ।

उनके पार्थिव शरीर को शिलांग से गुवाहाटी लाया गया । भारत सरकार ने पूर्व राष्ट्रपति के निधन के मौके पर उनके सम्मान के रूप में सात दिवसीय राजकीय शोक की घोषणा की । डॉ कलाम का मानना था कि उनके निधन पर अवकाश की घोषणा न की जाए तथा सभी लोग एक दिन ज्यादा काम करें ।

'' हम केवल तभी याद किये जायेंगे यदि हम हमारी युवा पीढ़ी को एक समृद्ध और सुरक्षित भारत दे सके जो की सांस्कृतिक विरासत के साथ–साथ आर्थिक समृद्धि के परिणाम स्वरूप प्राप्त हो ।''

चुटकले

जयशंकर प्रसाद यादव
सहायक

(1)

डाक्टर – मरीज से.... तुम दिन में कितने सिगरेट पीते हो **?**

मरीज – जी–20

डाक्टर– देखो.... अगर मुझसे इलाज करवाना हो तो तुम्हें सिगरेट से परहेज करना होगा, एक काम करो, एक नियम बना लो, सिर्फ भोजन के बाद ही एक सिगरेट पियोगे । मरीज ने डाक्टर की बात मान कर इलाज शुरू किया । कुछ ही महीने बाद मरीज का स्वास्थ्य एकदम सुधर गया ।

डाक्टर – देखा मेरे बताये गये परहेज से तुम्हारा स्वास्थ्य कितना सुधर गया ।

मरीज – लेकिन डाक्टर साहव दिन में 20 बार भोजन करना भी कोई सरल काम नहीं है ।

(2)

नेताजी – चिल्ला–चिल्ला कर कह रहे थे – हर आदमी को हर चीज मिलनी चाहिए । जो चीज तुम्हें अच्छी लगे ले लो। यदि ठण्ड लगे तो दुकान का सबसे अच्छा सिला कोट उठा लो.....भाषण देने के बाद वे मंच से नीचे उतरे और चिल्लाये अरे मेरी साइकिल कौन उठा ले गया ?

(3)

पत्नी– इतने लेट कैसे ?

पति– वह क्या हो गया ना की 1000 रूपये की नोट गुम हो गयी ।

पत्नी– अच्छा तो क्या उसे ढूंढने में मद्द कर रहे थे ?

पति– नहीं ....मैं उस नोट पे खड़ा था ।

(4)

चिंटू– आराम से बैठा था ।

मींटू– (चिंटू से) कुछ काम करो ।

चिंटू– (मींटू से) मै गर्मियों में काम नहीं करता हूँ ।

मींटू– और सर्दियों में ?

चिंटू– गर्मियां आने का इंतजार ।

(5)

राहगीर– तुम भीख क्यो मांगते हो । यह बुरा काम है ।
भिखारी– क्या आपने भीख मांगी है ?
राहगीर– नहीं ।
भिखारी– यह बताइये कि आपको कैसे मालूम हुआ कि यह बुरा काम है ।

(6)

जज – अच्छा तो इस व्यक्ति ने तुम्हें कैसी गालियां दी ।
नौजवान– हजूर यह सब गालियां सरीफों के सामने बयान करने योग्य नहीं है ।
वकील – अच्छा तो हम सब यहां से चले जाते हैं। तुम जज साहब को अकेले सुना दो।

(7)

फैमली प्लानिंग के डाक्टर ने गांव के लोगों को जमा किया और कहा–भारत में हर तीन मिनट के बाद एक औरत बच्चे को जन्म देती है आप बताइये इस भयानक समस्या पर किस प्रकार नियंत्रण किया जाये ?
भीड़ में से आवाज आई – पहले उस औरत को तलाश करना चाहिए ।

(8)

होटल में एक जोड़ा हनीमून के लिए ठहरा हुआ था ।
पति देव अपनी पत्नी से कह रहे थे – मुझे तुमसे मुहब्बत है ।
तुम मेरे दिल की रोशनी हो , तुम मेरे जान और आत्मा की रोशनी हो ,
तभी पास के कमरे से आवाज आयी रोशनी बंद करो आधी रात हो गयी है ।

(9)

पहला कैदी – तुम जेल में कैसे आये ?
दूसरा– छोटी रस्सी चुराने के अपराध में ।
पहला – लेकिन ऐसा नहीं हो सकता ।
दूसरा– अरे भाई ऐसा ही था, लेकिन रस्सी के सिरे पर भैंस भी बंधी हुयी थी ।

(10)

पत्नी– मैनें तुम्हें बिना देखे शादी की ..... कैन यू विलीव दैट ?
पति– और मेरी हिम्मत तो देखो....मैने तुम्हें देखने बाद भी तुमसे शादी की....??

कामाख्या देवी – एक सिद्ध पीठ

राजेश कुमार दीक्षित
अधिकारी सर्वेक्षक

भारतीय शाक्य पुराणों एवं देवी महिमा सम्बन्धी ग्रन्थों में वर्तमान असम के कामरूप मण्डल को विशेष स्थान माना गया है । वर्तमान समय में कामरूप (कामरूप मेट्रोपोलिटन) एक अलग जिला बन गया है तथा इस जिले में मुख्यालय(गोहाटी) के समीप स्थित कामाख्या रेलवे स्टेशन से करीब दो किलोमीटर की दूरी पर पुनीत कामाख्या देवी सहित अन्य 9 मंदिर और भी हैं जो सभी दस महाविद्यायों के रूप में जाने जाते हैं । कामाख्या पर्वत की संपूर्ण ऊँचाई समुद्रतल से 690 फीट है । इस पहाड़ी के शिखर पर भुवनेश्वरी देवी का मंदिर है तथा उसके निचले भाग में किंचत दुरी पर भव्य कामाख्या मंदिर अवस्थित है जो समुद्र तल से लगभग 525 फीट ऊँचा है । शिवपुराण के अनुसार दक्ष पुत्री सती के प्राण त्याग करने के उपरान्त भगवान शंकर देवाधिदेव महादेव उनके शव को लेकर सारे भारत में घूमें थे । जहाँ–जहाँ उनके अंग गिरे वे 51 स्थान 51 महापीठों (खण्डपीठों) के नाम से ख्यात हैं । मतान्तर से कुछ लोग 26 उप–पीठ भी मानते हैं । कामाख्या पर्वत पर जिन 10 महाविद्याओं के मंदिर हैं उनके नाम इस प्रकार हैं :–

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी ।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या घुमावती तथा
बगला सिद्ध विद्या च मातंगी कमलात्मिका
एता दस महाविघाः सिद्ध विद्याः प्रकीर्तिता ।।

––– चामुण्डा तंग

अर्थात दसमहाविद्याओं में कामाख्या देवी (षोडशी), मांतगी (सरस्वती), कमला (लक्ष्मी), काली, तारा, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, घूमावती और बंगलामूरवी । ये सभी महाविद्याएँ भक्तों के लिए मुक्ति दायिनी कही जाती हैं । उक्त दस महाविद्याओं के मंदिर अलग–अलग बने हुये हैं । शारदीय एवं वासन्तिक नवरात्रों में यहाँ देवी उपासकों की अपार भीड़ एकत्र होती है तथा पूरी पहाड़ी रंग–बिरगें परिधान पहनें नर–नारियों से सज जाती है । असम सरकार की ओर से इस स्थान को सुरम्य बनाने के लिये काफी प्रयास किये गये हैं । नाना प्रकार के हरे–भरे वृक्षों, लताओं एवं पुष्पादपों से आच्छादित यह पुण्य–भूमि सहज ही भावुक भक्तों को अपनी ओर आकृष्ट करने में सक्षम है । कहा जाता है कि इस सुरम्य शक्ति पीठ को कभी दुर्दिन भी देखने पड़े थे, जब बंगाल के किसी नव–धर्मान्तरित यवन (काला पहाड़) में इसे ध्वस्त कर दिया था, जिसकी वजह से सर्वाधिक क्षति कामाख्या–देवी के भव्य मंदिर को पहुँची थी । इस मंदिर का पुनः निर्माण सन् 1955 ई0 शुरू हुआ था, जो 10 वर्षों बाद पूरा हुआ । वर्तमान समय देवी परिसर में स्थित अन्य 9 मंदिर यद्यपि बहुत भव्य नहीं है फिर भी वे अपनी पौराणिक महत्ता के कारण भक्तों को आकर्षित करते हैं ।

प्राप्त सूचना के अनुसार कामाख्या देवी की सेवा में इस समय करीब 1500 ब्राम्हण (पंडित) रहते हैं । कहा जाता है कि इनमें से कुछ के पूर्वज कान्यकुब्ज प्रदेश के करीब 500 वर्ष पूर्व तत्कालीन शासकों द्वारा आमंत्रित किये गये थें । इनमें से कुछ प्राग–ज्योतिषपुर के ही मूल निवासी थे । अब ये सभी वास्तरीया–ब्राम्हणों के नाम से जाने जाते हैं और अधिकांश के निवास स्थान देवी मंदिर के आस पास ही बने हुए हैं ।

कामाख्या देवी का मंदिर शक्ति साधना का केन्द्र है अतः यहाँ समय–समय पर पशु–बलि भी दी जाती है । नवरात्रों के अतिरिक्त यहाँ पर अधिक भीड़ तो नहीं होती फिर भी भक्तों के आने–जाने से काफी चहल–पहल व रौनक रहती है । यात्रियों और भक्तों के प्रति यहां पंडित–पुजारियों का बर्ताव बहुत ही विनम्र और आदर संजित रहता है, फिर भी सावधानी के तौर पर भक्तों को दर्शन एवं पूजन की दक्षिणा पंडित–पुजारियों से पहले ही तय कर लेना सर्वथा उचित है ।

''या देवी सर्वभुतेषु शक्ति रूपेण सस्थितां ।
नमस्तस्यै– नमस्तस्यै–नमस्तस्यै नमो नमः ।।

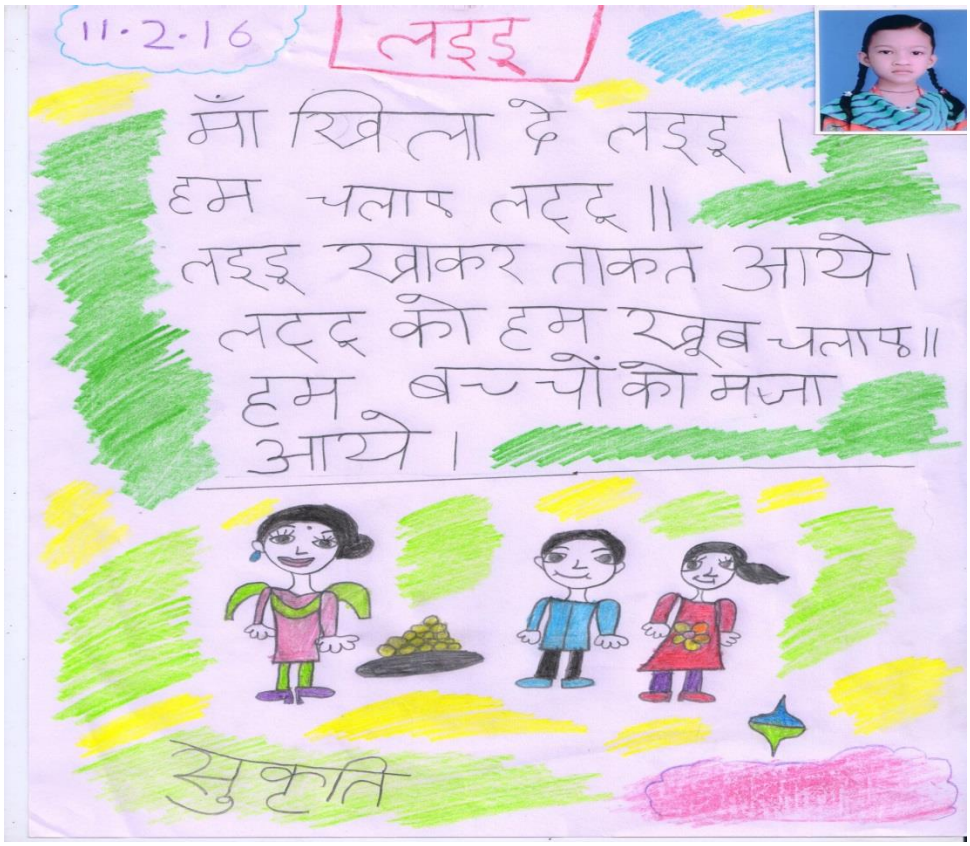

'''राष्ट्र भाषा की परिभाषा'''

शिवपुजारी,
एम0टी0एस0

मेरा नाम है हिन्दी भाषा, मैं हर हिन्दू की अभिलाषा
हिन्दुस्तान मेरी परिभाषा, है ये जान लो।।

मेरी देवनागरी बहना, पहनाती मुझको हर गहना–
इसकी सुन्दरता क्या कहना, ये पहचान लो।।
------'''.....'''.....

1. भोजपुरी अवधी वा मैथिली ब्रज भाषा है गहना–
बुन्देलों ने बुन्देली से, सजा दिया क्या कहना–
-----तब मैं खड़ी हो के मचली-------
तुलसी सूर कबीर रसिक रसखान की मैं जिज्ञासा–
मेरा नाम है हिन्दी भाषा, मै हर हिन्दू की अभिलाषा –
हिन्दुस्तान मेरी परिभाषा है ये जान लो।।

2. फिजी गुआना मारीशस में शान से बोली जाती है–
हिन्दुस्तान में राष्ट्र की भाषा कहने को कहलाती है –
-------घर में ठोकर खाती है ----------
सैंतालिस से सजा रहे सब लेकिन मिली हताशा–
मेरा नाम है हिन्दी भाषा, मैं हर हिन्दू की अभिलाषा–
हिन्दुस्तान मेरी परिभाषा है ये जान लो।।

3. बहु संख्यक हिन्दू है लेकिन दमन चक्र सहता है –
अपने देश में अपने राज में कुचला दबा रहता है –
-------फिर भी चेत नही पाता--------
जाति पॉति की भष्ट्र नीति से केवल मिली निराशा–
मेरा नाम है हिन्दी भाषा, मैं हर हिन्दू की अभिलाषा–
हिन्दुस्तान मेरी परिभाषा है ये जान लो।।
देव नागरी मेरी बहना, पहनाती मुझको हर गहना–
इसकी सुन्दता क्या कहना ये पहचान लो।।

मेरा नाम है हिन्दी भाषा, मैं हर हिन्दू की अभिलाषा
हिन्दुस्तान मेरी परिभाषा है ये जान लो।।
––––––’’’..........’’’............

प्रभु से निवेदन

हे प्रभु जब जन्म देना, गोद भारत माॅ का हो।
काम के जब योग्य हों तो,काम भारत माॅ का हो।।
काम के करने में हरदम, ध्यान भारत माॅ का हो।
काम से जब मुक्त हों, तो मान भारत माॅ का हो।।
––––––’’’..........’’’............

देश–प्रदेश–राजधानी–जनपद–मेरा परिचय

1. भारत देश में प्रदेश, उत्तर–प्रदेश राज रहे,
उत्तर–प्रदेश की लखनऊ, राजधानी है।
भूतकाल से नवाब, रहते लखनऊ,में ही,
गोण्डा जिले की भी अद्‌भुत कहानी है।

2. धर्म ध्वज सनातन की लहरे सनातन से,
शक्ति पीठ बाराही पाटेश्वरी, पाटेश्वरी बखानी है।
खैरा देवी के संग दुखहरन नाथ, दुःख हरत,
प्रसिद्ध जहाॅ अगस्त कुण्ड ऋषियों ने मानी है।

3. राजा रघु दिलीप दशरथ की पली गैया जहाॅ,
वहीं है गोनार्द आज गोण्डा छवि सुहानी है।
ऐसे पूज्य भूमि में, परसा गोण्डरी ऐसा ग्राम जहाॅ,
वही की शिवजारी पियें सरयू का पानी है।

रामचरित मानस का जीवन में महत्व

प्रमोद कुमार
सहायक

गोस्वामी तुलसी दास ने अनेक साहित्यों की रचना की हैं वैसे तो विनय पत्रिका, गीतावली, कवितावली, बरवै रामायण आदि लेकिन जो स्थान उनके द्वारा रचित रामचरित मानस का है, उसका कोई जोड़ नहीं है इसलिए हिन्दी के अलावा कई भाषाओं में रामचरित मानस का प्रकाशन किया जा चुका है। इस ग्रंथ में उत्तम काव्य के सभी लक्षण मौजूद है। इसे सभी वर्गो के लोग बड़े चाव से पढ़ते है।

इस काव्य में भक्ति, ज्ञान, नीति, जितना प्रचार लोगों में इस काव्य से हुआ है उतना साहित्य का कोई ग्रंथ नहीं कर सका है। राम चरित मानस एक धार्मिक ग्रंथ के साथ–साथ एक सामाजिक/पारिवारिक ग्रंथ भी है जिसमें सामान्य जन मानस से जुड़ी कई विधाओं का वर्णन सर्वोत्कृष्ट रूप में किया गया है। ग्रंथ में सबसे पहले सभी देवी–देवताओं की वन्दना के साथ–साथ सभी तरह के लोगों की वन्दना की गई है। जैसेः–

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ।
जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ।।

गृहस्थी के कार्यो को राम चरित मानस में अत्यधिक कठिन माना गया है इस सम्बन्ध में तुलसी दास जी ने सही व्याख्या की है।

गृह कारज नाना जंजाला ।
ते अति दुर्गम सैल बिसाला।।

ईश्वर भक्ति के सम्बंध में ईश्वर के प्रति श्रृद्धा होनी चाहिए उनके लिए फालतू दिखावे एवं आडम्बरों की कोई आवश्यकता नहीं है। राम चरित मानस को नीति ग्रंथ की संज्ञा भी दे सकते है और जीवन में मार्ग दर्शन हेतु अकाट्य उदाहरण भी प्रस्तुत किए है।

कुपथ मांग रुज ब्याकुल रोगी।
बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी।।

शास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिअ।
भूप सुसेवित बस नहीं लेखिअ।।

काटेहिं पइ कदरी फरई कोटि जतन कोउ सींच।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पई नवनीच।।

रामचरित मानस में भगवान श्री राम ने विभीषण को एक ऐसे रथ की व्याख्या की है जिससे मनुष्य अपने जीवन काल में बड़ी से बड़ी विजय प्राप्त कर सकते है।

सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य सील दृढ ध्वजा पताका।।

बल विवेक दम, परहित घोरे।
छमा कृपा समता रजु जोरे।।

इसी तरह से ईश्वर का भजन रथ का चतुर सारथी है, वैराग्य ढाल है, सन्तोष तलवार है। बुद्धि और विज्ञान क्रमशः प्रचण्ड शक्ति एवम् कठिन धनुष के प्रतीक है। बाद में भगवान श्रीराम ने यही कहा है–

सखा धर्म में अस रथ जाकें।
जीतन कहँ न कतहूँ रिपु ताकें।।

श्री राम चरित मानस में गुरू के प्रति शिष्य के द्वारा दिए गए सम्मान को बखूबी जिक्र किया है।

धाई धरे गुर चरन सरोरूह।
अनुज सहित अति पुलक तनोरूह।।

तुलसीदास जी ने भ्रातृ प्रेम का जितना अच्छा भावनात्मक चित्रण किया है शायद उसे कोई छू भी नहीं पाया है। लक्ष्मण के नाराज होने पर भगवान श्री राम ने भरत के संबंध में जो कहा है, वह एक सच्चा भ्रातृ प्रेमी ही कह सकता है।

जौ न होत जग जनम भरत को।
सकल धरम धुर धरनि धरत को।।

राम राज्य में जनता धर्म के साथ–साथ परस्पर प्रेम से रहती थी। छोटे–बड़े में कोई भेदभाव नहीं था। सभी दिशाओं के लोग प्रसन्नता से भरे हुए थे जैसे तुलसी दास जी ने कहा है–

सरसिज संकुल सकल तड़ागा।

अति प्रसन्न दस दिसा विभागा।।

रामचरित मानस में आज के समाज में व्याप्त बुराईयों का बड़ा सटीक चित्रण किया है। सामाज के प्रत्येक क्षेत्र में मानवीय कमजोरियॉ दृष्टिगोचर हो रही है जोकि मनुष्यों को दुखों का कारण है। वे दूसरे को कष्ट में देखकर अत्यंत प्रसन्न होते है। ठीक ही कहा गया है–

खलन्ह हृदय अति ताप बिसेषी।
जरहिं सदा पर संपति देखी।।
जहॅ कहुॅ निंदा सुनहि पराई।
हरषहिं मनहुॅ परी निधि पाई।।

आजकल गुरू और शिष्य के संबंध के विषय में कहना ही क्या है इस सम्बन्ध में तुलसीदास जी ने ठीक ही लिखा है –

गुर शिष्य बधिर अंध का लेखा।
एक न सुनई एक नहिं देखा।।

आज के समय में वही मनुष्य समझदार, बुद्धिमान और अच्छे आचरण करने वाला माना जाता है जो दूसरे के धन को हरण कर लेता हो और अत्यधिक दंभी हो। इसीलिए तुलसीदास ने ठीक ही कहा है–

सोई सयान जो परधन हारी।
जो कर दंभ सो बड़ आचारी।।

तुलसीदास जी ने मनुष्य को अत्यधिक भाग्यशाली माना है इससे हमें मनुष्य को चाहिए कि वह मानवता को अपने जीवन में अपनाये एवं अच्छे कर्म करते रहना चाहिए।

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।

इस प्रकार से हम इस निष्कर्ष पर पहुॅचते है कि राम चरित मानस में लिखी हुयी बातें हमारे जीवन के प्रत्येक हर क्षेत्र को प्रभावित करती है और हमें सही रास्ता दिखाती है।

गॉव

सावित्री त्रिपाठी
(द्वारा प्रमोद कुमार
सहायक)

बचपन के दिन बीते
भूल गया गॉव ।
सपनों सी याद रही
पीपल की छांव ।

नदी के किनारे पर
झूमते बबूल ।
आम और महुवन के
बीच खड़े छूल ।

फुनगी पर बैठ
काग करे कॉव–कॉव ।
सपनों सी याद रही
पीपल की छॉव

कोयलिया डाली में
झूम–झूम गाये ।
नाच रहे मोर जहॉ
पखना छिटकाये ।

चिड़ियों के झुण्ड करें
जहॉ च्यॉव–च्यॉव ।
सपनों की याद रही
पीपल की छॉव ।

बचपन के दिन बीते
भूल गया गॉव ।
सपनों सी याद रही
पीपल की छॉव ।

कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ

वी0पी0 पान्डे,
सहायक

क्या आप जानते कि :–

1– खड़े– खड़े पानी पीने वालों का घुटना दुनियां का कोई डॉक्टर ठीक नहीं कर सकता ।
2– तेज पंखे के नीचे या ए0सी0 में सोने से मोटापा बढता है ।
3– दर्द में एक ग्लास पानी किसी भी पेन किलर से भी तेज काम करता है ।
4– कुकर में दाल गलती है पकती नही है, इसलिए गैस और एसीडिटी करती है ।
5– अल्युमुनियम के बर्तनों के प्रयोग से अंग्रेजों ने देशभक्त भारतीय कैदियों को रोगी बनाया था ।
6– लकवा होते ही मरीज के नाक में देशी गाय का घी डालने से लकवा पन्द्रह मिनट में ठीक हो जाता है ।
7– देशी गाय के शरीर पर हाथ फेरने से 10 दिन में ब्लडप्रेशर नॉरमल हो जाता है ।

सफलता के मन्त्र

1– खुद की कमाई से कम खर्च हो ऐसी जिन्दगी बनाएं ।
2– खुद की भूल स्वीकारने में संकोच मत करो ।
3– किसी के सपनों पर हंसो मत ।
4– रोज हो सके तो उगता हुआ सूरज देखें ।
5– खूब जरूरी हो तभी कोई चीज उधार लो ।
6– कर्ज और शत्रु को बडा मत होने दें ।
7– ईश्वर पर पूरा भरोसा रखो ।
8– प्रार्थना करना कभी मत भूलो, इसमें अपार शक्ति होती है ।
9– समय कीमती है इसको फालतू कामों में मत गवांओ ।
10.– जो आपके पास है उसी में खुश रहना सीखो ।
11 – बुराई कभी भी किसी की मत करो क्योकि बुराई नाव में छेद के समान है बुराई छोटी हो या बडी नाव को डुबो देती है ।
12 – कुछ पाने के लिए कुछ खोना नही बल्कि करना पडता है ।
13 – पेड़ बूढा ही सही आंगन में रहने दो फल न सही छाया अवश्य देगा ही उसी प्रकार बूढे माता – पिता तुम्हारे बच्चों को अच्छे संस्कार एवं आर्शीवाद अवश्य देगें ।

सेवानिवृत्ति

बी0जी0 राम,
अधिकारी सर्वेक्षक

जीवन चक्र का एक पड़ाव सरकारी सेवा से निवृत्त होना भी है । मैं अपने कार्यालय से पिछले वर्षो में सेवा निवृत्त हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को यह कविता समर्पित कर रहा हूँ –

रिटायरमेंट .....नयी जिन्दगी.....
मैं रिटायर हो गया हूँ .....
पहले सहमा कुछ, मगर अब,
इक नयी सी जिन्दगी की राह पर,
फिर चल पड़ा हूँ.....

आज तक की जिन्दगी की दौ़ड में,
बचपन के गीत जो भूले हुए थे,
आज कर फिर याद उनको प्यार से,
नित नयी धुन में उन्हें दुहरा रहा हूँ
इक नयी सी जिन्दगी की राह पर,
फिर चल पड़ा हूँ.....

फूल पौधे, पेड़ पंछी, ये नजारे,
ये समंदर आसमाँ ये चाँद तारे,
अब नयी नजरों से इनको देखकर,
साथ इनके ही मैं खुद को पा रहा हूँ
इक नयी सी जिन्दगी की राह पर,
फिर चल पड़ा हूँ.....

जिन्दगी की दौ़ड में तो ''अहम'' था,
जीत की ख्वाहिश में जो हारा रहा,
अब ''अहम'' की जगह पर, ''दिल'' को बिठा,
दिल की भोली ख्वाहिशों में खो रहा हूँ.....
इक नयी सी जिन्दगी की राह पर,
फिर चल पड़ा हूँ.....

सब में जो हैं, और सबसे भी बड़ा है,
जिसकी माया ही निरंतर गूढ है,
अब मिला है समय हाथों में जो कुछ,

खोज में उसकी स्वयं को ढ़ा रहा हूँ.....
इक नयी सी जिन्दगी की राह पर,
फिर चल पड़ा हूँ.....

यारों, क्या मैं सच में रिटायर हो गया हूँ ?
जी नहीं ..... अब तो,
इक नयी सी जिन्दगी की राह पर,
फिर चल पड़ा हूँ.....

वर्ष 2014 एवं 2015 में पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी. से सेवानिवृत्त हुए अधिकारियों/कर्मचारियों का संक्षिप्त परिचय

श्री राम लाल राम, अधिकारी सर्वेक्षक

श्री राम लाल राम भारतीय सर्वेक्षण विभाग में टी.टी.बी. के पद पर दिनांक 29.10.74 को 11 डी.ओ. दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र में नियुक्त हुए । इनकी नियुक्ति दिनांक 05.12.1975 को टी.टी.टी.ए. के पद पर हुई। उसके बाद एस.टी.आई. (वर्तमान में आई.आई.एस.एम.) हैदराबाद से दो वर्ष (1975 से 1977) का सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूर्ण करने के पश्चात अक्टूबर 1977 में 74 पार्टी राँची में सर्वेक्षक के पद पर नियुक्त हुए । इनका सर्वेक्षक के पद पर अगस्त 1982 में 92 पार्टी वाराणसी में स्थानान्तरण हुआ तथा यहीं पर इनकी पदोन्नति अधिकारी सर्वेक्षक के पद पर दिनांक 28.07.1998 को हुई । इनका स्थानान्तरण दिनांक 02.01.2009 को अधिकारी सर्वेक्षक के पद पर पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में हुआ तथा यही से दिनांक 31.01.2014 को सेवानिवृत्त हुए ।

श्री प्रभाष रंजन दत्ता, अधिकारी सर्वेक्षक

श्री प्रभाष रंजन दत्ता भारतीय सर्वेक्षण विभाग में टी.टी.टी.ए. के पद पर दिनांक 17.02.75 को 9 पार्टी शिलांग में नियुक्त हुए । उसके बाद एस.टी.आई. (वर्तमान में आई.आई.एस.एम.) हैदराबाद से दो वर्ष का सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूर्ण करने के पश्चात पुनः 80 पार्टी शिलांग में सर्वेक्षक के पद पर नियुक्त हुए। शिलांग से इनका स्थानान्तरण कलकत्ता हुआ यही पर इनकी पदोन्नति दिनांक 01.10.2002 को अधिकारी सर्वेक्षक के पद पर हुई । कलकत्ता में लम्बे समय तक विभाग की सेवा के उपरान्त अधिकारी सर्वेक्षक के पद पर ही पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा यही से दिनांक 31.10.2014 को सेवानिवृत्त हुए ।

श्री रमेश चन्द्र प्रहराज, स्थापना एवं लेखाधिकारी

श्री रमेश चन्द्र प्रहराज भारतीय सर्वेक्षण विभाग में अवर श्रेणी लिपिक के पद पर दिनांक 07.07.75 दक्षिण पूर्वी सर्किल भुवनेश्वर में नियुक्त हुए । इनकी नियुक्ति दिनांक 26.12.1981 को प्रवर श्रेणी लिपिक के पद पर 11 डी.ओ. भुवनेश्वर में हुई । ये सहायक के पद पर पदोन्नत होकर दिनांक 12.09.96 दक्षिण पूर्वी सर्किल भुवनेश्वर में नियुक्त हुए । पदोन्नति पर दिनांक 30.05.2005 को कार्यालय अधीक्षक के पद पर छत्तीसगढ़ जी.डी.सी. रायपुर में नियुक्त हुए । इन्होने दिनांक 06.08.2008 को स्थापना एवं लेखाधिकारी के पद पर पदोन्नत होने के बाद बिहार जी.डी. सी., पटना में विभाग की सेवा की । वहाँ से ये दिनांक 22.12.2012 को स्थापना एवं लेखाधिकारी के पद पर पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा यही से दिनांक 28.02.2014 को सेवानिवृत्त हुए।

श्री रणधीर राम, स्थापना एवं लेखाधिकारी

श्री रणधीर राम भारतीय सर्वेक्षण विभाग में अवर श्रेणी लिपिक के पद पर दिनांक 27.09.80 को महासर्वेक्षक के कार्यालय, देहरादून में नियुक्त हुए । इनकी पदोन्नति दिनांक 24.10.1991 को प्रवर श्रेणी लिपिक के पद पर पश्चिम कार्यालय जयपुर में हुई । सहायक के पद पर पदोन्नत दिनांक 19.04.04 को हुए । दिनांक 13.12.2010 को कार्यालय अधीक्षक के पद पर पदोन्नत हुए तथा दिनांक 22.12.2014 को स्थापना एवं लेखाधिकारी के पद पर पदोन्नत हुए। इन्होने अपनी सेवा काल का लम्बा समय पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में व्यतित किया तथा यही से दिनांक 31.07.2015 को सेवानिवृत्त हुए ।

श्री उमा कान्त दीक्षित, सर्वेक्षण सहायक

श्री उमा कान्त दीक्षित, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 27.12.77 को 9 पार्टी शिलांग में नियुक्त हुए । दिनांक 01.02.89 को खलासी के पद पर नियमित हुये तथा 01.01.1995 को पटल चित्रक ग्रेड 4 के पद पर शिलांग में नियुक्त हुए । इन्होने पटल चित्रक ग्रेड 3 एवं ग्रेड 2 के पद पर विभाग की सेवा 92 पार्टी वाराणसी में की। वहाँ से दिनांक 02.11.2001 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा यही पर 01.01.2012 को सर्वेक्षण सहायक के पद पदोन्नत हुए तथा इसी पद से दिनांक 31.12.2014 को सेवानिवृत्त हुए।

श्री नवमी लाल, सर्वेक्षण सहायक

श्री नवमी लाल, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में टी.टी.टी.बी. (पटल चित्रक) के पद पर दिनांक 07.05.84 को 90 पार्टी देहरादून में नियुक्त हुए । दिनांक 04.02.92 को 27 पार्टी मसूरी में ग्रेड 2 हुए । वहाँ से दिनांक 01.01.1996 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी. डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा यही पर 01.01.2009 को सर्वेक्षण सहायक के पद पदोन्नत हुए तथा इसी पद से दिनांक 30.06.2015 को सेवानिवृत्त हुए ।

श्री अवधेश कुमार, पटल चित्रक

श्री अवधेश कुमार, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 18.11.74 को 42 पार्टी अम्बाला में नियुक्त हुए । दिनांक 01.01.89 को खलासी के पद पर नियमित हुये तथा स्थानान्तरण होकर 91 पार्टी लखनऊ आये तथा यही पर दिनांक 01.07.2005 को पटल चित्रक ग्रेड 4 के पद पर नियुक्त हुए । इन्होने पटल चित्रक ग्रेड 3 एवं ग्रेड 2 के पद पर विभाग की सेवा लखनऊ में की एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी. से दिनांक 31.01.2014 को सेवानिवृत्त हुए ।

श्री बाबू राम, मा0चि0ग्रेड–।।

श्री बाबू राम, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 02. 12.75 को 7 डी.ओ. जबलपुर में नियुक्त हुए । दिनांक 01.01.89 को खलासी के पद पर नियमित हुये तथा जबलपुर में ही ये दिनांक 01.04.95 को मानचित्रकार ग्रेड 4 के पद पर नियुक्त हुए । दिनांक 01.01.1999 को मानचित्रकार ग्रेड 2 हुए तथा स्थानान्तरण होकर दिनांक 14.06.2005 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ आये तथा यही से इसी पद पर दिनांक 30.04.2015 को सेवानिवृत्त हुए ।

श्री धर्मराज सिंह, मा0चि0ग्रेड–।।।

श्री धर्मराज सिंह, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 04.12.78 को देहरादून में नियुक्त हुए । दिनांक 01.02.89 को खलासी के पद पर 91 पार्टी लखनऊ में नियमित हुये । दिनांक 31.01.96 को स्थानान्तरण पर उत्तरी सर्किल देहरादून गये वहीं पर मानचित्रकार ग्रेड 3 के पद पर नियुक्त हुए । वहाँ से दिनांक 28. 07.2004 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा यही पर 08.01.2007 को मानचित्रकार ग्रेड 3 के पद पर पदोन्नत हुए तथा इसी पद से दिनांक 31.08.2015 को सेवानिवृत्त हुए ।

श्री मोहन लाल, सहायक

श्री मोहन लाल भारतीय सर्वेक्षण विभाग में अवर श्रेणी लिपिक के पद पर दिनांक 25.08.83 को 92 पार्टी वाराणसी में नियुक्त हुए । दिनांक 30.12.1998 को प्रवर श्रेणी लिपिक के पद पर पदोन्नत होकर वाराणसी में नियुक्त हुये । सहायक के पद पर पदोन्नत होकर दिनांक 30.10.2006 पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी. में आये तथा यही से दिनांक 30. 06.2015 को सेवानिवृत्त हुए ।

मो0 इश्तियाक अहमद, खलासी

श्री इश्तियाक अहमद, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 18.11.74 को 70 पार्टी देहरादून में नियुक्त हुए । दिनांक 01.01.89 को खलासी के पद पर नियमित हुये तथा 91 पार्टी लखनऊ में स्थानान्तरित हुए तथा दिनांक 31.01.2014 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी. से सेवानिवृत्त हुए ।

श्री नवरंग राम, खलासी

श्री नवरंग राम, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 01.10.75 को 25 पार्टी मसूरी में नियुक्त हुए । दिनांक 01.01.89 को खलासी के पद पर नियमित हुये । वहाँ से दिनांक 20.07.2004 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा यही पर दिनांक 30.06.2014 को इसी पद से सेवानिवृत्त हुए ।

श्री ज्ञान दास, खलासी

श्री ज्ञान दास, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 01.02.84 को 83 पार्टी जयपुर में नियुक्त हुए । दिनांक 18.05.95 को खलासी के पद पर नियमित हुये तथा 30.01.2009 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा यही दिनांक 30.06.2014 को इसी पद से सेवानिवृत्त हुए ।

श्री श्याम लाल राम, खलासी

श्री श्याम लाल राम, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 07.06.76 को 33 पार्टी देहरादून में नियुक्त हुए । दिनांक 01.02.89 को खलासी के पद पर नियमित होकर 91 पार्टी लखनऊ स्थानान्तरित हुए । पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में इसी पद से दिनांक 30.06.2015 को सेवानिवृत्त हुए ।

श्री वृन्दावन, खलासी

श्री वृन्दावन, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 07.07.76 को 48 पार्टी जबलपुर में नियुक्त हुए । दिनांक 01.02.89 को खलासी के पद पर नियमित हुये तथा 04.02.1987 को स्थानान्तरण होकर 92 पार्टी वाराणसी आये । वहाँ से वर्ष 2009 में पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा यही पर इसी पद से दिनांक 31.01.2014 को सेवानिवृत्त हुए।

श्री भुखन राम, खलासी

श्री भुखन राम, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 23.03.76 को 33 पार्टी देहरादून में नियुक्त हुए । दिनांक 01.02.89 को खलासी के पद पर नियमित होकर 91 पार्टी लखनऊ आये तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में इसी पद से दिनांक 30.06.2015 को सेवानिवृत्त हुए ।

श्री राम आश्रय प्रसाद, खलासी

श्री राम आश्रय प्रसाद, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 23.11.75 को 44 पार्टी इन्दौर में नियुक्त हुए । दिनांक 01.02.89 को खलासी के पद पर नियमित हुये तथा वर्ष 2004 में पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा यही पर इसी पद से दिनांक 30.06.2015 को सेवानिवृत्त हुए।

श्री भारत सिंह, तकनीकी श्रमिक

श्री भारत सिंह, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 06.03.78 को देहरादून में नियुक्त हुए । दिनांक 04.02.86 को तकनीकी श्रमिक के पद पर नियुक्त हुए तथा लम्बे समय तक देहरादून में विभाग की सेवा के उपरान्त इनका स्थानान्तरण पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में हुआ तथा यही से दिनांक 30.09.2015 को तकनीकी श्रमिक के पद से सेवानिवृत्त हुए ।

मो0 युनूस, गार्ड

मो0 युनूस, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 12.03.79 को वाराणसी में नियुक्त हुए । दिनांक 04.02.86 को खलासी के पद पर नियमित होकर गार्ड के पद पर नियुक्त हुए । इन्होने एक लम्बे समय की सेवा 92 पार्टी वाराणसी में की। 92 पार्टी के विलय के बाद पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ आये तथा यही पर गार्ड के पद से दिनांक 30.09.2015 को सेवानिवृत्त हुए ।

श्री रमा कान्त गौड़, एम.टी.डी.

श्री रमा कान्त गौड़, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 21.11.72 को देहरादून में नियुक्त हुए । दिनांक 04.02.86 को खलासी के पद पर नियमित हुये तथा 04.04.89 को पूर्वी सर्किल कलकत्ता में एम.टी.डी. के पद पर नियुक्त हुए । वहाँ से दिनांक 02.03.1994 को स्थानान्तरण होकर 92 पार्टी वाराणसी आये। वहाँ से वर्ष 2009 में 92 पार्टी के विलय के बाद पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ आये तथा यही पर एम.टी.डी. ग्रेड 1 के पद से दिनांक 30.11.2014 को सेवानिवृत्त हुए ।

वर्ष 2014 तथा 2015 में पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी. लखनऊ से सेवानिवृत्त हुए उपरोक्त अधिकारियों/कर्मचारियों का भारतीय सर्वेक्षण विभाग में कार्य बहुत ही अच्छा रहा तथा विभाग द्वारा आवंटित कार्य का निष्पादन इन्होने समय से तथा बड़े उत्साह से किया । ये लोग अपने सेवा काल में हमेशा विभाग के प्रति समर्पित रहे तथा इसके लिए इन लोगों की जितनी सराहना की जाये वो कम है । पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी. इन लोगो का हमेशा आभारी रहेगा कि इन लोगो ने अपने सेवा काल का एक लम्बा समय यहाँ व्यतीत किया तथा सरकारी कार्य को सुचारू रूप से करने में कार्यालय का सहयोग किया ।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए 10 मन्त्र

अरविन्द कुमार श्रीवास्तव,
सहायक

आज के आधुनिक युग में मानव का जीवन रोज-रोज की भागम-भाग एवं अति-व्यस्तता में व्यतीत होने के कारण अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने में विफल हो रहा हैं जिसके फलस्वरूप वह मानसिक एवं शारीरिक कष्टों का शिकार बनता जा रहा हैं। अतः आज के युग में आप अपनी जीवनशैली में कुछ परिवर्तन करके अपने स्वास्थय को बेहतर बना सकते है। अतः इस संबंध में निम्न उपाय करके अच्छी सेहत प्राप्त की जा सकती है।

गहरी साँस लेना- हम लोग अक्सर पूरा दिन सामान्य तरीके से साँस लेने में गुजार देते है। अतः प्रातःकाल जितनी जल्दी हो सके बिस्तर छोड़ दें उतना अच्छा। खुली हवा में निकलें गहरी-गहरी लम्बी-लम्बी साँसे लें। थोड़ी देर साँस को रोके फिर छोड़े ऐसा बार-बार पाँच से दस मिनट तक करें । यह प्रक्रिया हम किसी भी वक्त कर सकते हैं इनसे हमारे फेफड़े स्वस्थ रहते हैं। जमीन पर पालथी मार कर बैंठ जायें फिर पेट अन्दर की ओर खींचकर जितना मुमकिन हो अन्दर की तरफ पिचकाने की प्रक्रिया दस-पन्द्रह बार करें। अवश्य लाभ होगा।

ध्यान करें- रोजाना सुबह अथवा सायंकाल कम से कम 10 मिनट ध्यान करें। घर में या पार्क में शान्त स्थल पर पालथी मारकर आँखें बन्द कर आराम से बैठ जायें। हाथों को घुटनों पर रखें । मन को एकाग्रचित करने का प्रयास करें। बाहर से कोई भी कैसी भी अवाज हो उससे अपना ध्यान न बटने दें। उक्त ध्यान लेटकर भी आराम मुद्रा में किया जा सकता हे। यह क्रिया प्रतिदिन करने का प्रयास करें। आपको अवश्य लाभ होगा।

अनुलोम-विलोम-जिन लोंगो को अक्सर सर्दी जुकाम या नाक बन्द रहने की समस्या होती है उनके लिए यह व्यायाम अति लाभकारी है। स्वस्थ रहने के लिए कम से कम पाँच-दस मिनट समय निकाल कर उक्त व्यायाम प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। इसे नाड़ीशोधन व्यायाम भी कहा जाता है। आराम से चटाई पर बैठ कर अंगूठे से नाक को दायीं ओर से दबायें नथुने से गहरी साँस लें फिर अंगूठे से नाक को बायीं ओर दबायें और दायीं ओर से साँस बाहर निकाल देवें ऐसा बारी-बारी से दोनों तरफ से करें। निश्चित रूप से लाभ होगा।

अपना मन पसन्द गायें अथवा संगीत सुने -जब भी फुर्सत के क्षण हों अपना मन पसन्द का कोई भी गीत, भजन अथवा गजल गुनगुनाने का प्रयास करें अथवा हल्का-फुल्का संगीत अवश्य सुनें। इससे एकाग्रता बढ़ती है और मन खुश रहता है जिससे शरीर में जहरीले तत्व बनने की प्रक्रिया नहीं बनती। इससे तनाव से छुटकारा मिलता है। दिनभर की थकान से राहत मिलती है।

हमेशा सकारात्मक सोच रखें– यह हमेशा ध्यान रखें कि इस संसार में हर किसी का जीवन सरल एवं पूर्णतया सुखी नहीं है। समय सदा एक सा नहीं रहता है प्रत्येक मनुष्य के जीवन में समस्यायें एवं विपदायें आती हैं। इनका डटकर सामना करना चाहिए। न तो दुःख हमेशा व्यक्ति के साथ रहता है और न ही सुख। प्रत्येक काली रात्रि के बाद सुबह सूरज की किरणें अवश्य निकलकर प्रकाश फैलाती है। अतः हमेशा अपनी सोच सकारात्मक रखें। अपने आस–पास के जरूरत मन्द गरीब लोगों की आर्थिक या शारीरिक मदद अवश्य करें। देखियेगा इससे कितना आनन्द प्राप्त होता है।

अपने परिवार के साथ पर्याप्त समय बितायें– अपने परिवार के साथ पर्याप्त समय बितायें उनके साथ हँसी मजाक करें बच्चों से एवं अपने जीवन साथी के साथ मित्रवत व्यवहार करें। उनकी समस्याओं को शेयर करें। और अपना हर सम्भव सहयोग उन्हें दें। साल में एक बार अवश्य प्राकृतिक शान्त माहौल में घूमने जायें। घर के आस–पास स्वच्छता रखें। देखिएगा घर में स्वस्थ माहौल होने से तनाव आपसे मीलों दूर रहेगा।

कार्य–स्थल में सहकर्मियों के साथ व्यवहार– अपने कार्यस्थल में सहकर्मियों के साथ मित्रवत व्यवहार रखें । आपने ध्यान दिया होगा भद्रजन हर समय अपनें व्यवहार में सौम्यता एवं बातचीत में विनम्रता का पालन अवश्य करते है। अतः प्रत्येक परिस्थिति में अपने व्यवहार में विनम्रता अवश्य रखें। अपने सहकर्मियों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार रखें। वक्त पड़ने पर उनकी सहायता करने में पीछे न रहें। खेलकूद एवं मनोरंजन कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर भाग लें।

कोई न कोई शौक अवश्य पालें– किसी न किसी प्रकार का शौक अवश्य रखें जैसे साहित्य पढ़ने का, बागवानी का, खाना बनाने का एवं सैर–सपाटा करने का। इससे सकारात्मक सोच बढ़ती है। इस प्रकार की क्रियाओं से चित्त शान्त एवं स्वस्थ रहता हैं।

खुली आँखो से सपने देखें और ऊँचा ध्येय रखें– आगे बढ़ने के लिए निश्चित उद्धेश्यों को पूर्ण करने के सपने देखे। हमेशा सबसे आगे रहने का ध्येय रखें पर ध्यान रखें इससे किसी का अहित न हो।

हमेशा सजग एवं होशियार रहें–अन्त में सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु पर ध्यान देने की आवश्यकता है वह यह कि आप हमेशा अपने आसपास के माहौल के प्रति सजग व संवेदनशील रहें। हमेशा यह ध्यान रखें कि कोई आपको मूर्ख न बनाये। अपने आपको आडम्बर एवं अंधविश्वास से दूर रखें एवं वास्तविकता का सामना करना सीखें। सदैव अपने आपको प्रत्येक अवसर पर सजग एवं होशियार रखें।

जानिए डाक्टर की भाषा

शिवाँगी श्रीवास्तव
(पुत्री अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, सहायक)

डाक्टर द्वारा लिखे गये पर्चे पर कुछ शब्द मरीजों के लिए पहेली बन जाते है, क्योंकि उसमें ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जो आम लोगों की समझ से परे होते हैं। मेडिकल स्टोर वाले इन्हे आसानी से पढ लेते हैं। क्या आप जानते हैं वो उन्हें कैसे समझ लेते हैं ? चूँकि हर पेशे के सांकेतिक कोड होते हैं जिन्हें उस पेशे से जुडे लोग आसानी से जान लेते है। क्या होता है इन संकेतों का अर्थ आइये जानते है–

Rx	इस संकेत द्वारा डाक्टर ईश्वर को साक्षी मानकर अपनी पूरी योग्यतानुसार उपचार करने का वचन देता है।
	त्रिकोण के समान इस संकेत द्वारा रोग के बारे में जानकारी दी जाती है।
OD	यह एक लैटिन भाषा का एक शब्द है (ओमिनी डाय) अर्थात– दिन में एक बार दवा लेनी है।
BD(B.I.D)	यह एक लैटिन भाषा का एक शब्द है (बिस इन डाय) अर्थात– दिन में दो बार दवा लेनी है।
TDS(T.I.D.)	यह एक लैटिन भाषा का एक शब्द है (टर इन डाय) अर्थात– दिन में तीन बार दवा लेनी है।
QDS(Q.I.D.)	यह एक लैटिन भाषा का एक शब्द है (क्वार्टर इन डाय सुमेनडस) अर्थात– दिन में चार बार दवा लेनी है।
A.C.	एण्टी साइबम इसका मतलब है भोजन से पहले दवा लेनी है।
PC	पोस्ट साइबम इसका मतलब है भोजन के बाद दवा लेनी है।
A/D	अल्टरनेट डे, अर्थात दवा को एक दिन के अन्तर से लेना है।
H.S.	होरा सोमनी अर्थात दवा को रात में सोने से पहले लेना है।
BB	इसका अर्थ है दवा को सुबह नास्ते से पहले लेना है।
S.O.S.	लैटिन शब्द साइ आप्ससिट का संक्षिप्त रूप है जिसका अर्थ है दवा को जरूरत पड़ने पर लेना है। उदाहरण बुखार होने पर अथवा दर्द होने पर ।
STAT	लैटिन शब्द स्टेटिम का संक्षिप्त रूप सद जिसका मतलब दवा तुरन्त लेनी है।
T.S.F.	टी स्पून फुल अर्थात एक छोटा चम्मच (05 मिली)
T.b.sf.	टेबल स्पून फुल अर्थात एक बड़ा चम्मच (10 मिली)
S.L.	स्ब लिगुअल। इसका अर्थ है दवा की गोली जीभ के नीचे रखकर धीरे–धीरे चूसना है।
N.A.D.	नो एब्नार्मोलिटी डिटेक्टेड अर्थात किसी भी प्रकार की असामान्यतः का न पाया जाना।
W.S.	वार्म सेलाइन अर्थात हल्के गर्म पानी में नमक मिलाकर उससे कुल्ला करें या किसी अंग की सिकाई करें।
Applicap	ऐसा कैपसूल जिसे निगल कर नहीं खाना है, बल्कि एक किनारे को काटकर उसमें उपस्थित मरहम को आँख में डालना है, या फिर जख्म पर लगाना है।
S.R.	रोगी को कम नमक वाला आहार लेना हैं।
I.M.	इन्टरमस्कुलर अर्थात मॉसपेशियों में लगाया जने वाला इंजेक्शन
I.V.	इन्टरवेनस अर्थात नस में लगाया जाने वाला इंजेक्शन।
S.C.	स्ब कुटेनियस अर्थात त्वचा के ठीक नीचे दिये जाने वाला इंजेक्शन।
Tab: टेबलेट, Cap: कैपसूल, Syp: सिरप, Susp: सस्पेंशन, Oint: मरहम, Inj: इंजेक्शन,	

अंर्तराष्ट्रीय योग दिवस

उमेश मिश्रा,
अधिकारी सर्वेक्षक

21 जून 2015 को प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया । जिसकी पहल भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 27 सितम्बर, 2015 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण से की थी जिसमें उन्होंने कहा : ''योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है, विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक सम्यक दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। यह व्यायाम के बारे में नही है, लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय में है। हमारी बदलती जीवन शैली में यह चेतना बनाकर, हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है। तो आयें एक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को गोद लेने की दिशा में काम करते है।'' संयुक्त राष्ट्र संघ की घोषणा मे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के इस प्रस्ताव को 90 दिन के अंदर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया, जो संयुक्त राष्ट्र में किसी दिवस प्रस्ताव के लिए सबसे कम समय है। इस पहल को कई वैश्विक नेताओं से समर्थन मिला। सबसे पहले, नेपाल के प्रधानमंत्री सुशील कोईराला ने प्रधानमंत्री मोदी जी के प्रस्ताव का समर्थन किया। संयुक्त राज्य अमेरिका सहित 177 से अधिक देशों, कनाडा, चीन और मिस्र आदि ने इसका समर्थन किया है। ''अभी तक हुये किसी भी संयुक्त राष्ट्र महासभा के संकल्प के लिए यह सह प्रायोजको की सबसे अधिक संख्या है।'' 11 दिसम्बर 2014 को 193 सदस्यीय संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा सर्वसम्मति से योग को अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में 21 जून को मंजूरी दे दी गयी ।

योग का इतिहास

भगवान शंकर के बाद वैदिक ऋषि–मुनियों से ही योग का प्रारम्भ माना जाता है। वैदिक काल में यज्ञ और योग का बहुत महत्व था। इसके लिए उन्होंने चार आश्रमों की व्यवस्था निर्मित की थी। ब्रह्मचर्य आश्रम में वेदों की शिक्षा के साथ ही शस्त्र और योग की शिक्षा भी दी जाती थी। यही वो विज्ञान या संस्कृति है जिसके कारण भारत को विश्वगुरू कहा जाता है। योगाभ्यास का प्रमाणित चित्रण लगभग 3000 ई0पू0 सिन्धु धाटी की सभ्यता के समय की मोहरो और मूर्तियों में मिलता है। बाद में महावीर और बुद्व ने इसे अपनी तरह से विस्तार दिया। जैन और बौद्व जागरण और उत्थान काल के दौर में यम और नियम के अंगों पर जोर दिया जाने लगा। यम ओर नियम अर्थात अंहिसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, शौच, संतोष, तप और स्वाध्याय का प्रचलन ही अधिक रहा। यहाँ तक योग को सुव्यवस्थित रूप नहीं दिया गया था। 563 से 200 ई0पू0 तक योग के तीन अंग– तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान– का प्रचलन था। इसे 'क्रियायोग' कहा जाता है।

इसके पश्चात महर्षि पतंजलि ने इसे सुव्यवस्थित रूप दिया। योग का प्रासंगिक ग्रंथ 'योगसूत्र' 200 ई0पू0 योग पर लिखा गया पहला सुव्यवस्थित ग्रंथ है। इस रूप को ही आगे चलकर सिद्धपंथ, शैवपंथ, नाथपंथ वैष्णव और शाक्त पंथियों ने अपने–अपने तरीके से विस्तार दिया। इन सबका मूल वेद और उपनिषद ही रहा है। भारतीय दर्शन की मान्यता के अनुसार वेदों को अपौरूषेय माना गया है अर्थात वेद परमात्मा की वाणी है तथा इन्हें करीब दो अरब वर्ष पुराना माना गया है। इनकी प्राचीनता के बारे में अन्य मत भी है। योग परम्परा और शास्त्रों का विस्तृत इतिहास रहा है, यद्यपि इसका बहुत सारा इतिहास नष्ट हो गया है। किन्तु जिस तरह राम के निशान इस भारतीय उपमहाद्वीप में जगह–जगह बिखरे पड़े है उसी तरह योगियों और तपस्वियों के निशान जंगलों, पहाड़ों और गुफाओं में आज भी देखे जा सकते हैं। योग के बिना विद्वान का भी कोई यज्ञकर्म सिद्ध नही होता। महर्षि पतंजलि का अष्टांग योग– योग के आठ अंग महर्षि पतंजलि ने योग को चित्त की वृत्तियों के निरोध के रूप में परिभाषित किया है। योगसूत्र में उन्होंने पूर्ण कल्याण तथा शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धि के लिए आठ अंगो वाले योग का एक मार्ग विस्तार से बताया है। अष्टांग योग के आठ अंगों में प्रथम पाँच बहिरंग तथा अन्य तीन अन्तरंग में आते हैं।

1– नियम पांच सामाजिक नैतिकता

(क) अहिंसा– शब्दों से, विचारों से और कर्मों से किसी को हानि नही पहुँचाना
(ख) सत्य– विचारों में सत्यता, परम–सत्य में स्थित रहना
(ग) अस्तेय– चोर–प्रवृति का न होना
(घ) ब्रह्मचर्य– दो अर्थ निम्नवत हैः
1–चेतना को ब्रह्म के ज्ञान में स्थिर करना
2–सभी इन्द्रिय–जनित सुखों में संयम बरतना
(च) अपरिग्रह– आवश्यकता से अधिक संचय नहीं करना और दूसरों की वस्तुओं की इच्छा नही करना

2– नियम पाँच व्यक्तिगत नैतिकता

(क) शौच– शरीर और मन की शुद्धि
(ख) संतोष–संतुष्ट और प्रसन्न रहना
(ग) तप– स्वयं से अनुशासित रहना
(घ) स्वाध्याय– आत्मचिंतन करना
(च) ईश्वर–प्राणिधान– ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण, पूर्ण श्रद्धा

3. आसन योगासनों द्वारा शारीरिक नियंत्रण

4. प्राणायाम श्वास–लेने सम्बन्धी खास तकनीकों द्वारा प्राण पर नियंत्रण

5. प्रत्याहार इन्द्रियों को अंतर्मुखी करना

6. धारणा एकाग्रचित होना

7. ध्यान निरंतर ध्यान

8. समाधि आत्मा से जुडना, शब्दों से परे परम–चैतन्य की अवस्था

योग क्या है–

'योग' संस्कृत शब्द ''युज'' से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ ''जोड़ना'' है। योग हमारे शरीर, मन और आत्मा के बीच संयम स्थापित करता है जिससे सुप्त शक्तियाँ जाग्रत होने लगती है। जैसे–जैसे हम योग करते है वैसे वैसे हमारे मन, शरीर और आत्मा का संपर्क मजबूत होता जाता है और हमारा जीवन सरल व सकारात्मक होता जाता है। योग जीवन जीने की कला है, योग एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है, योग केवल रोगों को दूर करने की प्रक्रिया नही है। योग का आशय शरीर के समस्त रोगों को दूर कर, मस्तिष्क को तनाव मुक्त कर, मन को पवित्र बनाकर, आत्मा का ईश्वर से सम्बन्ध स्थापित करना है। शरीर का मन पर और मन का शरीर पर प्रभाव पडता है। इसलिए योग ही एकमात्र ऐसी सम्पूर्ण पद्धति है जो मनुष्य को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली बनाती है। जीवन की समस्याओं में हम उलझे रहते है जिसके कारण धीरे धीरे हमारा स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रहता लेकिन योग एक ऐसा साधन है जिससे हमारा मन और शरीर पर सम्पूर्ण नियंत्रण होने लगता है। और सबसे बड़ी बात यह है ''योग'' मनुष्य को आत्म संतुष्टि प्रदान करता है। अगर जीवन को जीने का सर्वोत्तम तरीका कोई है तो वह ''योग'' है।

योग भारत में एक आध्यात्मिक प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है। योग शब्द भारत से बौद्ध धर्म के साथ चीन, जापान, तिब्बत, दक्षिण पूर्व एशिया और श्रीलंका में भी फैल गया है और इस समय सारे सभ्य जगत् में लोग इससे परिचित है। इतनी प्रसिद्धि के बावजूद इसकी परिभाषा सुनिश्चित नहीं है। भगवद्गीता प्रतिष्ठित ग्रथ माना जाता है। उसमें योग शब्द का कई बार प्रयोग हुआ है, कभी अकेले और कभी सविशेषण, जैसे बुद्धियोग, संन्यासयोग, कर्मयोग। वेदोत्तर काल में भक्ति योग और हठ्योग नाम भी प्रचलित हो गया है। महात्मा गांधी ने अनासक्ति योग का व्यवहार किया है। पातंजल योगदर्शन में क्रिया योग शब्द देखने में आता है। पाशुपत योग और महेश्वर योग जैसे शब्दों की भी चर्चा मिलती है। इन सब स्थलों में योग शब्द के जो अर्थ है वह एक दूसरे के विरोधी हैं परंतु इतने विभिन्न प्रयोगों को देखने से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि योग की परिभाषा करना कठिन काम है। परिभाषा ऐसी होनी चाहिए जो अव्याप्ति और अतिव्याप्ति दोषों से मुक्त हो, योग शब्द के वाच्यार्थ का ऐसा लक्षण बतला सके जो प्रत्येक प्रसंग के लिए उपयुक्त हो और योग के सिवाय किसी अन्य वस्तु के लिए उपयुक्त न हो ।

इन विभिन्न दार्शनिक विचार धाराओं में किस प्रकार ऐसा समन्वय हो सकता है कि ऐसा धरातल मिल सके जिस पर योग की भित्ति खड़ी की जा सके, यह बड़ा रोचक प्रश्न है परंतु इसके विवेचन के लिए बहुत समय चाहिए। यहाँ उस प्रक्रिया पर थोड़ा सा विचार कर लेना आवश्यक है जिसकी रूपरेखा हमको पतंजलि के सूत्रों में मिलती है। थोड़े बहुत

शब्दभेद से यह प्रक्रिया उन सभी समुदायों को मान्य है जो योग के अभ्यास का समर्थन करते हैं।

1– पातंजल योग दर्शन के अनुसार– योगश्चित्तवृत्त निरोध : अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है ।

2–सांख्य दर्शन के अनुसार– पुरूषप्रकृत्योर्वियोगेपि योगइत्यमिधीयते। अर्थात पुरूष एवं प्रकृति के पार्थक्य को स्थापित कर पुरूष का स्व स्वरूप में अवस्थित होना ही योग है।

3–विष्णुपुराण के अनुसार– योगः संयोग इत्युक्तः जीवात्म परमात्मने। अर्थात् जीवात्मा तथा परमात्मा का पूर्णतया मिलन ही योग है।

4–भगवद्गीता के अनुसार– सिद्दध्यसिद्दध्यो समोभूत्वा समत्वंयोग उच्चते। अर्थात दुःख–सुख, लाभ–अलाभ, शत्रु–मित्र, शीत और उष्ण आदि परिस्थितियों में सर्वत्र समभाव रखना योग है।

5–भगवद्गीता के अनुसार–तस्मोद्दयोगायजुज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम। अर्थात् कर्त्तव्य कर्म बन्धक न हो, इसलिये निष्काम भावना से अनुप्रेरित होकर कर्त्तव्य करने का कौशल योग है।

6–आचार्य हरिभद्र के अनुसार– मोक्खेण जोयणाओ सव्वो वि धम्म ववहारो जोगो। मोक्ष से जोड़ने वाले सभी व्यवहार योग है

7– बौद्ध धर्म के अनुसार–कुशल चितैकग्गता योगः । अर्थात् कुशल चित्त की एकाग्रता योग है। उपरोक्त के अतिरिक्त गीता में तीन प्रकार के योगों का वर्णन मिलता है –

कर्मयोग– कार्रवाई का योग। इसमें व्यक्ति अपने स्थिति के उचित और कर्तव्यों के अनुसार कर्मो का श्रद्धापूर्वक निर्वाह करता है।

भक्ति योग– भक्ति का योग। भगवत कीर्तन। इसे भावनात्मक आचरण वाले लोगों को सुझाया जाता है।

ज्ञान योग– ज्ञान का योग अर्थात् ज्ञानार्जन करना ।

इस्लाम सूफी संगीत के विकास में भी भारतीय योग अभ्यास का काफी प्रभाव है, जहाँ वे दोनों शारीरिक मुद्राओं (आसन) और श्वास नियंत्रण (प्राणायाम) को अनुकूलित किया है। 11वीं शताब्दी के प्राचीन समय में प्राचीन भारतीय योग पाठ, अमृतकुंड, (''अमृत का कुंड) का अरबी और फारसी भाषाओं में अनुवाद किया गया था।

योग का महत्व व लक्ष्य

वर्तमान समय में अपनी व्यस्त जीवन शैली के कारण लोग संतोष पाने के लिए योग करते है। योग से न केवल व्यक्ति का तनाव दूर होता है बल्कि मन और मस्तिष्क को भी शांति मिलती है। योग बहुत ही लाभकारी है। योग न केवल हमारे दिमाग, मस्तिष्क को ही

ताकत पहुंचाता है बल्कि हमारी आत्मा को भी शुद्ध करता है। आज बहुत से लोग मोटापे से परेशान हैं, उनके लिए योग बहुत ही फायदेमंद है। योग के फायदे आज सभी जानते है, जिस वजह से आज योग विदेशों में भी प्रसिद्ध है।

योग का लक्ष्य स्वास्थ्य में सुधार से लेकर मोक्ष प्राप्त करने तक है। जैन धर्म, अद्वैत वेदांत के मोनिस्ट संप्रदाय और शैव समुदाय के अन्तर में योग का लक्ष्य मोक्ष का रूप लेता है, जो सभी सांसारिक कष्ट एवं जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से मुक्ति प्राप्त करना है, उस क्षण में परम ब्रह्म के साथ समरूपता का एक एहसास है । महाभारत में, योग का लक्ष्य ब्रह्मा की दुनिया में प्रवेश के रूप में वर्णित किया गया है, ब्रह्म के रूप में, अथवा आत्मा को अनुभव करते हुए जो सभी वस्तुओं में व्याप्त है। भक्ति संप्रदाय के वैष्णव धर्म में योग का अंतिम लक्ष्य स्वयं भगवन की सेवा करना या उनके प्रति शक्ति होना है, जहां लक्ष्य यह है कि विष्णु के साथ एक शाश्वत रिश्ते का आनंद लेना है।

योग के प्रसिद्ध ग्रन्थः

योगसूत्र–पतंजलि, योगभाष्य–वेदव्यास, तत्त्ववैशारदी–वाचस्पति मिश्र, भोजवृत्ति–राजा भोज, गोरक्षशतक–गुरू गोरख नाथ, योगसारसंग्रह–विज्ञानभिक्षु, हठयोगप्रदीपिका–स्वामी स्वात्माराम, सूत्रवृत्ति– गणेशभावा, योगसूत्रवृत्ति– नागेश भट्ट, मणिप्रभा–रामानन्द यति, सूत्रार्थप्रबोधिनी–नारायण तीर्थ

योग के सामान्य फायदेः

शरीर स्वस्थ रहता है– योग से शरीर में रक्त का प्रवाह नियंत्रित रहता है जिससे शरीर में चुस्ती आती है जो कि हानिकारक तत्व को बाहर निकालती है जिससे शरीर के विकार दूर होते है और रोगियों को इससे आराम मिलता हे। साथ ही सकारात्मकता का भाव प्रवाहित होता है । जिससे शरीर स्वस्थ रहता है।

वजन कम होता है–योग की सबसे प्रभावशाली विधा है सूर्य नमस्कार, जिससे शरीर में लचीलापन आता है। रक्त का प्रवाह अच्छा होता है। शरीर की अकड़न, जकड़न में आराम मिलता है। योग से वजन नियंत्रित रहता है। जिसका वजन कम है वह बढ़ता है और जिनका अधिक है कम होता है।

चिंता का भाव कम होता है– योग से मन एकाग्रचित रहता है उसमें शीतलता का भाव आता है और चिंता जैसे विकारों का अंत होता है। योग से गुस्सा कम आता है इससे ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है जिससे शारीरिक एवमं मानसिक संतुलन बना रहता है।

मानसिक शांति– योग से मन शांत रहता है। दिमाग दुरुस्त होता है जिससे सकारात्मक विचार का प्रवाह होता है। सकारात्मक भाव से जीवन का नजरिया बदल जाता है। किसी के लिए मन में बैर नहीं रहता। इस तरह योग से मनुष्य का विकास होता है।

मनोबल बढता है–योग से मनुष्य में आत्मबल बढ़ता है, जीवन के हर क्षेत्र में कार्य में सफलता मिलती है। मनुष्य हर परिस्थति से लड़ने के काबिल होता है। साथ ही जीवन की चुनौतियों को उत्साह से लेता है।

प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है–योग से उपापचय की क्रिया दुरूस्त होती है और श्वसन क्रिया संतुलित होती हैं जिससे मनुष्य में रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती हैं। बड़ी से बड़ी बीमारी से लड़ने के लिए शक्ति का संचार होता है।

जीवन के प्रति उत्साह बढ़ता है– योग को आप जादू भी कह सकते है नियमित योग करने से जीवन के प्रति उत्साह बढ़ता है। आत्मबल बढ़ता है, सकारात्मक भाव आता है साथ ही आत्म विश्वास में भी वृद्धि होती है। जिससे जीवन के प्रति उत्साह बढ़ता है।

उर्जा बढ़ती है– मनुष्य रोजाना कई गतिविधियाँ करता हैं और दिन के अंत में थक जाता हैं लेकिन अगर वह नियमित योग करता हैं तो उसमें उर्जा का संचार होता हैं। थकावट या किसी भी काम के प्रति उदासी का भाव नहीं रहता। सभी अंगो को अपना कार्य करने के लिए पर्याप्त उर्जा मिलती है क्यूंकि योग से भोजन का सही मायने में पाचन होता है जो दैनिक उर्जा को बढ़ाता है।

शरीर लचीला बनता हैं– अंत में यह कहना है कि मनुष्य हमेशा खुश रहना चाहता है। हर कोई व्यक्ति कभी न कभी यह सोचता है कि काश उसके पास एक ऐसी शक्ति हो जिससे वह जान सके कि उसके जीवन का उददेश्य क्या है और वह कैसे हर समय खुश रह सकता है। हम लोग शायद विश्वास नही करते लेकिन अष्टांग योग ही वो ''विज्ञान'', '' शक्ति '' या ''चमत्कार'' है, जो हमारे जीवन को बदल सकता है। हमारे शरीर और मन के आलावा भी कुछ और है, जो शरीर और मन को नियंत्रित करता है जिसे हम ''अंतरात्मा'' या ''चेतना'' कहते है। हम केवल शरीर या मन नहीं हो सकते क्योंकि अगर ऐसा होता तो शायद हममे और कंप्यूटर-रोबोट में कोई फर्क नहीं होता। इस बात को हम धर्म से न जोड़े और खुद चिंतन करें तो हमें यह अनुभव होता है कि कुछ तो है जो हमारे शरीर और मन को नियंत्रित करता है जो एक ''शक्ति'' या ''चेतना'' या ''आत्मा'' है। यही वह शक्ति है जो हमें कुछ बुरा करने या किसी को दुःख पहुँचाने से रोकती है और यह हमेशा हर परिस्थति में सही होती है। लेकिन जब हम अपनी अंतरात्मा की आवाज को अनसुना कर देते है तो हमारे मन और शरीर का उस ''अंतरात्मा'' या ''शक्ति'' से संपर्क कमजोर पड़ने लगता है और हम दुःखी रहने लगते है। प्राणायाम आसन से हजारों लोगों के असाध्य रोगों को दूर किया जा चुका है। सबसे बड़ी बात यह है कि यह एक प्राकृतिक पद्धति है जो हमें प्रकृति के साथ जोड़ती है। योग की शक्ति के बारे में जितना लिखा जाए उतना कम है क्योंकि इसका अनुभव अद्भुत होता है जिसे शब्दों द्वारा नहीं बताया जा सकता है। योग से जीवन के सभी भाव नियंत्रित होते हैं जैसे खुशी, दुःख, प्यार अतः आइये आज से हम लोग योग-आसन-प्राणायाम के लिए दिन के 24 घंटे में से कम से कम एक घंटे अवश्य निकालने का संकल्प ले और जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करें।

आधुनिक समाज में महिलाओं की भूमिका

नेहा शुक्ला
सर्वेक्षक

आधुनिकतम परिवेश में महिलायें किसी भी मायने में पुरूषों से सर्वथा पीछे नहीं है। अम्बर की ऊँचाई से लेकर समुद्र की गहराई तक महिलाओं की भूमिका पुरूषों की तुलना में रंचमात्र भी कम नहीं है। अतीत में जहाँ उनका जीवन घर की चार दीवारी में आबद्ध था वहीं आज गतिशील समय की धारा में महिलाओं की स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन निर्देशित हो रहा है ।

आज प्रशासनिक कार्यो से लेकर राजनीतिक क्षेत्र में भी इनकी भूमिका निश्चय ही अविस्मरणीय रही है और भविष्य का खुला द्वार इनकी सजग साधना के लिए तत्पर है । खेल के क्षेत्र में जहाँ महिलाओं की भूमिका प्रशंसनीय है वही चिकित्सा, इंजीनियरिंग तथा पत्रकारिता में इनका योगदान अमूल्य है । वहीं दूसरी तरफ निम्न वर्ग की महिलायें अन्य छोटे–छोटे कार्यो जैसे– बीड़ी बनाना, कृषि कार्य में सहयोग देना आदि कार्यो में भी अपनी कार्यशैली का परिचय दे रही हैं ।

खुले शैक्षिक वातावरण में महिलाओं को आज इतना साक्षर बना दिया है कि वे आज आर्थिक क्षेत्र में भी आगे बढ़ने लगी हैं । वस्तुतः यह बात स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिशत कम है, किन्तु सतत् प्रयास के तहत भविष्य उज्ज्वल होता जा रहा है ।

वर्तमान में नारियां जिन पदों पर आसीन हैं वे पुरूषों की तुलना में कम बुद्धिमत्ता का परिचय नहीं दे रही हैं। जहां सेवाभाव इनकी सगी धरोहर है, वहीं शिक्षा, व्यवसाय, प्रशासन आदि सम्बन्धी उत्तरदायित्व निर्वाह के साथ वे सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में भी कार्यरत हैं। पुलिस अधिकारी, पायलट, जलपोत संचालक आदि के दायित्वों को भी सम्भाल रही हैं ।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी, श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित आदि ऐसी नारियां है जो राजनीतिक क्षेत्र के लिए कीर्तिमान अध्याय है इसके अतिरिक्त कई ऐसी नारियां भी है जो विश्व के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट पर भी आत्म पौरूष का प्रदर्शन किया है जिनमें बछेन्द्री पाल एवं संतोष यादव अविस्मरणीय हैं । खेल के क्षेत्र में महिलायें कम नहीं हैं । पी0टी0 ऊषा, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, मैरी कॉम आदि ने विभिन्न खेलों में अद्भुत प्रदर्शन किए हैं । इसके अतिरिक्त कल्पना चावला अंतरिक्ष के क्षेत्र में आदरणीय रही हैं । पहले समझा जाता था कि मीडिया महिलाओं के लिए उपयुक्त नहीं है परन्तु बरखा दत्त, रजनी शर्मा, रितुल जोशी जैसी निडर और समर्पित पत्रकारों ने ये गलतफहमी दूर कर दी । महिलायें अपनी मनभावना मुस्कराहट और बुद्धिमता से बड़े–बड़े नेताओं,

खिलाड़ियों और अभिनेताओं को अपने प्रश्न जाल में उलझा कर उनके छक्के छुड़ाती नजर आती हैं ।

संविधान द्वारा स्त्री और पुरूषों को समानता का दर्जा दे दिया गया है तथा उन्हें कानून की दृष्टि से भी बराबर के अधिकार प्रदान किये गये हैं किन्तु समाज की यह विडम्बना रही है कि उसे समान रूप से कदापि स्वीकार नहीं किया जाता है । जब तक समाज इस पर स्वयं अमल नहीं करेगा तब तक इस समस्या का समाधान सम्भव नहीं हो सकता है ।

इसके मूल में वास्तविक समस्या यह है कि कानून और वास्तविकता के बीच की खाई को समाप्त करना है । जो नये कानून बनाकर नहीं अपितु जनता को शिक्षित करके तथा उसकी मानसिकता बदलकर उसे प्रोत्साहित किया जा सकता है । निश्चय ही इस दिशा में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि पुरूष व स्त्री में तादात्म्य हो, क्योंकि स्त्री व पुरूष एक–दूसरे के पूरक हैं, दोनों को समय के बदलते परिवेश के अनुरूप अपने आपको भी बदलना होगा ।

अस्तु महिलाओं को चाहिये कि वे मार्ग में आने वाले अवरोधकों का सामना करें स्वयं मार्ग में आने वाली रूकावटों का निराकरण करके अनुकूल वातावरण बनायें । नेपोलियन बोनापार्ट ने नारी में निहित सम्भावनाओं को ध्यान में रखकर कहा था– '' मुझे एक योग्य माता दो मैं तुमको एक योग्य राष्ट्र दूँगा ।'' अतः यह कहना सर्वथा उचित होगा कि आधुनिक युग में महिलाओं की निश्चय ही महत्वपूर्ण भूमिका है ।

वार्षिक खेल कूद–एक प्रतिवेदना

(विकास कुमार श्रीवास्तव)
सर्वेक्षण सहायक

क्रीडा सचिव

जीवन शिक्षा मुखी तो है तो शिक्षा के साथ–साथ शारीरिक व्यायाम खेल कूद की भी आवश्यकता होती है । अग्रेजी में एक कहावत है कि "Health is Wealth". खेलने से मनुष्य के अन्दर की आत्म शक्ति बढ़ने के साथ उसके मन की एकाग्रता, स्फूर्ति और प्रेम भावना जागृत होती है इससे मनुष्य के अन्दर आलस्य का त्याग होता है और कार्य को करने में मनुष्य तत्पर रहता है ।

वर्ष 2014–2015 के वार्षिक खेल जनवरी माह में आरंभ कराये गये जिस में आठ प्रकार की प्रतियोगिताएं हुई और इनके विजेता निम्नलिखित हैं :–

खेल	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
टेबल टेनिस एकल	श्री आर0 के0 दीक्षित	श्री यादवेन्द्र शुक्ला	श्री विकास कुमार
टेबल टेनिस डबल	श्री आर0 के0 दीक्षित श्री आशुतोष चक्रवर्ती	श्री बी0जी0 राम श्री पी0के0 आर्य	श्री यादवेन्द्र शुक्ला श्री उमेश मिश्रा
कैरम एकल	श्री श्रीकृष्ण	श्री यादवेन्द्र शुक्ला	श्री ज्ञानेन्द्र पाल
कैरम डबल	श्री आशीष कौशल श्री यादवेन्द्र शुक्ला	श्री पदम मोहन शर्मा श्री चन्द्रशेखर	श्री पी0के0 आर्य श्री राहुल वर्मा
शतंरज	श्री पी0के0 आर्या	श्री विकास कुमार	श्री विवेक कुमार गुप्ता
स्लोसाइ कलिंग	श्री बी0जी0 राम	श्री उमा शंकर तिवारी	श्री यादवेन्द्र शुक्ला
गोला फेंक	श्री देवेन्द्र कुमार सिंह	श्री ज्ञानेन्द्र पाल	श्री अरूण मुद्गल
रस्सा कसी	श्री प्रदीप सिंह श्री सुजीत शुक्ला श्री अमित मौर्या श्री यादवेन्द्र शुक्ला		

मानचित्र विक्रय केन्द्र

हरीओम द्विवेदी
सर्वेक्षण सहायक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग में मानचित्र विक्रय केन्द्र का एक मुख्य स्थान है । जिसमें भिन्न–2 पैमाने पर विभिन्न प्रकार के मानचित्रों का विक्रय किया जाता है । वर्तमान समय में देश के अन्दर तरह–तरह के प्रोजेक्ट, सरकारी गैर–सरकारी तथा प्राइवेट संस्थाओं द्वारा लगाए जा रहे है, जिसमें भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्रों को खरीद कर ये संस्थाये ले जा रही है तथा इन्हीं मानचित्रों के द्वारा अपने कार्य को कर रहे है । मानचित्र का उपयोग प्रत्येक क्षेत्र में किया जाता है, बगैर मानचित्र के हम किसी भी लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते हैं । युद्ध से लेकर विकास की प्रगति तक मानचित्र ही सहायक रहा है । पूरे देश में भारतीय सर्वेक्षण विभाग के प्रत्येक कार्यालय में एक मानचित्र विक्रय केन्द्र खुला हुआ है । जहाँ से हर क्षेत्र के लोग उसे खरीद कर लाभ उठा रहे हैं । वर्तमान समय में ओपन सीरीज मानचित्र की मांग ग्राहको द्वारा की जा रही है, जिसे भारतीय सर्वेक्षण विभाग उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभा रहा है । हार्ड कापी के साथ–2 साफ्ट कापी को भी ग्राहक खरीदने में रूचि रखते है परन्तु मानचित्र की बिक्री और अधिक बढ़ाने के लिए इसका प्रचार–प्रसार कराने की आवश्यकता है । जिससे कि देश की प्रत्येक जनता इसके महत्व को समझे और इसका उपयोग अपने कार्य क्षेत्र में पूरा करें ।

बिक्री के लिये उपलब्ध मानचित्र
मानचित्र विक्रय केन्द्र, भारतीय सर्वेक्षण विभाग

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, लखनऊ में सभी प्रकार के मानचित्रों का विक्रय, मानचित्र विक्रय केन्द्र, लखनऊ में किया जाता है। इस केन्द्र पर 1:50,000 के ओ0एस0एम0 श्रेणी के सभी मानचित्र उपलब्ध हैं। वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य एवं समीपवर्ती राज्यों के सीमाओं के 1:50,000 के सभी मानचित्र विक्रय हेतु इस केन्द्र पर उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। किंतु विशेष मांग होने पर इन्हें भी उपलब्ध करा दिया जाता है। इसके अतिरिक्त अर्न्तराष्ट्रीय एवं उ0प्र0 राज्य के नेपाल सीमाओं पर लगे शीट अभी विक्रय हेतु उपलब्ध नहीं हैं ।

इस कार्यालय में बहुत सारे उपभोक्ता किसी भी पैमाने पर मानचित्र की माँग करते हैं। विक्रय हेतु मानचित्र 1:50,000 पैमाने पर ही उपलब्ध हैं। अन्य पैमाने के मानचित्र उपभोक्ताओं के मांग पर बनाये जाते हैं। जिस पर आये खर्च उपभोक्ता को वहन करना पड़ता है।

मानचित्र विक्रय केन्द्र पर अहमदाबाद, बेंगलूरू, बीकानेर, कोलकाता, हावड़ा, चण्डीगढ़ चेन्नई, दार्जिलिंग, डलहौजी, देहरादून, दिल्ली, गांधी नगर, ग्वालियर, हैदराबाद एवम् सिकन्दराबाद आदि कई महत्वपूर्ण शहरों के पर्यटक मानचित्र उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त आगरा, अलीगढ़, बरेली, गाजियाबाद, गोरखपुर, हरिद्वार, जयपुर, झांसी, कानपुर के परिदर्शी मानचित्र (गाइड) भी उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त निम्न प्रकार के मानचित्र विक्रय हेतु उपलब्ध हैं –

1) **ट्रैकिंग मानचित्र (Trekking Map)** :– बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री एवं यमुनोत्री कुल्लू घाटी, कुमायूं पहाड़ियां, कश्मीर, शिमला हिल्स के ट्रेकिंग रूट के इस मानचित्र 1:250,000 पैमाने पर दर्शाया गया है।

2) **जिला परियोजना मानचित्र (District Planning Map)** :– उ0प्र0 एवं अन्य राज्यों के जिला परियोजना मानचित्र (District Planning Map) पैमाना 1:250,000 पर उपलब्ध है। वर्तमान में आगरा, बदायूं, बागपत, बरेली, बहराइच, एटा, इटावा, फरूखाबाद, फिरोजाबाद, हाथरस, जालौन, मैनपुरी, मऊ, मेरठ, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, पीलीभीत, रामपुर, सहारनपुर, शाहजहांपुर के मानचित्र उपलब्ध हैं।

3) **दीवारी मानचित्र (Wall Map)** :– दीवार पर लगाने के लिए भारत एवं निकटवर्ती देश, भारत राजनैतिक, भारत का प्राकृतिक मानचित्र, रेलवे मानचित्र, सड़क मानचित्र, विश्व का मानचित्र, स्वतन्त्रता आन्दोलन के पुनीत स्थल, भारत के नेशनल पार्क के मानचित्र विभिन्न पैमाने पर उपलब्ध हैं।

4) **प्लास्टिक उच्चावन (रिलीफ) मानचित्र (Plastic Relief Map)** :– प्लास्टिक रिलीफ मानचित्र में भारत प्राकृतिक, एंव राजनैतिक एवं ऋषिकेश से बद्रीनाथ मार्ग का मानचित्र उपलब्ध है।

5) **पुरातन मानचित्र सिरीज में (Antique Map)** :– इस केन्द्र पर पुराने मानचित्र बम्बई (अब मुम्बई), देहरादून एवं समीपवर्ती क्षेत्र (1840), लखनऊ, उन्नाव और रायबरेली (1868), 19वीं शताब्दी के भारतीय अन्वेषक, अवध एवं इलाहाबाद के निकटवर्ती क्षेत्र (1780), दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्र (1807) के मानचित्र उपलब्ध हैं।

6) **भारत के ज्ञानवर्धक मानचित्र (Education Map)** :– छात्रों एवं शिक्षकों के लिए मुख्यतः पहाड़ी श्रेणियां एवं नदियाँ, नेशलन पार्क एवं अभयवन, भारत के मोटर मार्ग एवं दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्र के मानचित्र, शिक्षा मानचित्र, माउन्ट एवरेस्ट, स्कूल एटलस, अन्टार्कटिका व अन्य मानचित्र उपलब्ध हैं।

स्थलाकृतिक मानचित्र (Topographical Map)

1) ओपन सीरीज मानचित्र 1:50,000 पैमाने पर (Open Series Map WGS 84-UTM System in scale 1:50K)

2) 1:25,000, 1:250,000 पैमाने पर मुद्रित मानचित्र (Everest – Polyconic System)

सामान्य दीवारी मानचित्र (General Wall Maps)

1. भारत और निकटवर्ती देश, पैमाना 1:2.500,000
2. भारत और निकटवर्ती देश, पैमाना 1:12,000,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
3. भारत और निकटवर्ती देश, पैमाना 1:16,000,000
4. भारत और निकटवर्ती देश, पैमाना 1:8,000,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
5. भारत–राजनैतिक, पैमाना 1:15,000,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
6. भारत का प्राकृतिक मानचित्र, पैमाना 1:15,000,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
7. भारत का प्राकृतिक मानचित्र, पैमाना 1:4,500,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
8. भारत का राजनैतिक मानचित्र, पैमाना 1:4,000,000 (बंगला, गुजराती, कननड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, तमिल संस्करण)
9. भारत का राजनैतिक मानचित्र, पैमाना 1:4,000,000 (अंग्रेजी संस्करण)
10. भारत का रेलवे मानचित्र, पैमाना 1:3,500,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
11. भारत का सड़क मानचित्र, पैमाना 1:2,500,000
12. विश्व का मानचित्र, पैमाना 1:20,000,000
13. स्वतंत्रता आन्दोलन के पुनीत स्थल, पैमाना 1:4,000,000 (हिन्दी संस्करण)
14. भारत का बाल मानचित्र, पैमाना 1:4,000,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
15. भारत के नेशनल पार्क, पैमाना 1:5,000,000
16. विश्व मानचित्र, पैमाना 1:40,000,000
17. विश्व मानचित्र, पैमाना 1:40,000,000 (हिन्दी संस्करण)
18. विश्व मानचित्र (चार भागों में) पैमाना 1:25,000,000

प्लास्टिक उच्चावच (रिलीफ) मानचित्र (Plastic Relief Map)

1. भारत–प्राकृतिक, पैमाना 1:15,000,000
2. भारत–राजनैतिक, पैमाना 1:15,000,000
3. ऋषिकेश से बद्रीनाथ का मार्ग मानचित्र, पैमाना 1:250,000

1:1,000,000 पैमाने पर राज्य मानचित्र **(State Map)**

'प्रतिबन्धित

1. आंध्र प्रदेश
2. अरूणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड और त्रिपुरा
3. बिहार
4. चण्डीगढ़, दिल्ली हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और पंजाब
5. दादरा और नगर हवेली, गुजरात और महाराष्ट्र
6. गोवा, दमण और दीव और कर्नाटक
7. 'जम्मू और कश्मीर
8. कर्नाटक
9. केरल, पाण्डिचेरि, तमिलनाडु और लक्षद्वीप
10. मध्य प्रदेश
11. उड़ीसा
12. राजस्थान
13. सिक्किम, पैमाना 1:15,00,000
14. 'उत्तर प्रदेश
15. पश्चिमी बंगाल
16. उत्तराखण्ड
17. झारखण्ड
18. छत्तीसगढ़

पर्यटक मानचित्र सिरीज, पैमाना 1:50,000 (Tourist Map)

1. अहमदाबाद
2. बेंगलूर
3. बीकानेर
4. कोलकाता एवं हावड़ा
5. चण्डीगढ़
6. चेन्नई
7. दारजिलिंग
8. डलहौजी
9. देहरादून
10. दिल्ली
11. गांधीनगर
12. ग्वालियर
13. हैदराबाद एवं सिकंदराबाद
14. इंदौर
15. जयपुर
16. खजुराहो
17. कुल्लू
18. महाबलेश्वर
19. मुम्बई
20. मसूरी
21. मैसूर
22. पटना
23. शिलांग
24. रामेश्वरम और कन्याकुमारी
25. बड़ौदा
26. उत्तरांचल

ज्ञानवर्धक मानचित्र सिरीज (Educational Map Series)

1. पहाड़ी श्रेणियां और नदियां, पैमाना 1:5,000,000
2. नेशनल पार्क और अभयवन, पैमाना 1:5,000,000
3. भारत का मोटर मार्ग मानचित्र
4. दिल्ली और निकटवर्ती क्षेत्र (शीट सं0 1 व 2)

परिदर्शी गाईड मानचित्र (प्रतिबंधित)

1. आबू	23. चित्तौड़गढ़	45. कोटा	67. ऋषिकेश
2. अगरतला'	24. डलहौजी	46. कुल्लू	68. रोहतक
3. आगरा	25. देहरादून	47. लखनऊ	69. सहारनपुर
4. अहमदनगर	26. दिल्ली	48. चेन्नई	70. सम्भल
5. अलीगढ़	27. धांगध्रा	49. मदुरै	71. सिकन्दराबाद और बोलारम
6. इलाहाबाद	28. इटावा	50. मंगलौर	72. शाहजहांपुर
7. अल्मोड़ा	29. गंगानगर	51. मनाली'	73. शिमला
8. अलवर	30. गाजियाबाद	52. मथुरा एवं वृन्दावन	74. सोपुर'
9. औरंगाबाद	31. गोरखपुर	53. मेरठ	75. श्रीनगर'
10. आजमगढ़	32. हरिद्वार	54. मुरादाबाद	76. सूरतगढ़
11. बेंगलूर	33. हुब्बल्लि	55. मसूरी और लंढौर	77. टिहरी
12. बारमेर	34. हैदराबाद	56. मुजफ्फरनगर	78. तेजपुर
13. बारामूला	35. इम्फाल	57. मैसूर	79. तिरूच्चिरापल्ली
14. बरेली	36. जयपुर	58. नैनीताल और भुवाली	80. त्रिश्शूर
15. भरतपुर	37. जमशेदपुर	59. नगांव'	81. तिरूवनंतपुरम
16. भुवनेश्वर	38. जामनगर	60. नसीराबाद	82. उदयपुर
17. बिहार शरीफ	49. जौनपुर	61. नाथद्वारा	83. वाराणसी
18. बीजापुर	40. झांसी	62. पणजी'	84. वल्लौर
19. चमोली और गोपेश्वर'	41. जोरहाट	63. पटना	85. मैनपुरी
20. चम्बा	42. कानपुर	64. पाण्डिचेरि	86. राँची
21. चन्दौसी	43. करनाल	65. पुणे और खड़की	87. उत्तरकाशी
22. चण्डीगढ़	44. कोडेक्कानल	66. रानीखेत	

ट्रैकिंग मानचित्र, पैमाना 1:250,000

1. बदरीनाथ
2. बदरी–केदार
3. गंगोत्री–यमुनोत्री
4. कुल्लू घाटी
5. कुमायूं पहाड़ियाँ
6. जम्मू और कश्मीर का मार्ग मानचित्र, शीट सं0 1
7. जम्मू और कश्मीर का मार्ग मानचित्र, शीट सं0 2
8. शिमला हिल्स

विविध (मानचित्र/प्रकाशन) (Miscellaneous Maps/Publication)

1. एन्टार्कटिका–मैत्री (1993 संस्करण) , पैमाना 1:5,000
2. भारत और निकटवर्ती स्थानों के नामों के चीनी पर्याय
3. मीटरी पद्धति के स्थलाकृतिक मानचित्रों के लिए रूढ़ चिन्ह
4. शिक्षा–मानचित्र जिन पर स्वेच्छ ग्रिड मुद्रित किये गये हैं, पैमाना 1:50,000
5. केन्द्रीय/राज्य सरकार के विभागों/कार्यालयों और निजी प्रकाशकों द्वारा मानचित्रों के प्रकाशन के लिये अनुदेश
6. स्थलाकृतिक सूचक की कुंजी, पैमाना 1:6,000,000, 1:12,000,000 और 1:15,000,000
7. भूटान का मानचित्र, पैमाना 1:250,000
8. माउन्ट एवरेस्ट
9. पहाड़ी श्रेणियों का विशाल दृश्य जो चकराता के समीप देवबन से दिखाई देता है।
10. पहाड़ी श्रेणियों का विशाल दृश्य जैसा कि लंदौर से दिखाई देता है।
11. ऋषिकेश से बदरीनाथ–केदारनाथ का मार्ग मानचित्र, पैमाना 1:250,000
12. भारत का मार्ग मानचित्र उत्तरी क्षेत्र, जोन, पैमाना 1:2,500,000
13. स्कूल एटलस सामान्य
14. स्कूल एटलस डीलक्स
15. कोलकाता और हावड़ा का नगर मानचित्र
16. मानचित्रों की सहायता से कार्य निष्पादन
17. चण्डीगढ़ और इसके निकटवर्ती क्षेत्र, स्पेशल सिरीज
18. दिल्ली व निकटवर्ती क्षेत्र
19. मोटरिंग एटलस
20. लुधियाना और इसके निकटवर्ती क्षेत्र
21. दिल्ली–देहरादून–मँसूरी का सड़क मानचित्र
22. दिल्ली–आगरा–जयपुर का मार्ग मानचित्र

विशिष्ट मानचित्र

जनसाधारण में मानचित्र के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा पर्यटकों की सहायता के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा मानचित्र जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है । इसके अन्तर्गत विभिन्न विषयों को लेकर आर्ट कागज पर निर्मित/मुद्रित उच्च कोटि के व आकर्षक और सुविधाजनक रीति से तहबंद मानचित्र जैसे पुरातत्व मानचित्र सीरीज, भारत ज्ञानवर्धक मानचित्र सीरीज, पर्यटक मानचित्र सीरीज (मुख्य नगरों के लिए), राज्य मानचित्र सीरीज इत्यादि उचित मूल्यों पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इन सीरीज के अन्तर्गत निम्नलिखित मानचित्र प्रकाशित किए गए हैं–

पुरातन मानचित्र सीरीज (Antique Map Series)

1. बम्बई (अब मुम्बई)
2. कौसिमबाजार द्वीप, अनुमानतः 1780
3. देहरादून एवं समीपवर्ती क्षेत्र 1840
4. लखनऊ, उन्नाव तथा रायबरेली जिले – 1868
5. 19वीं शताब्दी के भारतीय अन्वेषक
6. अवध और इलाहाबद तथा निकटवर्ती क्षेत्र अनुमानतः – 1780
7. राजपूताना स्थलाकृतिक सर्वेक्षण (जयपुर का भाग)
8. कालिकाता के निकटवर्ती क्षेत्र का रेखाचित्र, अनुमानतः 1858
9. दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्र का रेखाचित्र, अनुमानतः 1807
10. माउण्ट एवरेस्ट और समीपवर्ती क्षेत्र का प्रथम प्रकाशित मानचित्र – 1930
11. बंगाल के प्रान्तों का मानचित्र अनुमानतः – 1779

जिला परियोजना मानचित्र सिरीज, पैमाना 1:250,000

1. अदिलाबाद	51. धार	101. कोच बिहार	151. राजकोट
2. आगरा	52. धर्मपुरी	102. कोडगू	152. रामपुर
3. अहमदनगर (दो	53. धारवाड़	103. कोहिमा	153. रत्नागिरी

भागों में)

4. आईजोल
5. अलप्पि
6. अल्मोड़ा
7. अमरेली
8. अमृतसर
9. अनंतपुर (दो भागों में)
10. अन्दमान
11. औरंगाबाद
12. बदांयू
13. बलांगीर
14. बागपत
15. बेलगाम (दो भागों में)
16. बारमेर
17. बारागढ़
18. बरान
19. बर्द्धमान
20. बरेली
21. भटिन्डा
22. बनासकांठा
23. बहराइच
24. बेतुल
25. बरूच
26. भीलवाड़ा
27. भिवानी
28. भावनगर
29. भोजपुर
30. भोपाल
31. बीजापुर (दो भागों में)
32. बीकानेर
33. बोन्गांईगांव
54. धीमाजी
55. दुंबुरी
56. धुले
57. दीव
58. दिनाजपुर (दो भागों में)
59. डूंगरपुर
60. ईस्ट गारो हिल्स
61. पूर्वी निमार
62. एटा
63. इटावा
64. फरीदाबाद
65. फरीदकोट
66. फरूखाबाद
67. फिरोजाबाद
68. गया
69. गंगानगर
70. गढ़वाल
71. गोलाघाट
72. गोलपारा
73. गोपालगंज
74. गुना
75. गुलबर्गा
76. गुरदासपुर
77. ग्वालियर
78. हमरीपुर, उना और बिलासपुर
79. हनुमानगढ़
80. हरिद्वार
81. हावड़ा
82. हसन
83. होसंगाबाद
104. कोल्हापुर
105. कोल्लम
106. कोरापुट
107. कोट्टायम
108. कुरूक्षेत्र
109. लातूर
110. मदुराई
111. महेन्द्रगढ़
112. मैनपुरी
113. मालदाह
114. मलकानगिरी
115. मण्डी
116. मऊ
117. मेडक
118. मेरठ
119. मेहसाना
120. मुरादाबाद
121. मुजफ्फरनगर
122. मुंगेर
123. मुम्बई सिटी तथा मुम्बई उपनगर
124. मुजफ्फरपुर
125. नवरंगपुर
126. नादिया
127. नागौर (दो भागों में)
128. नलगोंडा
129. नालंदा
130. नानदेड
131. नासिक
132. नगाँव
133. नरसिम्हापुर
154. रायगढ़
155. सहारनपुर
156. सागर
157. सम्भलपुर
158. सांगली
159. सरन्स
160. सतारा
161. शाहजहाँपुर
162. शिमोगा
163. सिहोर
164. सिन्धु दुर्ग
165. सीरोही
166. सिरसा
167. सीतामढ़ी
168. सिवन
169. सोलापुर (दो भागों में)
170. सोनपुर
171. सोनितपुर
172. दक्षिण गारो हिल्स
173. दक्षिण त्रिपुरा
174. श्रीकाकुलम
175. सूरत
176. सुरेन्द्रनगर
177. सुन्दरगढ़
178. टेमोंग लांग
179. ठाणे
180. टीकमगढ़
181. तिरूनेलवेली
182. तिरूअनन्तामलाई
183. तिरूवनंतपुरम

34. बुलन्दशहर	84. हाथरस	134. नवादा	184. त्रिपुरा (पश्चिमी)
35. चम्बा	85. इडुक्की	135. निकोबार	185. त्रिपुरा (दक्षिणी)
36. चण्डीगढ़	86. जालोर	136. नीलगीरी	186. तूतिकोरन
37. चिक्कमंगलूर	87. जालौन	137. निजामाबाद	187. उदयपुर
38. चित्रदुर्ग	88. जहांनाबाद	138. नुआपाड़ा	188. उज्जैन
39. चित्तोड़गढ़ (दो भागों में)	89. जामनगर	139. पाली	189. उन्नाव
40. चित्तूर	90. जमुई	140. पालघाट	190. उत्तर–कन्नड़ा
41. चुराचांदपुर	91. झारगुजा	141. पलामू	191. वैशाली
42. चुरू	92. जीन्द	142. पटना	192. विदिशा
43. कोयम्बटूर	93. जोधपुर (दो भागों में)	143. पट्टनमलिता	193. विरूदुनगर (टी)
44. कडप्पा	94. जूनागढ़	144. पेरियार	194. यमुनानगर
45. दतिया	95. कैथल	145. फेंक	195. ओखा
46. डलहौजी	96. कालाहांण्डी	146. पीलीभीत	196. जूनहबोटो
47. दमण	97. कांगड़ा	147. फुलवाणी	
48. देहरादून	98. कपूरथला	148. पूर्निया	
49. देवगढ़	99. कन्नियाकुमारि	149. पुरूलिया	
50. देवास	100 करनूल	150. रायसेन	

राजभाषा की उपयोगिता की दृष्टि से हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करना आवश्यक है

अमित कुमार वर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

भाषा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के भाष धातु से हुई है जिसका अर्थ होता है– वाणी की अभिव्यक्ति । अतः भाषा से तात्पर्य विचारों के ऐसे आदान–प्रदान से है जिसको हम आसानी से एक दूसरे तक पहुँचा सकें। संसार में कुल मिलाकर लगभग अट्ठाईस सौ भाषाएं हैं, जिनमें तेरह ऐसी भाषाएं हैं, जिनके बोलने वालों की संख्या साठ करोड़ से अधिक है । संसार की भाषाओं में हिन्दी भाषा को प्रथम पॉच में स्थान प्राप्त है । भारत के बाहर (वर्मा, लंका, मॉरिशस, ट्रिनिडाड, फीजी, मलाया, सुरीनाम, दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका) भी हिन्दी बोलने वालों की संख्या काफी अधिक है । हिन्दी एशिया महाद्वीप की एकमात्र ऐसी भाषा है जो अपने देश के बाहर भी बोली जाती है । हिन्दी एक जीवित और सशक्त भाषा है । हिन्दी एक सरल और सुगम भाषा है, जिसके कारण इसका प्रचार–प्रसार देश के कोने–कोने में हो रहा है। यह देश की सांस्कृतिक एकता, लोकचेतना एवं सामाजिक सम्पर्क की भाषा है ।

भारत वर्ष एक विविध सांस्कृतियों एवं रीति–रिवाजों वाला देश है जहाँ कई प्रकार की भाषायें तथा बोलियाँ है । कहा जाता है कि हर इक्कीस कोस पर पानी तथा बोली बदल जाती है । जब प्रथम स्वाधीनता संग्राम हुआ तो संदेशो के संचार के लिये ऐसी भाषा की आवश्यकता हुई जो आम जन–मानस के समझ में आसानी से आ जाये । चूँकि हिन्दी भारत के अधिकाधिक प्रांतो तथा 70 फीसदी से अधिक आबादी द्वारा बोली एवं समझी जाती है । अतः इस प्रयोजन के लिये हिन्दी का चुनाव किया गया । हिन्दी युगों–युगों से विचार–विनिमय का एक सशक्त माध्यम रही है । हिन्दी की सरलता एवं सुगमता ही इसके प्रचार एवं प्रसार का प्रमुख कारण बन गई । व्यापक राष्ट्र–हित, राष्ट्रीय एकता तथा जन–सम्पर्क को दृष्टिगत रखते हुये पराधीन भारत में जितने भी शिक्षा आयोगों का गठन किया गया उन पर हिन्दी को शिक्षा का माध्यम एवं राज–काज की भाषा बनाने का जोर हमारे पूर्वजों द्वारा दिया गया । लेकिन अंग्रेजी शासन को शायद यह मंजूर नहीं था । क्योंकि अंग्रेज भारतीयों को इस प्रकार तैयार करना चाह रहे थें जिनकी सहायता से वो अपने शासन को भारत में सुगमता से संचालित कर सके । इसलिए उन्होने भारतीयों को पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति का लालच दिया तथा यह समझाया कि इसके द्वारा ही तुम्हारी उन्नति हो सकती है । उनका लक्ष्य हमारी मानसिकता को पराधीन करना था और शायद कुछ हद तक वो इसमें सफल भी रहे । देश स्वतंत्र हुआ और स्वाधीन भारत के संविधान में हिन्दी को राज भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है ।

हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिये संसद द्वारा राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया । इसी अनुक्रम में राजभाषा संकल्प द्वारा संसद के दोनो सदनों द्वारा यह संकल्प किया गया कि हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जायेगा और उसे कार्यान्वित किया जायेगा और किये जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद की दोनों सभाओं के पटल पर रखी जायेगी । राजभाषा नियम के अन्तर्गत देश के प्रांतो को 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्रों में बाँटकर हिंदी में काम–काज को बढ़ावा देना सुनिश्चित किया गया तथा सभी प्रकार के सरकारी दस्तावेजों का हिन्दी में होना अनिवार्य किया गया ।

जब हम बात करते है राजभाषा की उपयोगिता की तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कम से कम केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में तो हिन्दी में काम–काज का प्रतिशत दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है तथा यह अपने उत्थान की ओर अग्रसर है । लेकिन हर नेक काम में कुछ अड़चने होती है वैसे ही राजभाषा के मार्ग में भी सबसे बड़ी अड़चन संपर्क भाषा के रूप में है । क्योंकि हमारे देश में हिन्दी को संपर्क भाषा का संवैधानिक दर्जा नहीं प्राप्त है । कई बार ऐसा होता है कि हमें किसी अन्य भाषा में पत्र

या प्रतिवेदन प्राप्त होता है जिसका उत्तर हमें उसी भाषा में देना होता है । अतः यह जरूरी है कि यदि हमें राजभाषा के प्रयोग एवं उसकी उपयोगिता को सुनिश्चित करना है तो हमें संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का भी विकास करना होगा क्योंकि राजभाषा और संपर्क भाषा दोनो एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।

अंग्रेजी का गुण-गान करने वालों का यह लोकप्रिय तर्क है कि अंग्रेजी हमें दुनिया से भी जोड़ रही है, बाजार से भी, प्रौद्योगिकी से भी और उच्च शिक्षा से भी, ऐसे में हिन्दी की बात करना पिछड़ेपन की बात करने के समान है । लेकिन एक दूसरी हकीकत भी है कि अंग्रेजी ने भारत को दो हिस्सों में बाँट डाला है । एक खाता-पीता, प्रभुत्व सम्पन्न 30-35 करोड़ का भारत है जो अंग्रेजी जानता है या जानना चाहता है और भारत पर राज करता है या करना चाहता है । दुसरी तरफ 80 करोड़ का वह भारत है जो हिन्दी जानता, बोलता और उसी के सहारे अपनी जीविका चलाता है । अंग्रेजी भले ही अमीर भारत की सम्पर्क भाषा हो लेकिन गरीब भारत और वृहद भारत की सम्पर्क भाषा हिन्दी ही है । हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करने के लिये हमें हिन्दी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके अंग्रेजी को एक विषय के रूप में पढ़ना होगा न कि अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके हिन्दी को एक विषय के रूप में । ऐसा नहीं है कि हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वालों को जीवन में सफलता नहीं मिलती । बहुत से ऐसे उदाहरण हे जिन्होनें हिंन्दी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके उँचा पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की । वर्तमान में सिविल सेवाओं में हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों की सफलता का प्रतिशत बढ़ा है ।

हम अंग्रेजी को प्रभावी समझते है जबकि सत्य तो यह है कि हिन्दी से ज्यादा सरल और प्रभावी भाषा विश्व में कोई नहीं है । हमें अपनी मानसिकता बदलने की आवश्यकता है । क्योंकि हम ही अपनी भाषा को आगे ले जा सकते है कोई दूसरा हमारी मदद क्यों करेगा । हमें हिन्दी को आत्मसात करना होगा । हमें हिंदी को अपनाने के लिये प्रतिबद्ध होना होगा । हमें हिन्दी के प्रयोग को हीन भावना न समझकर उसे स्वयं तथा देश के गौरव एवं सम्मान का सूचक बनाना होगा । हमें अपने पूर्वजों से शिक्षा लेते हुए स्वयं तथा अपनी आने वाली संतानों को हिन्दी को अपनी प्रमुख भाषा बनाने के लिये प्रेरित करना होगा । आज विश्व के कई विश्वविद्यालयों द्वारा हिन्दी को एक विषय के रूप में अपने पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है । ऐसा दो कारणों से हो रहा है एक तो वो हिन्दी का रसपान करना चाह रहे है और दूसरा जो कि मुख्य कारण है वह यह है कि वह भारत के साथ अपने संबंधों तथा व्यापार को बढ़ाने के लिये हिन्दी का माध्यम के रूप में प्रयोग कर रहे हैं । हमारी सरकार को भी ऐसी नीतियों का निर्माण करना होगा जिससे हम हिन्दी को देश की संपर्क भाषा के रूप में विकसित कर सकें क्योंकि तभी राजभाषा की उपयोगिता सिद्ध हो सकती है।

जय हिन्दी **जय भारत**

सेवानिवृत्ति पर विदाई समारोह

श्री रमाकान्त गौड़, वाहन चालक

श्री रणधीर राम, स्था0 एंव लेखा अधिकारी

श्री भारत सिंह, तक0 श्रमिक और मो0 युनुस, गार्ड

श्री मोहन लाल, सहायक श्री नवमी लाल,सर्वे0सहायक ,
सर्व श्री वृदावन, श्याम लाल, भुखन, खलासी

श्री धरम राज, मानचित्रकार ग्रेड–2

कार्यालय के सदस्य एंव परिवार के सदस्य

कार्यालय मे गांधी जयन्ती के अवसर पर सफाई अभियान

श्री मोहन लाल, सहायक एंव अन्य

श्री प्रमोद कुमार, सहायक

श्री जे0पी0यादव,सहा0 एंव पदम मोहन, प्र0 श्रे0 लिपिक

श्री राम अधार गिरी, खलासी

श्री चन्द्रशेखर, अवर श्रेणी लिपिक

श्री अरविन्द श्रीवास्तव, सहायक

हिन्दी कार्यशाला एंव विश्वकर्मा पूजा

श्री नवीन कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक

श्री चन्द्रशेखर, अवर श्रेणी लिपिक

श्री अमित कुमार वर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक

श्री अशीष कश्यप, प्रवर श्रेणी लिपिक

विश्वकर्मा पूजा

विश्वकर्मा पूजा

क्षेत्रिय कार्य

टोटल स्टेशन सर्वेक्षण कार्य

जी0पी0एस0 सर्वेक्षण कार्य

टोटल स्टेशन एवं पी0टी0

जी0पी0एस0 सर्वेक्षण कार्य

कोस्टल सर्वेक्षण

जी0पी0एस0 सर्वेक्षण कार्य

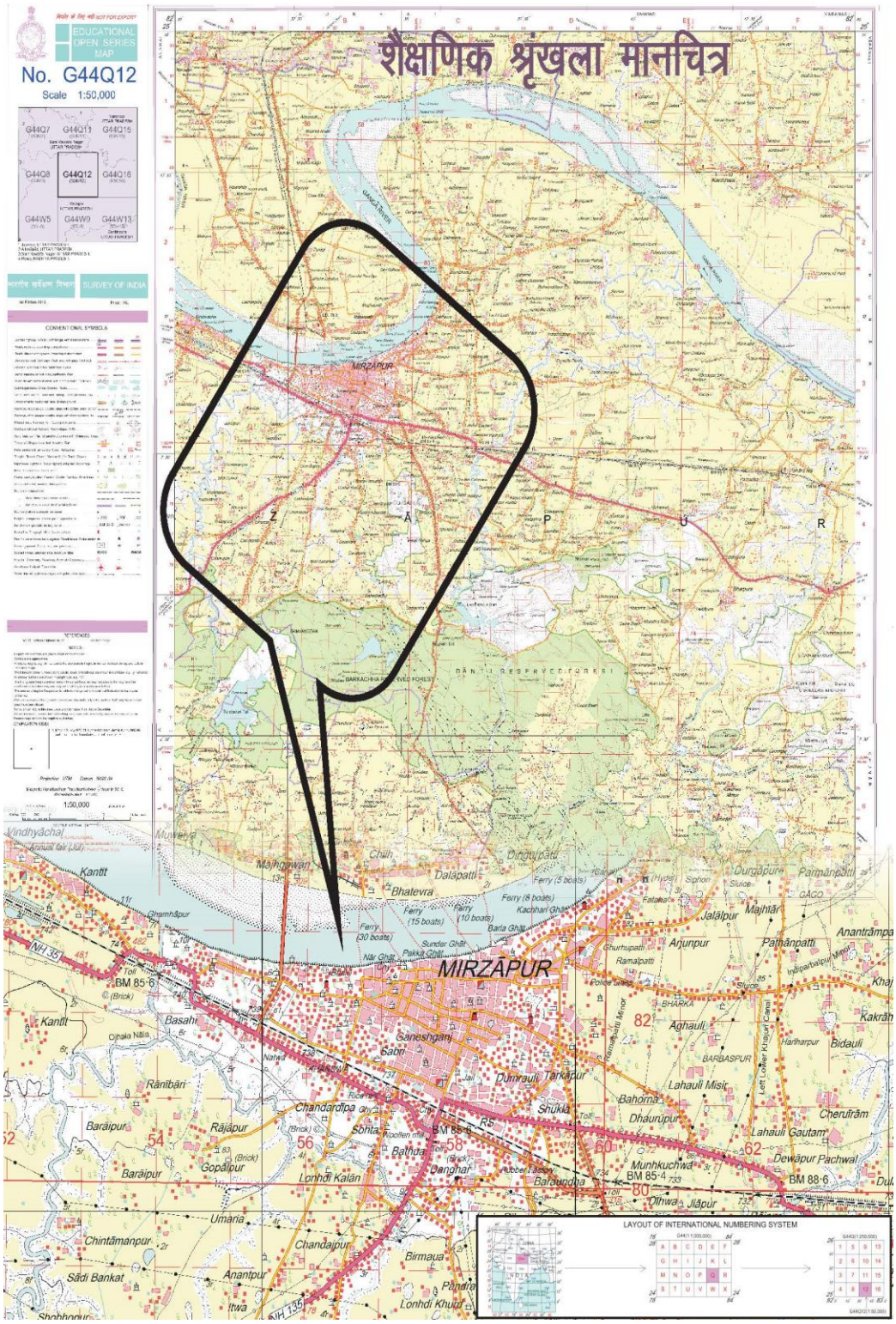

शैक्षणिक श्रृंखला मानचित्र
EDUCATIONAL OPEN SERIES MAP
No. G44Q12
Scale 1:50,000
G44Q7
G44Q11
G44Q15
G44Q8
G44Q12
G44Q16
G44W5
G44W9
G44W13
SURVEY OF INDIA
CONVENTIONAL SYMBOLS
MIRZAPUR
GANGA RIVER
Z
A
P
U
R
1:50,000
Vindhyāchal
Kantit
Majhgawān
Chīlh
Bhatevra
Dalāpatti
Ferry (5 boats)
Ferry (8 boats)
Ferry (15 boats)
Ferry (10 boats)
Ferry (30 boats)
Kachhari Ghāt
Barla Ghāt
Sunder Ghāt
Pakka Ghāt
Nār Ghāt
Jalālpur
Majhiār
Durgāpur
Parmānpatti
Anantrāmpa
Arjunpur
Pathānpatti
Ghurhupatti
Ramalpatti
MIRZĀPUR
NH 35
BM 85·6
(Brick)
Kantit
Basahi
Ojhala Nāla
Ganeshganj
Sabri
Rānībāri
BHARKA
Aghauli
82
Kakrāh
BARBASPUR
Harīharpur
Bidauli
Dumrauli
Tarkāpur
Lahauli Misir
Bahorna
Dhaurūpur
Shukla
Chandardīpa
Cherutrām
Barāipur
Rājāpur
54
56
58
60
62
Sohta
BM 85·5
Bathua
Gopālpur
Lonhdi Kalān
Danghar
Barāundha
Lahauli Gautam
Dewāpur Pachwal
Munhkuchwa
BM 85·4
BM 88·6
Barāipur
Dihwa
Jiāpur
80
Umaria
Chintāmanpur
Chandaipur
Birmaua
Sādi Bankat
Anantpur
Pandra
Lonhdi Khurd
Itwa
NH 135
LAYOUT OF INTERNATIONAL NUMBERING SYSTEM

पर्वतीय छायांकन दृश्य

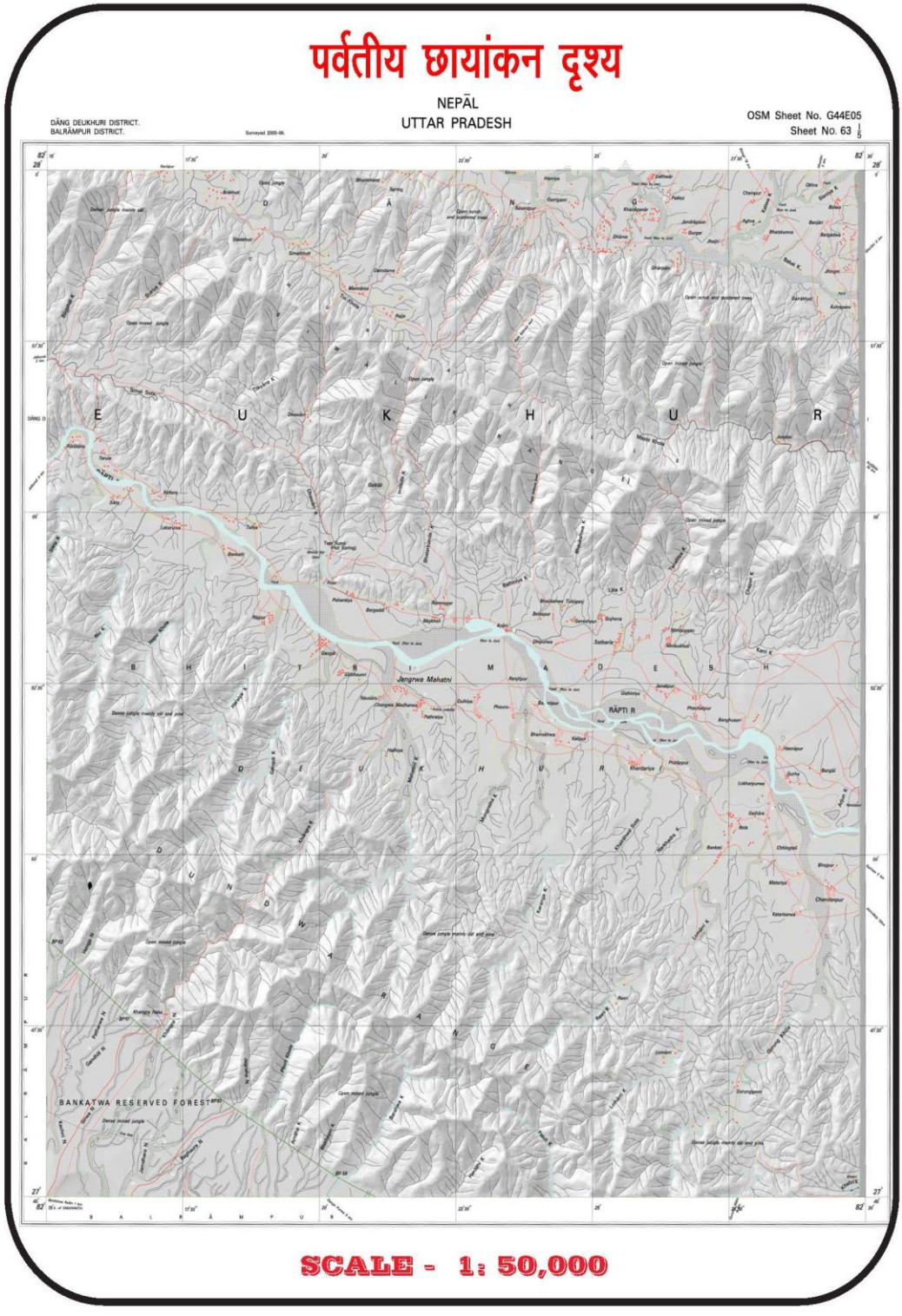

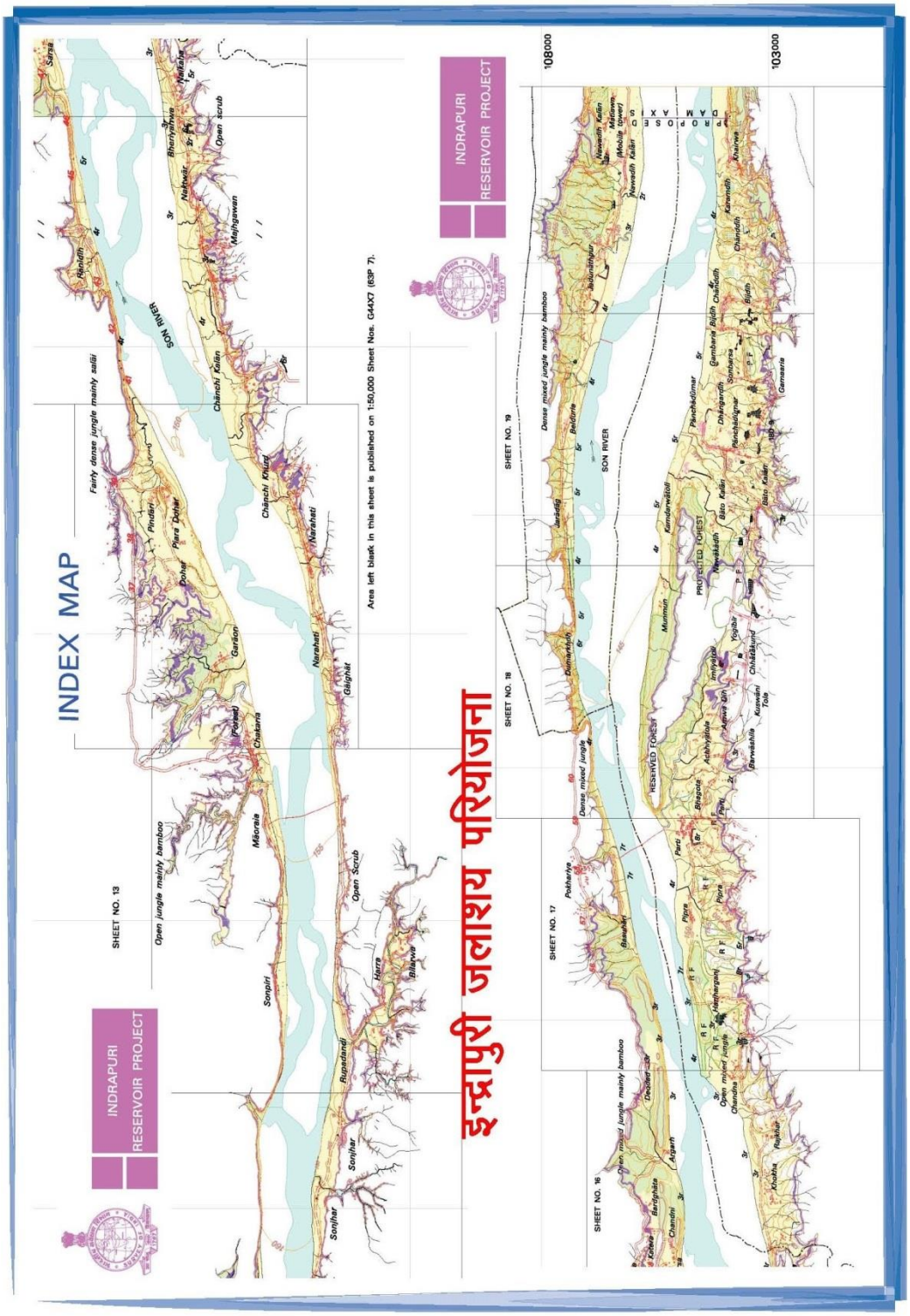
इन्द्रापुरी जलाशय परियोजना
INDRAPURI RESERVOIR PROJECT
INDEX MAP
SHEET NO. 13
SHEET NO. 16
SHEET NO. 17
SHEET NO. 18
SHEET NO. 19
SON RIVER
Area left blank in this sheet is published on 1:50,000 Sheet Nos. G44X7 (63P 7).
108000
103000

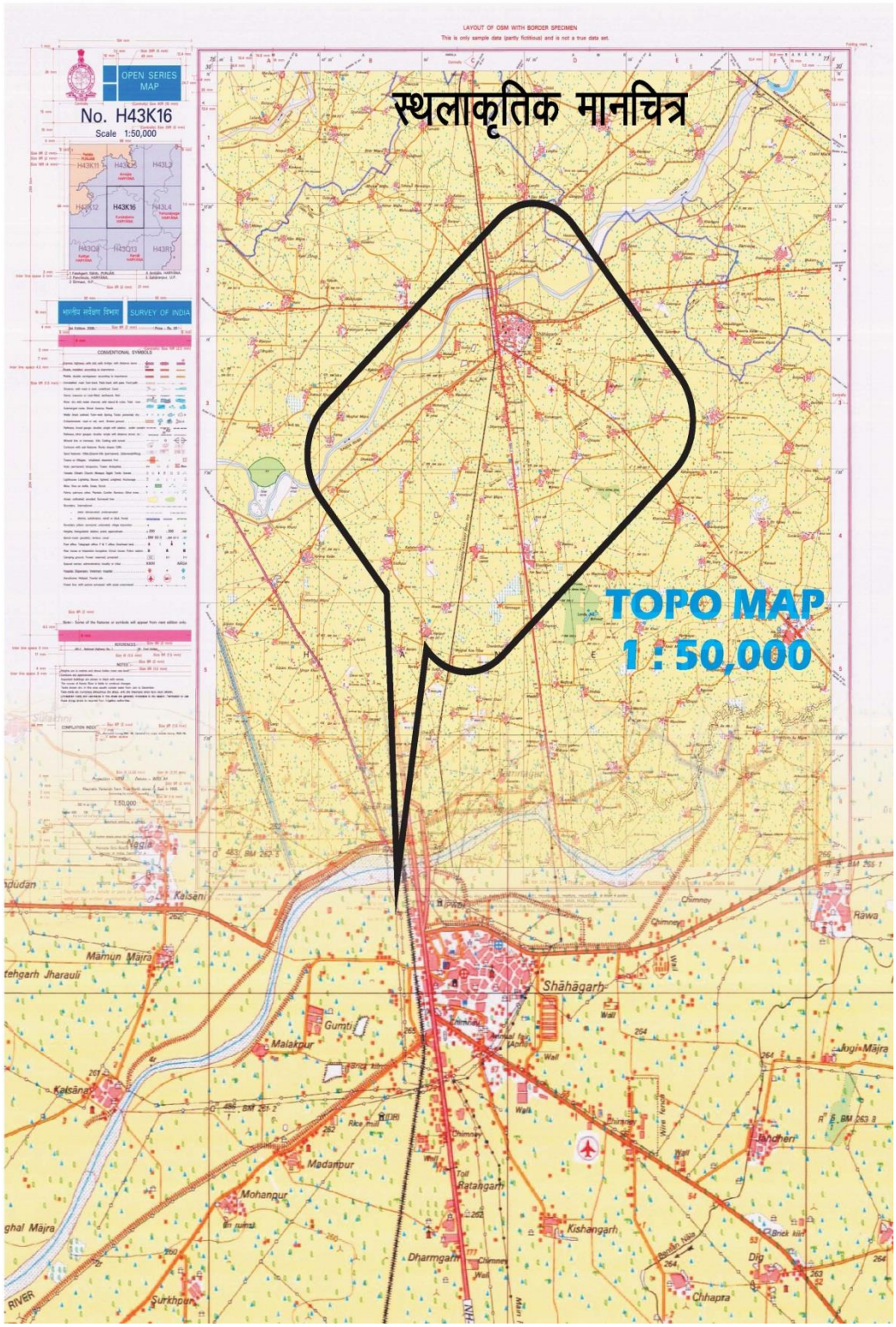

स्थलाकृतिक मानचित्र
TOPO MAP
1 : 50,000
OPEN SERIES MAP
No. H43K16
Scale 1:50,000
SURVEY OF INDIA
Shāhāgarh
Kalsani
Mamun Majra
Gumti
Malakpur
Kalsāna
Madanpur
Mohanpur
Ratangarh
Kishangarh
Jandheri
Jugi Mājra
Rāwa
Dharmgarh
Chhapra
Surkhpur
RIVER

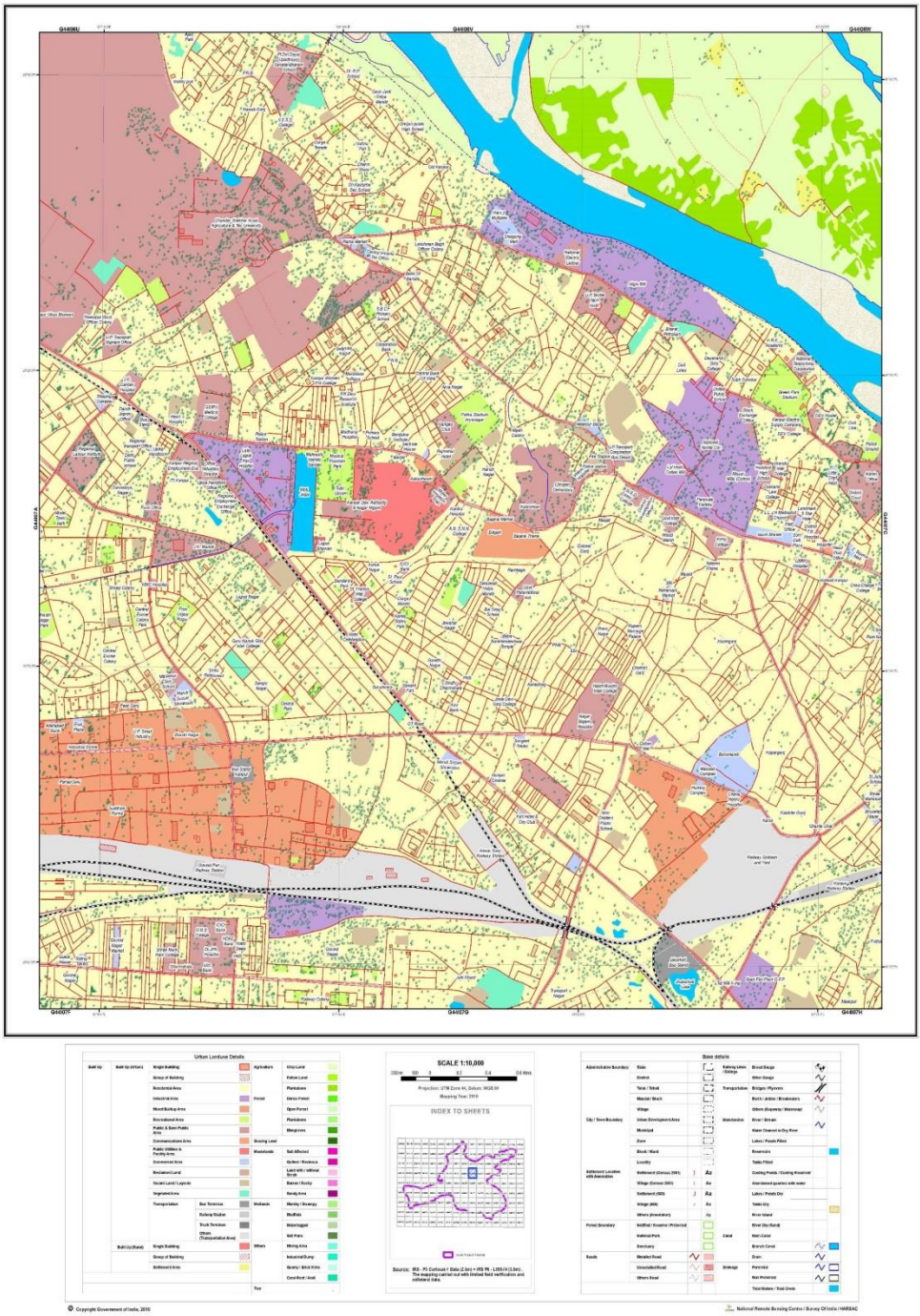
राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली
कानपुर
पैमाना : 1:10,000
शीट सं0 G44I07B
SCALE 1:10,000
INDEX TO SHEETS

राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली

कानपुर

पैमाना : 1:2,000

शीट सं0 G44I7B8

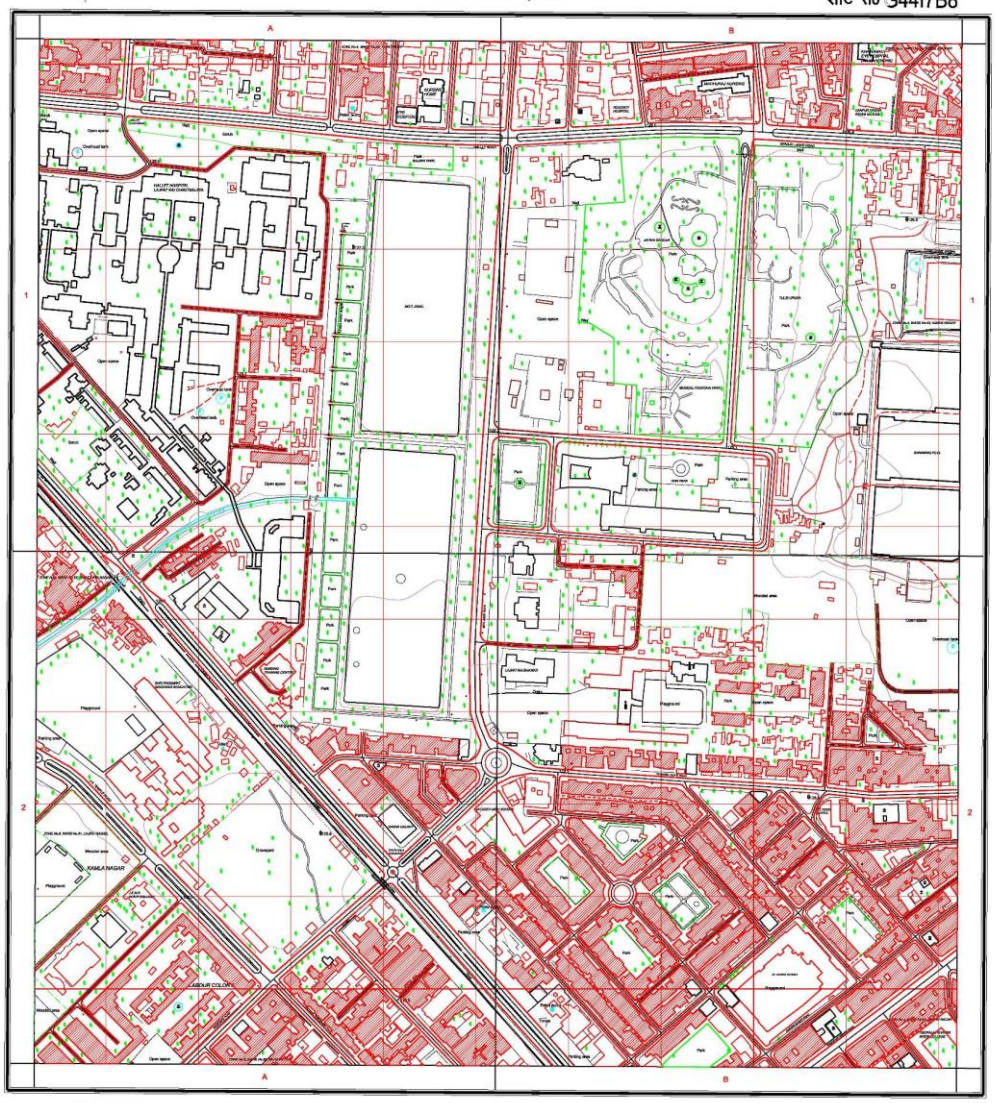

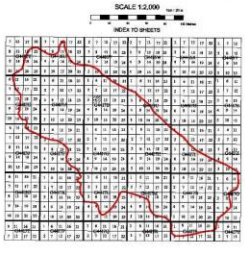

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
Survey of India

दि ग्रेट आर्क
The Great Arc

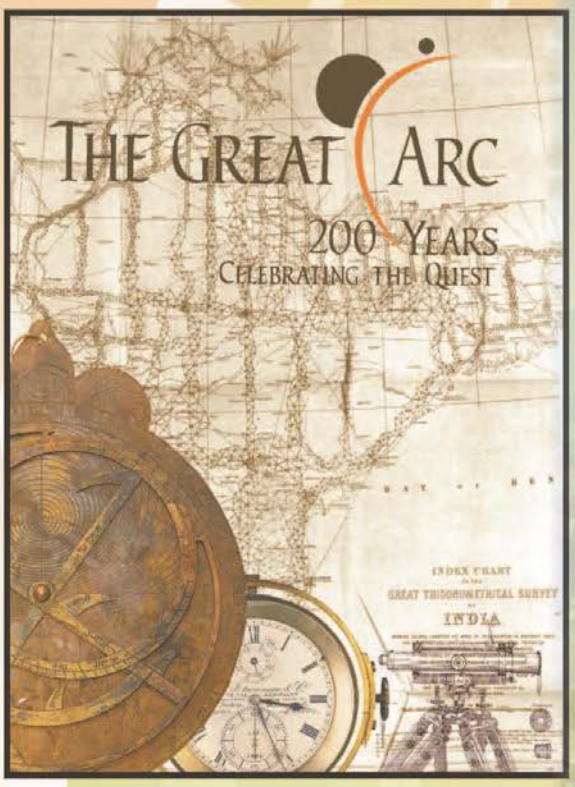

भारतीय डाक एवं तार विभाग द्वारा

भारतीय सर्वेक्षण विभाग का सम्मान।

Survey of India honoured by
Department of Indian Posts & Telegraphs

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
Survey of India

भविष्य दृष्टि

भारतीय सर्वेक्षण विभाग सुरक्षा, सतत् राष्ट्रीय विकास तथा नवीन सूचना बाजार से सम्बन्धित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ग्राहक केन्द्रित, लागत प्रभावी तथा सामयिक भू-स्थानिक आँकड़ा सूचना तथा आसूचना उपलब्ध कराने में अग्रणी भूमिका निभाएगा।

VISION

Survey of India will take a leadership role in providing user focused, cost effective, reliable and quality geospatial data, information and intelligence for meeting the needs of national security, sustainable national development, and new information markets.

helpdesk.soi@gov.in

www.surveyofindia.gov.in